ISSN No 2347-7075
Impact Factor- 7.328
Volume-4 Issue-4

INTERNATIONAL JOURNAL of ADVANCE and APPLIED RESEARCH

Publisher: P. R. Talekar
Secretary,
Young Researcher Association
Kolhapur(M.S), India

Young Researcher Association

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.4 Issue-4 jan-Feb - 2022

International journal of advance and applied research (IJAAR)

A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal

Volume-4 *Issue-4*

Chief Editor
P. R. Talekar
Secretary,
Young Researcher Association, Kolhapur(M.S), India

Editorial & Advisory Board

Dr. S. D. Shinde	**Dr. M. B. Potdar**	**Dr. P. K. Pandey**
Dr. L. R. Rathod	Mr. V. P. Dhulap	Dr. A. G. Koppad
Dr. S. B. Abhang	Dr. S. P. Mali	Dr. G. B. Kalyanshetti
Dr. M. H. Lohgaonkar	Dr. R. D. Bodare	Dr. D. T. Bornare

Published by: Young Researcher Association, Kolhapur, Maharashtra, India

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.4 Issue-4 Jan-feb -2023

CONTENTS

Sr No	Paper Title	Page No.
1	ग्वालियर संभाग में शस्य विविधता का क्षेत्रीय कालिक प्रतिरूप **वीरेन्द्र कुमार अहिरवार**	1-6
2	आत्महत्या : कारणे, प्रतिबंधात्मक उपाययोजना आणि समाजकार्य मध्यस्थी **डॉ. विलास घोडे**	7-13
3	कामकाजी माताओं का अपने बच्चों के पोषण पर प्रभाव **प्रियंका सागर**	14-16
4	बालकों के शैक्षणिक विकास में सामाजिक—आर्थिक कारकों की भूमिका **सुलोचना कुमारी**	17-20
5	"गणपतरावजी देशमुख यांचे दुष्काळी भागातील योगदान - एक विकासात्मक अभ्यास" **Dr. Ghantewad.M.T , Mr.Wakade Ashok Kisan**	21-24
6	भारत पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव **रघुबर प्रसाद सिंह , साध्वी सिंह**	25-29
7	आदिवासी समाज विकास परिवर्तनातील राजकीय भूमिकांचा अभ्यास. **प्रा.गांगुर्डे रामदास भिमा.**	30-37
8	नविन राष्ट्रिय शैक्षणिक 2020 धोरणांची वैशिष्टये **प्रा.डॉ. कार्तिक पोळ**	38-39
9	राजनीतिक समाजशास्त्र की चुनौतियाँ एवं प्रासंगिकता **डॉ. उर्मिला रावत**	40-43
10	मराठी ग्रामीण साहित्यातील कृषी जीवनाचा आविष्कार **डॉ.प्रेरणा एल.चव्हाण**	44-47
11	"कक्षा ९ व १० में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के मध्य शैक्षिक रूचि का तुलात्मक अध्ययन" **खेमेन्द्र कुमार शर्मा**	48-51

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.4 No.4 Jan – Feb 2023

ग्वालियर संभाग में शस्य विविधता का क्षेत्रीय कालिक प्रतिरूप

वीरेन्द्र कुमार अहिरवार
सहायक प्राध्यापक भूगोल शासकीय गांधी महाविद्यालय बालाजी, मिहोना भिण्ड (म.प्र.)
***Corresponding Author-* वीरेन्द्र कुमार अहिरवार**
Email: birendrak261@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7638897

सारांश

शस्य विविधता सूचकांक का शस्य विविधता के साथ व्युत्क्रमानुपात है। अर्थात् जितना सूचकांक अधिक होगा विविधता उतनी ही कम होगी। और जितना सूचकांक कम होगा शस्य विविधता उतनी ही अधिक होगी। वर्ष २००९-१० में ग्वालियर संभाग का औसत विविधता सूचकांक २८.११ था, जो वर्ष २०१८-१९ में बढ़कर ३३.९९ हो गया सूचकांक का अधिक होना विविधता के कम होने का सूचक है। ग्वालियर संभाग में वर्ष २०१८-१९ शस्य विविधता सूचकांक का अध्ययन करने पर विदित होता है कि ग्वालियर संभाग का शस्य विविधता सूचकांक ३३.९९ है, जो उच्च शस्य विविधता का सूचक है, यहॉ जिला स्तर पर सबसे उच्च शस्य विविधता ग्वालियर जिले (२८.४९) मे, व मध्यम शस्य विविधता गुना (३५.७१), दतिया (३५.२८), और शिवपुरी (३०.९३) जिले में पाई जाती है। जबकि निम्न शस्य विविधता संभाग के अशोक नगर जिले (४२. १४) में पाई जाती है। ग्वालियर संभाग के अशोकनगर जिले में सबसे अधिक शस्य विविधता सूचकांक (४२. १४) है। इसलिए शस्य विविधता यहॉ सबसे कम है। जबकि ग्वालियर जिले में शस्य विविधता सूचकांक सबसे कम (२८.४९) है, इसलिए यहॉ शस्य विविधता सबसे अधिक है। संभाग के २६ तहसीलों में से १७ (६५.३८) तहसीलों में वर्ष २००९-१० के औसत सूचकांक से अधिक है। वर्ष २०१८-१९ का अध्ययन दर्शाता है कि २६ तहसीलों में से १३ तहसील (५०:) में संभाग के औसत सूचकांक (३३.९९) से कम है, जबकि १३ तहसीलों का संभाग के औसत सूचकांक से अधिक है। वर्ष २००९-१० में संभाग में सबसे अधिक शस्य विविधता सूचकांक सेवढ़ा (४०.१६) तहसील में था जबकि वर्ष २००९-१० में शहडोरा (५२.८४) तहसील में सबसे अधिक शस्य विविधता सूचकांक पाया गया।

प्रस्तावना :

शस्य विविधता से आशय एक समय विशेष में किसी क्षेत्र में बोई जाने वाली फसलों की संख्या से है। शस्य विविधता संधृत कृषि का एक महत्वपूर्ण घटक है। यह न सिर्फ आर्थिक, सामाजिक वरन् परिस्थितिकीय दृष्टिकोण से भी आवश्यक है। वर्तमान रसायन पोषित कृषि की आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय विसंगतियों के संदर्भ में शस्य विविधिकरण की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है, अपितु विविध किस्म के उत्पाद प्राप्त होते है। शस्य विविधता कृषि क्रियाओं के गुणन का सूचक है, जिससे विभिन्न फसलों के बीच तीव्र प्रतिस्पर्धा का पता चलता है। यह प्रतिस्पर्धा जितना ही तीव्र होती है शस्य विविधता का परिणाम उतना ही आर्थिक होता है। इसके विपरीत अल्प प्रतिस्पर्धा से विशेषीकरण अथवा एक धान्य कृषि को प्रोत्साहन मिलता हे। फसल वैविध्य में मौसमी अन्तर भी देखा जाता है। शस्य विविधता आज स्थाई कृषि एवं आधुनिक कृषि पद्धति की प्रमुख विशेषता है जिसमें सिंचाई उर्वरकों, उन्नतशील बीजों, कीटनाशकों एवं कृषि में आधुनिक यंत्रों के प्रयोग आदि का विशेष योगदान है। इसके अतिरिक्त मौसम की अनिश्चितता तथा पारम्परिक कृषि व्यवस्था शस्य वैविध्य में सदैव वृद्धि देखी जाती रही है। वास्तव में भौतिक सामाजिक एवं आर्थिक दशाओं से प्रेरित होकर ही कृषक कृषि प्रतिरूप में विविधता को अपनाता है। यही कारण है कि किसी क्षेत्र के शस्य प्रतिरूप के शस्य वैविध्य की जानकारी विभिन्न प्रकार में सहायक होती है।

अध्ययन का उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध प्रपत्र का उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र में शस्य विविधता के वितरण प्रतिरूप तथा कालिक परिवर्तन को रेखांकित करना है। इसके

लिए प्रतीक क्षेत्र के रूप में ग्वालियर संभाग जैसे कृषि प्रधान क्षेत्र का चयन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र :

ग्वालियर संभाग मध्यप्रदेश के उत्तर पश्चिम में २३०-५५' उत्तरी अक्षांश से २६०-२६' उत्तरी अक्षांश तक और ७६०-५०' पूर्वी देशान्तर से ७८०-४५' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इस संभाग में ५ जिले ग्वालियर, दतिया, शिवपुरी गुना और अशोक नगर सम्मिलित है। इन सभी जिलों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

तालिका क्र.१

ग्वालियर संभाग के जिलो की जानकारी

क्र.सं.	जिले का नाम	क्षेत्रफल (वर्ग किमी)	जनसंख्या
१	ग्वालियर	४५६५	२०३२०३६
२	दतिया	२६९१	७८६७५४
३	शिवपुरी	१०२७७	१७२६०५०
४	गुना	६३९०	१२४१५१९
५	अशोक नगर	४६७४	८४५०७१
कुल योग		२८५९२	६६३१४३०

स्रोत : जिला सांख्यिकी पुस्तिकायें, ग्वालियर, दतिया, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर

ग्वालियर संभाग का कुल क्षेत्रफल २८५९२ वर्ग किलोमीटर और २०११ की जनगणना के अनुसार जनसंख्या ६६३१४३० व्यक्ति है। क्षेत्रफल की दृष्टि से शिवपुरी सबसे बड़ा जिला एवं दतिया सबसे छोटा जिला है, जबकि जनंसख्या की दृष्टि से ग्वालियर सबसे बड़ा और दतिया सबसे छोटा जिला है। संभाग का अधिकांश भाग उबड़ खाबड़ व पठारी है। समुद्रतल से इसकी ऊँचाई ३०० मीटर से ५०० मीटर तक है।

आंकड़ा संग्रह तथा विधितंत्र :

प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक ऑकड़ों पर आधारित है, जिसके लिए सन् २००९-१० तक २०१८-१९ के ग्वालियर संभाग के भू- अभिलेख ग्वालियर एवं सांख्यिकी पत्रिका से प्राप्त ऑकड़ों का प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त कृषि से सम्बन्धित पुस्तकों शोधग्रंथों पत्र पत्रिकाओं आदि का सहारा लिया गया है। शस्य विविधता के निर्धारण संबंधी अध्ययन में भाटिया (१९६५) जसबीर सिंह (१९७६) एवं गिन्स तथा मार्टिन (१९७७) के नाम उल्लेखनीय है। प्रस्तुत अध्ययन में भाटिया के सूत्र का प्रयोग करते हुए शस्य विविधता का निर्धारण किया गया है।

सूत्र : **शस्य विविधता सूचकांक** त्र $\frac{\text{फसलों के अंतर्गत बोए गए क्षेत्र का प्रतिशत}}{\text{फसलों की संख्या}}$

शस्य विविधता के निर्धारण में अध्ययन क्षेत्र की उन फसलों को सम्मिलित किया गया है, जिनके अंतर्गत सकल बोये गए क्षेत्र का दस प्रतिशत या इससे अधिक क्षेत्र है। सूत्र से प्राप्त शस्य विविधता सूचकांक और शस्य विविधिता के स्तर में प्रतिलोम सम्बन्ध होता है, अर्थात सूचकांक का उच्च मान शस्य विविधता के निम्न स्तर तथा सूचकांक का निम्न मान शस्य विविधता के उच्च स्तर का घोतक होता है।

ग्वालियर संभाग में शस्य विविधता सूचकांक का अध्ययन करने पर विदित होता है कि ग्वालियर संभाग का शस्य विविधता सूचकांक ३३.९९ है, जो उच्च शस्य विविधता का सूचक है, यहॉ जिला स्तर पर सबसे उच्च शस्य विविधता ग्वालियर जिले (२८.४९) मे, व मध्यम शस्य विविधता गुना (३५.७१), दतिया (३५.२८), और शिवपुरी (३०.९३) जिले में पाई जाती है। जबकि निम्न शस्य विविधता संभाग के अशोक नगर जिले (४२.१४) में पाई जाती है

तालिका क्रमांक २

ग्वालियर संभाग में जिलेवार मुख्य फसलों का क्षेत्रफल प्रतिशत एवं शस्य विविधता सूचकांक वर्ष २०१८-१९

क्र.	जिले का नाम	शुद्ध कृषित क्षेत्र	गेहूँ क्षेत्र फल	गेहूँ क्षेत्र प्रतिशत	राई/सरसों क्षेत्र प्रतिशत	राई/सरसों क्षेत्र प्रतिशत	धान क्षेत्र फल	धान क्षेत्र प्रतिशत	तिल क्षेत्र फल	तिल क्षेत्र प्रतिशत	उड़द क्षेत्र फल	उड़द क्षेत्र प्रतिशत	चना क्षेत्र फल	चना क्षेत्र प्रतिशत	सोयाबीन क्षेत्रफल	सेयाबीन क्षेत्र प्रतिशत	मूंगफली क्षेत्र फल	मूगफली क्षेत्र प्रतिशत	मिर्च मसाले क्षेत्रफल	मिर्च मसाले क्षेत्र प्रतिशत	शस्य विविधता सूचकांक
१	ग्वालियर	२१४३२३	१३०१०६	६०.७०	४७९१८	२१.४२	४११७५	१९.२०	२७१३०	१२.६५	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	28.49
२	शिवपुरी	४६१९६१	२६६३१७	५७.६४	-	-	-	-	-	-	१२२८९५	२६.६०	९२०९७	१९.९३	१३०७०१	२८.२९	१०६२३२	२२.९९		-	30.93
३	गुना	३३८३७३	१५९२१४	४७.५०	-	-	-	-	-	-	८६२४४	२५.४८	९९७०७	२९.४६	२१५७४६	६३.७५			४१९९१	१२.३८	35.71
४	अशोकनगर	३०७२२९	१५९६४८	५१.९६	-	-	-	-	-	-	९५८८३	३१.२०	९२६०८	३०.१४	१६९७७८	५५.२६	-	-	-	-	42.14
५	दतिया	२१२२८३	१७१६४०	८०.८५	-	-	३३८०२	१५.९२	२४७२७	११.६४	६९४५३	३२.७१	-	-	-	-	-	-	-	-	35.28
	ग्वालियर संभाग	**१५३४१६९**	**८८६९३५**	**५७.८१**	**-**	**-**	**-**	**-**	**-**	**-**	**३८४७५०**	**२५.०७**	**२९६५५४**	**२९.३२**	**५१८१३५**	**३३.७७**	**-**	**-**	**-**	**-**	**33.99**

स्त्रोत:-भू-अभिलेख ग्वालियर

तालिका क्रमांक ३

ग्वालियर संभाग में अवरोही क्रम में शस्य विविधता सूचकांक वर्ष २०१८-१९

क्रमांक	जिले /संभाग	शस्य विविधता सूचकांक/प्रतिशत में)
१	अशोकनगर	४२.१४
२	गुना	३५.७१
३	दतिया	३५.२८
४	शिवपुरी	३०.९३
५	ग्वालियर	२८.४९
	ग्वालियर संभाग	**३३.९९**

स्त्रोत:-भाटिया के सूत्रानुसार

शस्य विविधता सूचकांक का शस्य विविधता के साथ व्युत्क्रमानुपात है। अर्थात् जितना सूचकांक अधिक होगा विविधता उतनी ही कम होगी। और जितना सूचकांक कम होगा शस्य विविधता उतनी ही अधिक होगी। ग्वालियर संभाग के अशोकनगर जिले में सबसे अधिक शस्य विविधता सूचकांक (४२.१४) है। इसलिए शस्य विविधता यहॉ सबसे कम है। जबकि ग्वालियर जिले में शस्य विविधता सूचकांक सबसे कम (२८. ४९) है, इसलिए यहॉ शस्य विविधता सबसे अधिक है।

ग्वालियर संभाग में तहसीलवार शस्य विविधता में कालिक परिवर्तन

ग्वालियर संभाग में तहसीलवार शस्य विविधता में कालिक परिवर्तन को तालिका क्रमांक ४ में विदित किया गया है। तालिका में शस्य विविधता के कालिक विश्लेषण हेतु वर्ष २००९-१० तथा वर्ष २०१८-१९ की शस्य विविधता का निर्धारण किया गया है। शस्य विविधता का कालिक विशलेषण करने पर पता चलता है कि किंचित अपवादों को छोड़कर सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र में शस्य विविधता में अनवरत रूप से व्यापक ह्रास हुआ है। वर्ष २००९-१० में ग्वालियर संभाग का औसत विविधता सूचकांक २८.११ था, जो वर्ष २०१८-१९ में बढ़कर ३३.९९ हो गया सूचकांक का अधिक होना विविधता के कम होने का सूचक है। संभाग के २६ तहसीलों में से १७ (६५.३८) तहसीलों में वर्ष २००९-१० के औसत सूचकांक से अधिक है। वर्ष २०१८-१९ का अध्ययन दर्शाता है कि २६ तहसीलों में से १३ तहसील (५०:) में संभाग के औसत सूचकांक (३३.९९) से कम है, जबकि १३ तहसीलों का संभाग के औसत सूचकांक से अधिक है। वर्ष २००९-१० में संभाग में सबसे अधिक शस्य विविधता सूचकांक सेवढ़ा (४०.१६) तहसील में था जबकि वर्ष २००९-१० में शहडोरा (५२.८४) तहसील में सबसे अधिक शस्य विविधता सूचकांक पाया गया।

तालिका क्रमांक ४.

ग्वालियर संभाग में तहसीलदार शस्य विविधता सूचकाक में कालिक परिवर्तन वर्ष २००८-०९ से २०१८-१९

क्र.	तहसील/संभाग	२००९-१०	२०१८-१९	अंतर
१	ग्वालियर	21.89	24.32	-2.43
२	डबरा/पिछोर	20.3	26.65	-6.35
३	भितरवार	23.14	30.12	-6.98
४	चीनौर	19.02	35.97	-16.95
५	शिवपुरी	20.31	38.52	-18.21
६	कोलारस	22.09	21.16	0.93
७	करैरा	21.42	44.83	-23.41
८	नरवर	23.22	28.72	-5.5
९	पिछोर	25.36	32.13	-6.77
१०	खनियाधाना	26.72	24.85	1.87
११	पोहरी	24.48	26.13	-1.65
१२	गुना	26.31	24.06	2.25

१३	बामौरी	30.89	36.8	-5.91
१४	आरोन	38.15	42.62	-4.47
१५	राघौगढ़	36.92	27.19	9.73
१६	चाचौड़ा	25.72	39.53	-13.81
१७	कुम्भराज	28.98	48.12	-19.14
१८	अशोकनगर	21.42	44.36	-22.94
१९	शहडोरा	28.17	52.84	-24.67
२०	ईसागढ़	38.89	37.59	1.30
२१	मूंगावली	30.26	32.26	2.00
२२	चंदेरी	25.64	47.32	-21.68
२३	दतिया	26.49	25.39	1.1
२४	सेवढ़ा	40.26	45.09	-4.83
२५	भाण्डेर	24.92	29.53	-4.61
२६	इन्द्रगढ़	36.31	43.76	-7.45
२७	**ग्वालियर संभाग**	**28.11**	**33.99**	**-5.88**

त्रोतः-भाटिया के सूत्रानुसार

तालिका क्रमांक ४ से विदित है कि २००९-१० एवं २०१८-१९ के मध्य शस्य विविधता सूचकांक में -५.८८ का अन्तर पाया जाता है, जबकि तहसील स्तर पर शस्य विविधता का अध्ययन करने पर विदित होता है कि संभाग के अशोकनगर जिले की शहडोरा तहसील में सबसे ज्यादा शस्य विविधता परिवर्तन -२४.६७ प्रतिशत है। अर्थात यहाँ विविधता स्तर अधिक से कम हो गया। इसी प्रकार अन्य तहसीलों जिसमें परिवर्तन परिर्वतित हुए हैं वे करैरा (२३.४१), अशोकनगर (२२.९४), चंदेरी (२१.६७), शिवपुरी (१९.२१), कुम्भराज (१९.१४), चीनौर (१६.९५), चाचौड़ा (१३.८१) तहसील है, जिनमें १० प्रतिशत से अधिक का शस्य परिवर्तन परिर्वतित हुआ है।

तालिका क्रमांक ५ शस्य विविधता में ह्रास को इंगित करती है। वर्ष २००९-१० में अति उच्च (२५: से कम) शस्य विविधता १२ तहसीलों में ;४६ण१५:द्ध थी। जबकि २०१८-१९ में इस श्रेणी में केवल ४ तहसीलें ;१५ण३८: द्ध ही शेष रहीं। इसी प्रकार उच्च ;२५:.३५: के बीच) विविधता २००९-१० में ९ तहसीलों में (३४.६२) थी, जो वर्ष २०१८-१९ में भी ९ तहसीलों में रही। हालांकी तहसीलें बदल गयी। मध्यम विविधता (३५: .४५: के बीच) वर्ष २००९-१० में पाँच तहसीलों (१९.२३:) में थी जो वर्ष २०१८-१९ बढकर ९ तहसीलो में ;३४.६२:द्ध में हो गई। निम्न विविधता ;४५: से अधिक) का स्तर वर्ष २००९-१० में नगणन्य था। लेकिन वर्ष २०१८-१९ में इस स्तर में ४ तहसीलें (१५.३८ : द्ध शामिल थी।

तालिका क्रमांक ५

ग्वालियर संभाग में शस्य विविधता का विवरण

विविधता स्तर	विविधता सूचकांक	तहसीलों की संख्या		तहसीलों का प्रतिशत	
		२००९-१०	२०१८-१९	२००९-१०	२०१८-१९
अति उच्च	ढ २५	१२	४	४६ण१५	१५ण३८
उच्च	२५.३५	९	९	३४ण६२	३४ण६२
मध्यम	३५.४५	५	९	१९ण२३	३४ण६२
निम्न	झ४५	.	४	.	१५ण३८
योग		**२६**	**२६**	**१००**	**१००**

स्त्रोतः-भाटिया के सूत्रानुसार

अध्ययन क्षेत्र में शस्य विविधता का संबंध वर्षा की मात्रा भू भाग की स्थिति, मिट्टियों के प्रकार सिंचाई तथा कृषि यांत्रिकरण की सुविधा से हैं। इसके अतिरिक्त क्षेत्रीय कृषकों की निर्वाहक कृषि की प्रवृत्ति भी अधिक शस्य विविधता का कारण है।

अध्ययन क्षेत्र में सबसे कम शस्य विविधता के अन्तर्गत संभाग की शहडोर, करैरा, अशोकनगर तथा चंदेरी तहसीलों में है। क्योंकि इन तहसीलों में मिटिट्यॉ भूरी बलूई तथा वर्षा

अधिक होने के कारण सर्वाधिक क्षेत्र प्रधान फसलों को प्रमुख रूप से बोया जाता है। शहड़ोरा तहसील में सर्वाधिक क्षेत्र पर गेहूँ, सोयाबीन और चना, अशोकनगर तहसील में सोयाबीन, गेहूँ और चना चंदेरी तहसील में गेहूँ, सोयाबीन और चना जबकि करैरा तहसील में सर्वाधिक क्षेत्र पर मूंगफली की फसल बोयी जाती है। जिससे इन क्षेत्रों में अन्य फसलों का महत्व स्वतः कम हो जाता है। अतः यह शसय विविधता बहुत कम पाई जाती है क्योंकि सोयाबीन और मूंगफली की फसल तिलहनी एवं मुद्रादायनी फसल है जिससे क्षेत्रीय कृषकों का रूझान इन फसलों के प्रति सर्वाधिक है। अध्ययन क्षेत्र की कोलारस गुना, ग्वालियर और खनियाधाना तहसीलों में शस्य विविधता सर्वाधिक पाई जाती है। इन चारों तहसीलों में शस्य विविधता सूचकांक २५ प्रतिशत से कम है। इससे अभिप्राय यह है कि यहॉ शस्य विविधता सर्वाधिक है। इन तहसीलों में शस्य विविधता होने का कारण स्थलाकृति की विषमता एवं कृषकों का निर्वाहक कृषि के प्रति लगाव है।

सम्यक रूप से संभाग में शस्य विविधता के अध्ययन का यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अध्ययन क्षेत्र के उन भागों में शस्य विविधता कम है, जहॉ वर्ष में एक फसल उत्पन्न की जा सकती हे और भौगोलिक परिस्थितियॉ तथा तुलनात्मक मूल्य किसी फसल विशेष के विशेषीकरण करा में सहायक हैं। शस्य विविधता उन तहसीलों में अधिक है, जहॉ मिट्टी, धरातल तथा वर्षा की विभिन्नता एक फसल को किसी विशेष तहसील के सभी भागों में उत्पन्न किये जाने के लिये सहायक नही है। इस प्रकार क्षेत्र में जहॉ परिस्थितियॉ आदर्श है, सामान्यतः वें फसलों के विशिष्टीकरण को जन्म देती है, फलतः विविधता भी कम है। जबकि प्रतिकूल परिस्थितियॉ अधिक विविधता को जन्म देती है।

संदर्भ ग्रंथ :

१. आर.सी.तिवारी, बी.एन.सिंह , कृषि भूगोल, प्रयाग पुस्तक भन इलाहाबाद वर्ष २०००

2- Bhatia; Pattern of crop concentration and Diversification in India, Economic Geography, Vol.41, No.1

३. अलका गौतम कृषि भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, वर्ष २०१५

४. भू- अभिलेख ग्वालियर, कृषि सांख्यिकी रिपोर्ट, वर्ष २००८-०९ से वर्ष २०१८-१९

५. जिला सांख्यिकी पुस्तिका, जिला ग्वालियर, दतिया, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, जिला योजना एवं सांख्यिकी, कार्यालय, ग्वालियर।

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.4 No.4 Jan – Feb 2023

आत्महत्या : कारणे, प्रतिबंधात्मक उपाययोजना आणि समाजकार्य मध्यस्थी

डॉ. विलास घोडे
(सहयोगी प्राध्यापक) बी.पी.नॅशनल इन्स्टिटयूट ऑफ सोशल वर्क,
हनुमान नगर, नागपूर—२४
***Corresponding Author-* डॉ. विलास घोडे**
Email: vilasghode@rediffmail.com
DOI-10.5281/zenodo.7648088

प्रस्तावना:

आत्महत्या ही जगातील स्तरावर भीषण व भयावह सामाजिक समस्या निर्माण होत आहे. आत्महत्या ही कुटुंबातील सदस्यांवर दिर्घकालीन, बहुआयामी परिणाम करणारी समस्या असून कधीही याची भरपाई करता येण्या सारखी आहे. तसेच आत्महत्या ही एक छूपी व गुंतागुंतीची समस्या आहे. या समस्येवर कुटुंबातील व्यक्ती सहजासहजी चर्चा करण्यात तयार होत नाही. आत्महत्येचा विचार म्हणजे तात्पुरता, क्षणिक आणि स्वत:चा विनाश करणारी मानसिक अवस्था आहे

मनुष्य जन्माला आल्यानंतर कधी ना कधी मृत्यु अटळ असतो. जगातील सर्व प्राणीमात्रासाठी हा नैसर्गिक नियम लागू आहे. मनुष्याचा जन्म मात्र हा कोणाचा हाती नसतो तो कोणत्याही जातीत, धर्मात, गरीब, श्रीमंत अशा परिस्थित होऊ शकतो. मनुष्य जन्माला आल्यानंतर सुरुवातीचे दिवस बालपण आणि कुटुंबाच्या संस्कारमय वातावरणात जात असते. या संस्कारमय वातावरणात कुटुंब बालकाच्या सर्वोतोपरी काळजी व त्यांच्या गरजांवर लक्ष देत असतो. व्यक्तीच्या वाढ आणि विकासा बरोबरच स्वत:च्या जीवनाचा मार्ग तयार होत असतो. प्रत्येकाला आनंदमय, सुख, समृध्दीने जीवन जगाव असे वाटत असते.

मनुष्य जीवनाचा प्रवास हा कधीच एक सारखा नसतो. तर तो आपल्या हृदयातील ईसीजीप्रमाणे असतो. मनुष्यप्राणी नेहमी विकासशील आणि परिवर्तनशील असल्यामुळे जीवनामध्ये चढ—उतार प्रसंग येत असते. व्यक्तीला जीवनातील शैक्षणिक, आर्थिक, कौटुंबिक कलह, सामाजिक, व्यावसायिक अश्या अनेक क्षेत्रातील आव्हानांना सामना करावा लागतो. तर कधी—कधी सभोवतालची परिस्थितीही प्रतिकुल होत असते. तसेच समाज जीवनाचा वाईट अनुभव येत असतो. अशा वेळी व्यक्ती भावनाविवश होऊन, मनात जीवनाप्रती नैराश्य निर्माण करतो. कधीतरी एकांतवास शोधून स्वत:ला संपवून मृत्युला जवळ करतो.

मानसशास्त्रज्ञ सिंग्मंड फ्रॉइड च्या मते, कुठती तरी मानसिक विकृती आत्महत्येस कारणीभूत होते. एखाद्या व्यक्तीबद्दलचे किंवा वस्तुबद्दलचे अतीव प्रेम असफल झाल्यास प्रेमाचे रुपांतर राग व द्वेष यांत होऊन या भावना प्रेम करणाऱ्या व्यक्तीवरच उलटतात. त्यामुळे व्यक्ती आत्महत्येस प्रवृत्त होते. आत्महत्या ही जरी वैयक्तिक घटना व हानी असली तरी तिचा त्यांच्या कुटुंबाशी, समुहाशी आणि नातेसंबंधांशी दिर्घकालीन परिणाम जोडलेला असतो. कोणताही व्यक्ती सहजासहजी आत्महत्या करण्यासाठी तयार होत नाही किंवा त्यासाठी कौटुंबिक, आर्थिक, धार्मिक, राजकीय, सामाजिक अन्य घटकही जबाबदार राहू शकतात. अशा या आत्महत्याचे परिणाम व्यक्तींच्या कुटुंबावर दिर्घकालीन परिणाम, व्यक्तीच्या कार्यालयीन स्थितीवर, त्याच्या मित्रपरिवारांवर आणि समाजव्यवस्थेवर त्याचा परिणाम होत असतो. आजच्या समाज व्यवस्थेमध्ये आत्महत्येचे वाढते प्रमाण असून ती जटिल एक सामाजिक समस्या निर्माण होत आहे. भारतामध्ये आत्महत्या करणे एक हा गुन्हा समजला जातो. अमेरिकामध्ये आत्महत्याला गुन्हामध्ये समाविष्ट केलेले नाही. काही ग्रीक व रोमन सिध्दांतानुसार मनुष्याला आपला प्राण घेण्याचा पूर्ण अधिकार आहे. १७ व्या आणि १८ व्या शतकात इंग्लंड मध्ये डोने आणि हुमे, फ्रांसमध्ये मॉन्टेग्यू व्हॉल्टेअर हयांनी या विरुध्द आवाज उठविला होता.

आत्महत्याची संकल्पना :

मानवी समाजामध्ये काळानुसार परिवर्तन होत असते. या परिवर्तनाच्या स्थितीमुळे सामाजिक मूल्यांमध्ये बदल घडून येतो. या बदलत्या मुल्यांचा परिणाम मानवी वर्तनावर आणि मानवी संबंधावर होत असतो. त्यामुळे व्यक्तींच्या मनात मूल्य संघर्ष निर्माण होऊन समाजात व कुटुंबात असामंजस्याची भावना निर्माण होते. व्यक्तीमध्ये समाजातील जुन्या मूल्यांची जोपासना आणि नवीन मूल्यांचा स्वीकार यामध्ये ओढताण, संघर्ष आणि असमायोजन झाल्यामुळे व्यक्ती आत्महत्येचा प्रयत्न करतो. मानवी जीवनाचा प्रवास हा दिर्घकालावधीचा असतो. मानवी जीवनाच्या प्रवासामध्ये अनेक प्रकारचे अनुभव, मित्रपरिवार आणि वातावरण लाभत असतात. त्यातूनच व्यक्तीच्या इच्छा आकांश निर्माण होत असतात. कधी कधी सामाजिक परिस्थितीमुळे अतिरिक्त दबाब, तणाव, दगाबाजी, विविध कौटुंबिक कलह व अडचणी, आर्थिक संकटे निर्माण होत असतात. अशावेळी व्यक्तीच्या जीवनात निराशा, उदासिनता, असमाधानी आणि अस्थिरता निर्माण होऊन व्यक्ती आत्महत्या करण्यास प्रवृत्त होतो. एमिल दरखीम यांच्या नुसार,'' प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्षत: किंवा सकारात्मक व नकारात्मक, ज्या कृतीचा शेवट आत्मनाशात होतो अशी व्यक्तीकडून घडणारी कोणतीही कृती आत्महत्या ठरते.

आत्महत्याची स्थिती:

रजिस्ट्रार जनरल ऑफ इंडियाच्या पुढाकाराने झालेला भारतातील आत्महत्यांचा शास्त्रीय अभ्यास ऑगस्ट २०१२ च्या लॅन्सेट या जगप्रसिध्द वैद्यकिय नियतकालिकामध्ये प्रसिध्द झाला आहे. या अभ्यासानुसार भारतात दरवर्षी २ लाख व्यक्ती आत्महत्या करित आहे. त्यामध्ये ४० टक्के पुरुष व ५९ टक्के महिला या १५ ते २९ वयोगटातील आहेत. दरवर्षी देशातील ८० ते १ लाख तरुण—तरुणी स्वत:च्या हाताने स्वत:चे आयुष्य संपवून घेत आहेत. भारतातील आत्महत्यांची नोंद ठेवणाऱ्या नॅशनल क्राइम रेकॉर्ड ब्युरो या संस्थेच्या रिपोर्टनुसार २००६ पासून दरवर्षी भारतातील आत्महत्यांची संख्या २.५ टक्क्यांनी वाढलेली आहे. भारतात २०२० च्या कोविड कालावधीत सर्वाधिक १.५३ लाख लोकांनी आत्महत्या केलेली आहे. सन २०२१ मध्ये १.६४,०३३ पेक्षा जास्त लोकांनी आत्महत्या केलेली आहे. यामधून ४२००० हजार हातावर कष्ट करणाऱ्या कामगारांनी आत्महत्या करुन त्यांचे प्रमाण २५.६ आहे. त्यावरुन प्रत्येक दिवशी ४५० व्यक्ती आत्महत्या करीत असुन प्रत्येक तासाला १६ व्यक्ती आत्महत्या करित आहे. जागतिक आरोग्य संघटनेच्या मते, जगामध्ये दरवर्षी १० लाख पेक्षा जास्त आत्महत्या होतात. जागतिक आरोग्य संघटना अहवालानुसार जगामध्ये ४० सेकंड मध्ये १ व्यक्ती, १ मिनिटमध्ये १.५ व्यक्ती, १ तासामध्ये ९० व्यक्ती, १ दिवसामध्ये २१६० व्यक्ती, १ महिनामध्ये ६५७०० व्यक्ती, १ वर्षामध्ये ७,८८,४०० व्यक्ती आत्महत्या करित आहे. हि आकडेवारी जागतिक स्तरावरील अतिशय चितंनीय आणि दु:खद घटना आहे. एका अभ्यासानुसार भारतात प्रत्येक दिवशी ४५० व्यक्ती आत्महत्या करीत असुन प्रत्येक तासाला १६ व्यक्ती आत्महत्या करित आहे. भारतातल्या आत्महत्यांमध्ये सर्वाधिक २१.२० टक्के वाढ झालेली आहे. आखाती देशामध्ये भारतीयांचे आत्महत्याचे प्रमाण जास्त आहे. सन २०१४ पासून जवळपास ४००५ भारतीयांनी परदेशात आत्महत्या केलेल्या आहेत. परराष्ट्र मंत्रालयाने दिलेल्या माहितीनुसार सर्वात जास्त १,१२२ आत्महत्यांची नोंद संयुक्त अरब अतिरात येथे झालेली आहे.

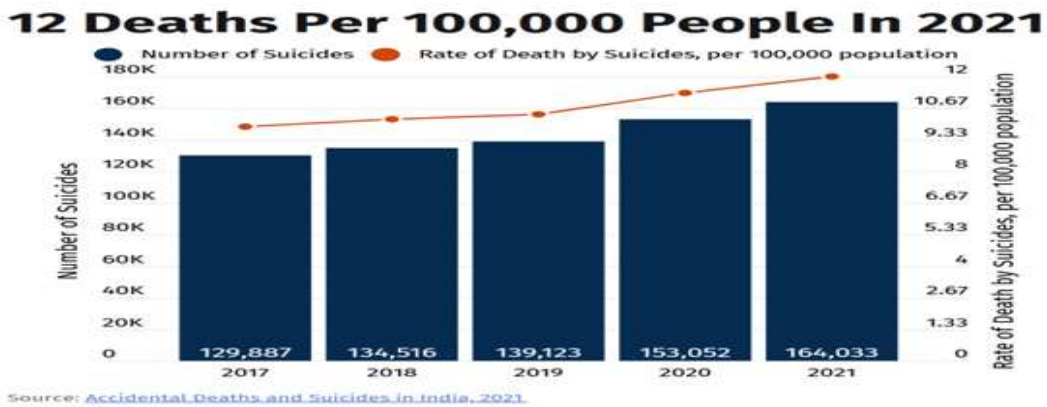

महाराष्ट्रामध्ये सन २००९—१० या कालावधीत राज्य गुन्हे लेखा कार्यालयाच्या आकडेवारीनुसार १७,३६८ शेतकऱ्यांनी निराशेमुळे, चिंताजनक स्थितीमुळे आणि मानसिक आजारामुळे आत्महत्या केलेली आहे. सन २०१५ मध्ये १२,६०२ शेतकरी आणि शेतमजुरांनी आत्महत्या केलेल्या आहेत. सन २०१९ मध्ये ४३२४ शेतमजुरांनी आत्महत्या केलेली आहे. सन २०२० मध्ये १०,६७७ व्यक्तींना आत्महत्या केल्यात आहेत. सन २०२१ साली देशभरात १० हजार ८८१ शेतकरी व शेतमजुरांनी आत्महत्या केलेल्या आहेत. यामधील ५५६३ शेतमजुरांनी आत्महत्या केलेल्या आहेत भारतातील पाच राज्यामध्ये शेतकऱ्यांच्या आत्महत्यांचे प्रमाण आहेत. २०२१ मध्ये देशातील एकूण शेतकरी आत्महत्यापैकी ३७ टक्के घटना या महाराष्ट्र राज्यातील आहे. त्यातील ४०६४ आत्महत्या एकटया महाराष्ट्रात झालेल्या आहेत कर्नाटक मध्ये २,१६९, आंध्रप्रदेश मध्ये १,०६५, मध्य प्रदेश मध्ये ६७१ आणि तामिळनाडू मध्ये ५९९ व्यक्तींनी आत्महत्या केलेल्या आहेत. यामधील २६४० शेतकरी तर १४२४ शेतमजूर होते. सरासरी प्रत्येक तीन आत्महत्यांमागे एक आत्महत्या महाराष्ट्र राज्यातील होती. महाराष्ट्रात गेल्या दोन महिन्यात २१३८ शेतकऱ्यांनी आत्महत्या केल्याचे वृत्तपत्रामध्ये प्रकाशित झालेले आहे. शासकिय आकडेवारीनुसार नागपूर आणि अमरावती विभागात आत्महत्यांचे प्रमाण अधिक आहे(एनसीआरबी नुसार)

प्रमुख शब्द: आत्महत्या, कारणे, उपाययोजना, समाजकार्य मध्यस्थी

शोध निबंधाचा उद्देश:

१. जागतिक व भारतामधील आत्महत्येच्या पार्श्वभूमीचा अभ्यास करणे
२. आत्महत्येचे स्वरुप आणि व्याप्तीचे अध्ययन करणे
३. आत्महत्याशी संबंधीत कारणांचे विश्लेषण करणे
४. आत्महत्याशी संबंधी उपाययोजना सुचविणे व समाजकार्य मध्यस्थी करणे.

अध्ययन पध्दती : प्रस्तुत शोध पेपर द्वितीय स्त्रोत तथ्यांच्या आधारावर तयार करण्यात आलेला आहे. यामध्ये पुस्तके, मासिके, दै. वृत्तपत्रातील माहिती आणि वेबसाईटच्या माध्यमातून प्राप्त झालेल्या तथ्यांचा आधारावर आशय विश्लेषण करण्यात आलेला आहे.

आत्महत्येची कारणे:

समाजातील आत्महत्येची कारणे निश्चितपणे ठरविणे अत्यंत जटिल कार्य आहे. मानवी सामाजिक संबंध अत्यंत घनिष्ठ आणि अदृश स्वरुपाचे असल्यामुळे आत्महत्याची अनेक कारणे असू शकतात. अनेक समाजशास्त्रज्ञांनी आणि विचारवंतांनी अभ्यास करुन आत्महत्याची कारणे शोधून काढण्याचा प्रयत्न करण्यात आला. आत्महत्यासाठी कोणत्याही एकाच कारणांचा संबंध नसतो. त्यामध्ये प्रत्यक्ष आणि अप्रत्यक्षरित्या अनेक कारणांचा समावेश असतो.

शारिरिक कारणे : आत्महत्या करण्यामागे काही प्रमाणात शारिरिक समस्या व आजार ही जबाबदार घटक आहे. अनेक वेळा शारिरिक अपंगत्व, व्याधी शारिरिक आजार व रोग, शारिरिक त्रस्तता त्यामुळे अश्या व्यक्ती आत्महत्या करण्याकडे वळत असतो. वृध्द काळातील शारिरिक आजार यामुळे व्यक्ती जीवनाला कंटाळून आत्महत्या करीत असतो.

सामाजिक कुप्रथा : आजही प्रत्येक समाजात प्रथा, परंपरा, रितीरिवाज त्यांचा प्रभाव दिसून येतो. आजही आंतरजातीय विवाह पध्दतीचा विरोध, दासी प्रथा, बालविवाह, सती प्रथा, हुंडापध्दती अश्या प्रथामुळे सामाजिक जीवन असुरक्षित झालेले आहे. हुंडापध्दतीमुळे महिलांचा छळ, मारहाण, क्रुरतेची व अपमानास्पद वागणूक यामुळे महिलांमध्ये जीवनाला कंटाळून आत्महत्या करण्याचे प्रमाण दिवसेंदिवस वाढत आहे

मानसिक आजार: आत्महत्या होण्यामागे मानसिक आजार ही प्रमुख कारण आहे. जवळपास ६० टक्के आत्महत्या या मानसिक विकारातून होतात. ४० ते ६० टक्के व्यक्ती आत्महत्या करण्यापूर्वी कुठल्यातरी डॉक्टरशी एका महिन्याच्या आत संपर्क करतात. परंतु मानसिक रोग तज्ज्ञांशी संपर्क फार कमी व्यक्ती करतात. तर उर्वरित आत्महत्या अचानक आलेल्या नैराश्यातून होतात. मानसिक आजारांमध्ये डिप्रेशन हा आजार आत्महत्यासाठी सगळयात जास्त कारणीभूत आहे. डिप्रेशनने ग्रस्त असलेल्या रुग्णांमध्ये आत्महत्या करण्याची शक्यता १५ टक्के आहे. स्किझोफ्रेनिया आणि अति अल्कोहोल व्यसनामुळे व्यक्ती आत्महत्या

करतो. आपल्या समाजामध्ये मानसिक आजारांना फारसे महत्व दिल्या जात नाही. आजच्या स्पर्धेच्या परिस्थितीमध्ये व्यवसायामध्ये अनिश्चितता, नोकरीमध्ये स्पर्धा, नैसर्गिक संकटे, आपत्ती येत असतात.भारतासारख्या अशा अनेक कारणांनी अवाजवी चिंता, भिती, नैराश्य, खिन्नता, भावनिक अस्थिरता, उदासिनता, निद्रानाश, अति व्यसनाचे प्रमाण या कारणांनी व्यक्ती मानसिक आजारांना बळी पडून आत्महत्याला बळी पडतो. भारतासारख्या १३५ कोटी लोकसंख्या असणाऱ्या देशात फक्त ९००० मानसिक रोग तज्ज्ञ आहे. अमेरिकेत ३३ कोटी लोकसंख्यासाठी २८००० हजार मानसिक रोग तज्ज्ञ आहे. त्यामुळे भारतात मानसिक रोग तज्ज्ञांची कमरता असल्यामुळे आत्महत्याचे प्रमाण जास्त आहे.

आर्थिक समस्या : आज समाजातील लोकांना मोठया प्रमाणात आर्थिक समस्यांना तोंड दयावे लागत आहे. दिवसेंदिवस वाढती महागाई यामुळे लोकांना जीवन जगणे भयावह झालेले आहे. कुटुंबातील उत्पन्न कमी आणि त्यांच्यावर अवलंबून असणाऱ्या सदस्यांची संख्या जास्त असल्यामुळे किमान गरजा पूर्ण करणे कठिण जातात. अन्न, वस्त्र आणि निवारासह शिक्षण आरोग्य या सारख्या महत्वपूर्ण गरजा पूर्ण करणे आवश्यक असते. आज शिक्षणाचे प्रमाण वाढलेले असून बेरोजगारांचा प्रश्न निर्माण झालेला आहे. कौशल्य प्रदान शिक्षण देण्याचे प्रमाण वाढत असुनही स्वयंरोजगाराचे प्रमाण वाढलेले नाही. कृषी क्षेत्रातील उत्पनाची अनिश्चिता असल्यामुळे आणि वाढते कर्जाचे प्रमाणामुळे शेतकऱ्या समोर आर्थिक समस्या निर्माण झालेल्या आहेत. व्यावसायिक लोकांमध्येसुध्दा प्रतिकूल आर्थिक परिस्थितीमुळे आत्महत्या होत आहे. या आर्थिक समस्या वर्षोनुवर्ष भेडसावत असल्यामुळे शेवटी जीवनाला कंटाळून आत्महत्या करीत आहे.

कौटुंबिक कलह/विघटन: समाजामध्ये कुंटुंब संस्थेला अन्यन्य साधारण महत्व आहे. कुटुंबाशिवाय समाजाचे अस्तित्व राहू शकत नाही. पाश्चिमात्य देशातील संस्कृतीच्या प्रभावामुळे स्त्री—पुरुषाच्या कार्यशैलीत, भूमिकेत आणि वर्तनपध्दतीमध्ये मोठया प्रमाणात बदल व परिवर्तन झालेले आहे. त्यामुळे पती—पत्नीच्या संबंधामध्ये अविश्वास, संशयवृत्ती, मतभेद, कुटुंब बाहेरील व्यक्तीचा हस्तक्षेप, कौटुंबिक असमायोजन व मतभेद इत्यादी कारणांनी कौटुंबिक विघटन मोठया प्रमाणात होत आहे. या कौटुंबिक विघटनाच्या परिणामांमुळे कुटुंबातील व्यक्तीमध्ये आत्महत्या करण्याचे प्रमाण दिवसेंदिवस वाढत आहे.

रोजगाराची समस्या: भारतातील शिक्षणाचे प्रमाण दिवसेंदिवस वाढत आहे. युवकांनी शिक्षण घेतलेल्या नंतर त्याच्यासमोर रोजगाराची समस्या निर्माण होते. आजचा युवक रोजगारासाठी वाटेल तर कार्य करण्यासाठी मागेपुढे विचार करीत नाही. शिक्षण, प्रशिक्षण, कौशल्य, अहोरात्र स्पर्धा परिक्षेची तयारी करुन रोजगाराची संधी शोधत आहे. परंतु दिवसेंदिवस रोजगाराची संधी कमीत होत असल्यामुळे युवकांमध्ये नैराश्य, खिन्नता, चिंता वाढत आहे. जीवनाप्रती वाढती जबाबदारी आणि कौटुंबिक जबाबदारी यामुळे रोजगाराचा चिंता युवकांपुढे निर्माण होत आहे. तसेच स्वयंरोजगार निर्माण करण्यासाठी अनेक समस्यांना सामना करावा लागतो. त्यामुळे रोजगाराच्या अपयशामुळे युवकांमध्ये वैफल्यग्रस्त, उदासिनता, निराश निर्माण होऊन युवकांमध्ये आत्महत्याचे प्रमाण वाढलेले आहे

आरोग्याच्या समस्या : 'सृदृढ आरोग्य हिच खरी संपत्ती होय' असे म्हटल्या जाते. आजच्या स्पर्धा, अति महत्वकांक्षापणा, भौतिकवादी प्रवृत्ती यामुळे व्यक्ती मशिनप्रमाणे कामे करु लागलेला आहे. स्वत:च्या आरोग्य कडे दुलर्क्ष करुन रोगाला आमंत्रण देत आहे. आज नवनविन आजार उदयाला येत आहे. जगामध्ये कोरोना सारखी महामारी येऊन आरोग्य सेवा सुविधांच्या अभावामुळे लाखो लोक मृत्युमुखी पडले. आज युवकांमध्ये हृदयरोगाच्या समस्यासोबत इतर आजार वाढत आहे. तसेच वृध्द काळातही आरोग्याच्या समस्या मोठया प्रमाणात निर्माण होत असल्यामुळे आजारांना कंटाळून व्यक्ती आत्महत्या करीत आहे.

कर्जबाजारीपणा: खाजगीकरणाच्या प्रभावामुळे प्रत्येक क्षेत्रात स्पर्धा वाढलेली आहे. उद्योगक्षेत्रात नवीन नवीन उत्पादनाचे साधने, यंत्र सामुग्री, उद्योगामधील स्पर्धा यामुळे व्यक्तीचा खर्चाचा व्यवहार वाढलेला आहे. मोठया उद्योगासाठी भांडवलांची आवश्यकता असते. अशावेळी उद्योजक अनेक बॅकेकडून मोठयाप्रमाणात कर्ज घेतात. काही उद्योगामध्ये तोटा मोठया होत असल्यामुळे अनेक उद्योजक कर्जबाजारीपणामुळे आत्महत्या करीत आहे.

व्यसनाधिनता: समाजामध्ये वाढती व्यसनाधिनता ही एक भयावह समस्या निर्माण होत आहे.

युवकांमध्येही व्यसनाधिनतेचे प्रमाण दिवसेंदिवस वाढत आहे. व्यसनामुळे युवकाचा सृदृढ शारीरिक आणि मानसिक क्षमतेचा ऱ्हास होत असून त्यांच्यामध्ये विकृती व कर्जबाजारीपणाचे प्रमाण वाढलेले आहे. अति व्यसनाधिनतेमुळे त्यांच्या रोजगारावर परिणाम होत आहे. व्यसन व्यक्तीला समस्यांच्या चक्रव्युहात गुरफटुन टाकत असतो. शेवटी व्यसनाच्या अतिसेवनामुळे व्यक्तीला कोणताही मार्ग व आधार मिळत नसल्यामुळे आत्महत्या करित असता.

अन्याय व अत्याचार: आज प्रत्येक क्षेत्रात स्पर्धा दिसून येते. खाजगी कार्यालयात, शासकिय विभागामध्ये कधी कधी व्यक्तीकडे सर्व गुणवत्ता व क्षमता असूनही अन्याय व अत्याचाराला बळी पडावे लागते. वरिष्ठाकडून अपमानाची वागणूक आणि उपेक्षा करित असतात. महिलांवरही कामाच्या ठिकाणी अन्याय व अत्याचार होत असतात व्यक्ती न्यायची अपेक्षा करतो. परंतु कधी कधी न्यायची संधी मिळत नाही. शेवटी व्यक्ती मनामध्ये अन्याय विषयी निरंतर विचार करीत राहतो. कधी कधी व्यक्ती आरोप व प्रत्यारोप केल्या जाते. अशा या अन्यायग्रस्त परिस्थितीमुळे मनात आत्महत्याचे विचार येत असल्यामुळे कधीतरी एकांतवासामध्ये आत्महत्या करीत असतो

विरहाचे प्रसंग: मानवी जीवनात कोणत्या क्षणाला काय होईल याबाबत निश्चित सांगता येत नाही किंवा कोणती आपत्ती येणार यासंबंधीही सांगता येत नाही. घटस्फोट, कधी कधी अतिशय जवळचा व प्रिय व्यक्ती अल्पशा आजारांनी आपल्या जवळून कायमचा निघून जातो. मानवी जीवनात झालेल्या चुकांच्या पश्चातापामुळे व्यक्ती आत्महत्या करीत असतो. अशावेळी प्रिय व्यक्ती किंवा जोडीदाराच्या विरहामध्ये व्यक्ती आत्महत्या करीत असतो.

व्यक्तीमत्व दोष: बॉर्डर लाईन पर्सनॅलिटी डिसऑर्डर आणि ॲटी सोशल पर्सनॅलिटी डिसऑर्डर असणाऱ्या लोकांमध्ये आत्महत्या करण्याचे प्रमाण बाकीच्या लोकांपेक्षा जास्त असते. व्यक्तीमत्व दोष असलेले व्यक्तीना कुंटुंबात आणि समाजात समायोजन करतांना समस्या येत असल्यामुळे असे व्यक्ती आत्महत्या करण्याचा प्रयत्न करतात.

प्रतिबंधात्मक उपाययोजना:

आत्महत्या ही देशासमोरील एक गंभीर समस्या होत असून यासंबंधी प्रतिबंधात्मक उपाययोजना शोधणे गरजेचे आहे. देशात दिवसेंदिवस आत्महत्याचे प्रमाण वाढत आहे त्याचा परिणाम समाज, कुटुंब संस्था व युवा पिढीवर होत आहे.

आत्महत्या प्रतिबंधात्मक केंद्राची स्थापना : आत्महत्याचे प्रमाण सर्वव्यापी होत आहे. प्रत्येक समाजामध्ये आत्महत्यचे प्रमाण कमी जास्त प्रमाणात आढळून येते. चाईल्ड लाईन प्रमाणे आत्महत्या प्रतिबंध मदत केंद्राची स्थापना करुन २४ तास टोल फ्री हेल्पलाईन उपलब्ध करुन आत्महत्या प्रतिबंध कार्य करणे आवश्यक आहे. या हेल्पलाईन क्रमांकाचा प्रचार प्रसार करणे आवश्यक आहे. समस्यांच्या विख्याळात सापडलेला व्यक्ती अशा हेल्पलाईन मदत घेऊ शकतो. त्याचप्रमाणे अशा कार्यामध्ये सहकार्य, समायोजन आणि पुनर्वसनात्मक कार्य केल्यास आत्महत्याचे प्रमाण कमी होऊ शकेल

रेसक्यु टिम: आजच्या परिस्थिती मध्ये आत्महत्याचे प्रमाण दिवसेंदिवस वाढतच आहे. कौटुंबिक वाद विवाद, कलह, वैयक्तिक समस्या, नैराश्य इत्यादी अनेक कारणांनी व्यक्ती आत्महत्या करण्यासाठी तलाव, विहिरी अश्या ठिकाणी आत्महत्या करण्याच्या प्रयत्न करतो. अशा ठिकाणी प्रतिबंध लावून रेसक्यु टिम उपलब्ध असल्यास आत्महत्या करणाऱ्या व्यक्तीना पकडून किंवा थांबवून त्याला आत्महत्यापासून परावृत्त करता येते.

आशावादी विचारसरणी : प्रत्येक व्यक्ती सुख व दु:खानी व्यापलेला आहे. जीवनाच्या काही प्रसंगामध्ये सुख, आनंदायी वातावरण किंवा मनाला अनुसरुन कामे होत असतात. परंतु काही कालावधीत अपेक्षित यश न मिळाल्यामुळे व्यक्तींना असहाय दु:ख होत असतात. अशावेळी व्यक्ती संयम, सहनशीलता, ज्येष्ठ व मित्रमंडळीचे सहकार्य, विचारवंताचे आत्मचारित्र वाचून सकारात्मक किंवा आशवादी विचारसरणी निर्माण केल्यास आत्महत्या करणार नाही.

व्यायाम, योगा व ध्यान: निसर्गिक पध्दतीने व्यक्तीमध्ये शारिरिक व मानसिक क्षमता व नियमित सुदृढता वाढविण्याचे कार्य व्यायाम, योगा व ध्यान यांच्या माध्यमातून केल्या जाऊ शकते. आजच्या स्पर्धेच्या युगात प्रत्येक व्यक्तीला जास्तीत जास्त कार्य करावे लागते. तसेच व्यक्तीच्या अपेक्षाही दिवसेंदिवस वाढत असल्यामुळे मनुष्य यंत्राप्रमाणे काम करु लागलेला आहे. व्यक्तीच्या शारिरिक आणि मानसिक आरोग्याकडे दुर्लक्ष झाल्यामुळे ताण—तणाव, चिडचिडेपणा वाढलेला आहे. तर कधी कधी वाढलेला तणावामुळे व्यक्ती

आत्महत्याकडे वळण्याची शक्यता असते. अशावेळी स्वता: निसर्गिक पध्दतीने शारिरिक व मानसिक क्षमता वाढविल्यास आत्महत्यापासून व्यक्ती परावृत्त होऊ शकतो

कौटुंबिक संवाद: भारतामध्ये पूर्वी संयुक्त पध्दती अस्तित्वात असल्यामुळे कुटुंबातील समस्या कुटुंबात सोडविल्या जात होत्या. कुटुंबातील ज्येष्ठांच्या मार्गदर्शनातून व्यक्तीगत आणि आपत्तीजनक समस्या सोडविल्या जात होत्या. परंतु रोजगारांच्या समस्यामुळे स्त्री आणि पुरुष दोन्ही कामासाठी घराबाहेर पडू लागले. तसेच वाढत्या विभक्त कुटुंब पध्दतीमुळे कौटुंबिक संवादाचा ऱ्हास झालेला आहे. त्यामुळे उद्‌भवलेल्या समस्यांवर कौटुंबिक स्तरावर मदत व सहकार्य मिळाल्यास आत्महत्याचे प्रमाण नक्कीच कमी होईल.

मानसिक आजारांची ओळख: मानवी प्रगतीसोबत अनेक आजारांचा जन्मही नव्याने होत आहे. पूर्वीही मानसिक आजार होता पण कौटुंबिक मदतीने काही प्रमाणात सोडविल्या होता. तर काही ठिकाणी अंधश्रध्दा मनाशी बाळगून वर्षोनवर्ष त्या समस्यांमध्ये होरपळून जात होते. पण आजही अनेक लोकांमध्ये मानसिक आजार दिसून येतो. त्यासंबंधी ओळख नसल्यामुळे मानसिक आजाराचे रुग्ण दिसून येत नाही. असे रुग्ण आपल्या मनामध्ये संताप, राग, क्रोध, चिड, आक्रस्तेपणा भावनांचे दमन करुन जीवन जगत असतात. या प्रकारचे रुग्ण वेळप्रसंग ओळखून आत्महत्या करीत असतात. त्यामुळे मानसिक आजार ओळखून वेळीच उपचार मिळाल्यास असे रुग्ण आत्महत्या करणार नाही.

मानसोपचार: मानसिक विकृतीचा संबंध पूर्वी पाप—पुण्य, अंधश्रध्दा यांच्याशी जोडला जात होता. त्यामुळे मानसिक विकृतीकडे उपचाराच्या दृष्टिने विचार केल्या जात नव्हता. आपल्याकडे मानसोपचार तज्ज्ञाकडे जाण्याची लाज वाटते किंवा काहीतरी कमीपणा वाटण्याची धारणा मनात असल्यामुळे मानसोपचार तज्ज्ञांकडे रुग्णांना पाठविले जात नाही. मानसोपचार तज्ज्ञाकडे फक्त वेडेच लोक जातात. असाही आपल्या समाजामध्ये एक गैरसमज आहे. व्यक्तीला असलेल्या मानसिक विकृतीचे लक्षणे ओळखून मानसोपचार तज्ज्ञांचे मार्गदर्शन आणि सल्ला घेतला तर आत्महत्याचे प्रमाण कमी होईल

साधी राहणीमान: पाश्चिमात्य देशाच्या प्रभावामुळे व्यक्ती भौतिक सुख साधनाकडे आकर्षित झालेला आहे. व्यक्ती आपसामध्ये स्पर्धा, दुयम गरजांची अतिरिक्त आवड, वाढत्या महागाई मुळे आर्थिक उत्पन्न वाढविण्याच्या प्रयत्न करुन स्व क्षमतेपेक्षा जास्त जबाबदारी, अतिरिक्त कार्य, ताण—तणाव अशा प्रसंगाना सामोरे जात आहे. सतत स्पर्धेच्या भावनामुळे व्यक्ती आत्महत्याच्या चक्रव्युहात सापडल्या जाऊ शकतो. त्यामुळे आपली स्व क्षमता, कुटुंबाची गरज भविष्यातील नियोजन इत्यादी बाबी लक्षात घेऊन आपली जीवनशैली निश्चित करणे आवश्यक आहे. त्यामुळे साधी राहणीमान ठेऊन उच्च प्रतीचे कार्य, विचार केल्यास व्यक्ती आत्महत्यापासून दूर राहू शकतो.

समाधानता: मनुष्य जीवनातील समाधानता फार मोठा गुण आहे. प्रत्येक व्यक्ती कोणत्यातरी क्षेत्राशी संबंधी असतो. आणि उच्च पद प्राप्त करण्यासाठी प्रयत्न करतो. कधी कधी उच्च पद न मिळाल्यामुळे, समाधानकारक नोकरी न मिळाल्यामुळे किंवा इतरांचा त्रासामुळे व्यक्तीमध्ये असमाधानता निर्माण झाल्यामुळे व्यक्ती आत्महत्याकडे वळू शकतो. अशावेळी परिस्थिती ओळखून जीवनात समाधानता जोपासली तर निराशजनक विचार मनात येणार नाही.

खेळाडूवृत्ती: छंद हा व्यक्तीच्या जीवनात सकारात्मक प्रेरणा निर्माण करणारा घटक आहे. व्यक्ती छंदाचा व्यासंगी असणे आवश्यक आहे. ज्यामध्ये वाचणे, लिहणे, खेळणे, विविध कला आत्मसात करणे, मित्रांमध्ये रमणे, मैत्रीपूर्ण संबंध जोपासणे, समाजकार्य करणे, निसर्ग भ्रमण करणे, कौटुंबिक व सामाजिक संबंधाचे महत्व जोपासणे इत्यादी. अश्या व्यक्तींचा जीवनात नैराश्य, एकांतवात, नकारात्मक विचार येण्याचे प्रमाण कमी असुन खेळाडूवृत्ती जीवन व्यतीत केल्यास नवीन प्रेरणा मिळत असते.

मनोरंजनात्मक साधने: व्यक्तीला कठिण प्रसंगी विरंगुळा करण्यासाठी मनोरंजनात्मक साधनाची गरज भासत असते. अशावेळी संगित, नृत्य, विनोदी चित्रपटे, पर्यटन स्थळे, ऐतिहासिक स्थळे, बाग—बगिचे इत्यांदी साधनाचा वापर करुन कठिण प्रसंगावर मात करता येते. तसेच काही काळापुरते आपण वाईट विचारांपासून परावृत्त किंवा दूर राहू शकतो.

प्रसार माध्यमे: आज समाजामध्ये घडत असलेल्या घटना सामान्य व्यक्तीपर्यत पोहचविण्याचे कार्य प्रसार माध्यमे करित आहे. यामध्ये इलेक्ट्रानिक्स माध्यमे, प्रिंट माध्यमे, ई—

माध्यमे, सामाजिक माध्यमे आणि इतरही माध्यमांचा प्रभाव लहाण्यांपासून ते मोठयापर्यंत पडलेला आहे. राष्ट्र व समाज उपयुक्त घटना व माहितीला प्राधान्य देऊन समाजमनावर वाईट परिणाम होणाऱ्या घटना व माहितीचा प्रचार कमी करुन सत्य व वास्तविक परिस्थितीकडे लोकांचे लक्ष केंद्रित करणे आवश्यक आहे.

समाजकार्य मध्यस्थी : भारतामध्ये समाजकार्याचे शिक्षण १९३६ पासून सुरु झाले असून ते एक शास्त्र आहे. समाजकार्य मध्ये शास्त्रीय पध्दतीने अभ्यास करुन लोकांच्या समस्या सोडविण्याचा प्रयत्न केला जातो. वैयक्तिक स्वरुपाच्या समस्या व्यक्ती सहाय कार्यच्या माध्यमातून सोडविल्या जातात. समुहाच्या समस्या व विकास या गट कार्याच्या माध्यमातून सोडविल्या जातात. तर समुदायाच्या गरजा, समस्या व सर्वांगिण विकास करण्यासाठी समुदाय संघटन पध्दतीच्या आधारे समाजकार्य व मध्यस्थी केलेल्या जाते. समाजकार्यच्या दुयम पध्दतीनेद्वाराही समाजाच्या समस्यांचे अध्ययन व निराकरण करण्याचा प्रयत्न केला जातो

समाजकार्य शास्त्रामध्ये व्यक्ती हा सर्वोच्च केंद्रबिदु मानून व्यक्तीचे अधिकार, संधी, न्याय, स्वातंत्र, बंधुता, समानता, लोकशाही पध्दतीची अंमलबजावणी, मानवी मुल्ये इत्यादीचा विचार करुन व्यक्ती समस्यामुक्त व समाधानकारक जीवन जगण्यासाठी स्वत:ची मदत स्वत: करण्याइतपत सक्षम बनविण्याचे कार्य केल्या जाते, समाजकार्यच्या पध्दती, तंत्रे, कौशल्य, सल्ला व मार्गदर्शन इत्यादी वापर करुन व्यक्तीच्या समस्या सोडविण्यासाठी मध्यस्थी केल्या जाते.

सारांश: आत्महत्या ही एक स्वत:ला दु:ख व वेदना देवून कुटुंबाला किंवा आप्तस्वकियांना आयुष्यभर मानसिक वेदना देणारी कृती व दुर्घटना आहे. आत्महत्यांच्या घटना ऐकताच मन सुन्न व मनाला धक्का बसतो. मनुष्य हानी ही कधीही भरुन निघू शकत नाही. आत्महत्या करणाऱ्या व्यक्ती अनेक नातेसंबंधाशी जोडलेला असतो. एका अभ्यासानुसार आत्महत्याचा परिणाम कमीत कमी ६ व्यक्ती होऊन कुंटुंबावर त्याचा दिर्घकालीन परिणाम होत असतो. आज देशामध्ये आत्महत्या करण्याचे प्रमाण दिवसेंदिवस वाढत आहे. त्यामुळे केंद्र सरकारने आत्महत्या थांबविण्यासाठी राष्ट्रीय स्तरावर रणनीति तयार केलेली आहे. या रणनीतीद्वारे २०३० पर्यंत १० टक्के आत्महत्याचे प्रमाण कमी ठरविलेले आहे. महाराष्ट्रातील विदर्भ भागामध्ये शेतकऱ्यानी मोठया प्रमाणात आत्महत्या केलेल्या आहेत. आत्महत्या थांबविण्यासाठी मध्यप्रदेश शासनाने रणनीतिचे दस्ताऐवज तयार केलेला आहे.त्याचप्रमाणे इतर राज्यानेही आत्महत्या प्रतिबंध धोरण तयार गरजेचे आहे. आज आत्महत्येचे प्रतिबंध कार्य करण्यासाठी वैद्यकिय तज्ज्ञ, मानसोपचार तज्ज्ञ, अर्थशास्त्र तज्ज्ञ, शिक्षण तज्ज्ञ, पोलिस दल, आरोग्य सेवा, सामाजिक कार्यकर्ता या सर्वांनी संयुक्तपणे विचार मंथन करुन प्रतिबंधात्मक कार्य करणे आवश्यक आहे.

संदर्भ :

1. डॉ. आगलावे प्रदिप (२०१८) भारतातील सामाजिक समस्या, नागपूर: श्री साईनाथ प्रकाशन
2. डॉ. चाफेकर हिमानी (२०१३) विकार मनाचे, पुणे:उषा—अनिल प्रकाशन
3. डॉ. देशपांडे सविता (२०१४) मनोविकृतीशास्त्र,पुणे: निराली प्रकाशन
4. डॉ. गजभिये डी टी (२०१४)भारतातील सामाजिक समस्या नागपूर: यश प्रकाशन

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.4 No.4 Jan – Feb 2023

कामकाजी माताओं का अपने बच्चों के पोषण पर प्रभाव

प्रियंका सागर
शोधार्थी, गृहविज्ञान विभाग ललीत नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
दरभंगा— ८४६००४ (बिहार)
Corresponding Author- **प्रियंका सागर**
Email: onlypriyankasagar@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7648102

सार :.

अच्छा पोषण अच्छे पोशाक से कहीं अच्छा होता है। और यह बात एक माँ बेहतर समझती है की उसके बच्चों को उत्तम आहार ही उत्कृष्ट बनाएगा।

पहले संयुक्त परिवार हुआ करते थे जिसमें बच्चों का पालन—पोषण बहुत अच्छे तरिके से हो जाता था। बच्चों को देखने के लिए उनकी माता तो होती ही थी साथ दादा—दादी, चाचा—चाची सब भी होते थे। पर अब वक्त बदल गया है दम्पत्ति संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर रुख कर लिये हैं। परिवार में शिक्षित महिलाएं भी बाहर काम कर रही है। माता—पिता दोनों के बाहर काम करने से इसका असर सिधी तरह बच्चों के पोषण और मानसिक विकास पर पड़ रहा है। वस्तुत: माता—पिता के पास समयाभाव, अपनी दोहरी भूमिका निभा पाने में उनकी असमर्थता ने परिवार नामक संस्था को काफी हद तक विघटन के मुहाने पर लाकर खड़ा कर दिया है। प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य इस समस्या का अध्ययन करना एवं नव—उदारवादी सामाजिक व्यवस्था के कुछ सकारात्मक समाधानों जैसे—मातृत्व सहायता, महिलाओं को अतिरिक्त अवकाश, सामाजिक क्रिया के अन्य कई माध्यमों की सहायता से इस समस्या का समाधान करना है।

इन्हीं बदलती परिस्थितियों को ध्यान में रखकर शोधार्थिनी के द्वारा व्यक्तिगत प्रेक्षणों एवं अन्य कई आलेखों द्वारा पूर्व में किये गए अध्ययनों की समीक्षा व विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर दोहरे कामकाजी अभिभावकों एवं उनके बच्चों के माध्यम से पारिवारिक व्यवस्था का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना :.

वर्तमान समय में एकल परिवार ही पसंद किया जा रहा है दम्पतियों द्वारा। जिसमें माता—पिता और उनके बच्चे होते हैं। जिस तरह समय परिवर्तित हो रहा हे। उसमें महिलाओं को चौकले—बेलन के साथ—साथ कलम भी चलाना पर रहा है। महिलाएँ घर के चार दिवारी से बाहर निकल कर नौकरी कर रही हैं। माता—पिता दोनों को बाहर जा कर काम करने पर बच्चों के पोषण पर प्रभाव पड़ता है।

पहले संयुक्त परिवार होते थे पुरुष घर से बाहर जाकर काम करते थे और महिलाएँ घर में रहकर घर के रखरखाव पर और बच्चों पर ध्यान देती थी। बच्चों को बुजूर्गों का प्यार—दुलार भी मिलता था जिससे उनकी मानसिक विकास और सामाजीकरण भी होता था। स्त्री—पुरुष दोनों बाहर निकल कर अपनी आर्थिक सुरक्षा सृजित कर रहे हैं। इन परिस्थितियों ने समाज के एक महत्त्वपूर्ण अवयव बच्चों की मानसिक और शारिरीक विकास पर प्रभाव डाला है।

कामकाजी महिलाओं की दोहरी भूमिका:—

अध्ययन के दौरान यह पाया गया कि नौकरी पेशा महिलाएँ चाहे आर्थिक कारणों से नौकरी कर रही हो या स्वयं की इच्छा से किन्तु अधिकांश महिलाओं को घर और बाहर दोनों जगहों में अपनी भूमिका निर्वाह करनी पड़ती है। महिलाओं को बच्चों की देखभाल पति की देखभाल के साथ बाहर अपने काम को भी समय देना पड़ता है। समय के अभाव के कारण अधिकांशत: देखा गया है कि कामकाजी माताएँ अपने बच्चों पर विशेष ध्यान न दे पाती हैं और ना हि गृह कार्यों में जिस कारण उनके घरों में भी कलेश होता रहता है। जो कि बच्चों के मानसिक स्थिति पर गहरा असर करता है।

बच्चों के पोषण पर समय के अभाव का प्रभाव:—

बाहर कामकाजी माताओं की सबसे बड़ी समस्या समय की होती है। एक दिन में चौबीस घंटे होते हैं जिसमें उन्हें घर के सारे काम बच्चों की देखभाल पति की देखभाल, खुद के निन्द के साथ—साथ बाहर के अपने कार्य के लिए भी समय देना पड़ताहै। कामकाजी महिलाओं की दिनचर्या इतनी व्यस्त होती है कि समय का पता ही नहीं चलता। समय के अभाव के कारण वो अपने बच्चों के साथ ठीक से समय नहीं बिता पाती। बच्चों के भोजन पर ध्यान नहीं दे पाती। जल्दबाजी में जो नाश्ता खाना फटाफट बना वो बनाकर वो बाहर निकल जाती है अधिकांश बच्चे अकेलेपन के

कारण ठीक से भोजन ग्रहण नहीं करते जिसका दूषप्रभाव उनके शरीर पर पड़ता है।

आजकल फास्ट फुड का बहुत प्रचलन है। यह भोजन झटपट तैयार भी हो जाता है। समय के अभाव के कारण माताएँ अपने बच्चों को झटपट बनने वाला फास्ट फुड बनाकर दे देती है। और बच्चे भी बड़ी चाव के साथ खाते हैं। फास्ट फुड पोषण की दृष्टि से उचित भोजन नहीं होता। इस भोजन की अधिकता से बच्चों में अनेकों प्रकार के पेट के रोग हो सकते हैं। यह बच्चों के शारीरिक वृद्धि पर भी असर डालते हैं।

पारिवारिक सामंजस्य:—

कार्यरत महिलाएँ एवं उनके परिवारों के स्वरुपों के बारे में अनेक अध्ययनों से प्रमाणित हो चुका है कि संयुक्त परिवारों की तुलना में एकांकी परिवारों की वृद्धि हुई है। एकांकी परिवार में पति भी घर के कामों में अपनी पत्नी का हाथ बँटाता है। जिस कारण थोड़ा समय की बचत हो जाती है और वह समय माता—पिता अपने बच्चों को दे पाते हैं। पारिवारिक सामंजस्य से परिवार में उत्पन्न बड़ी—बड़ी मुश्किलें भी खत्म हो जाती है। इसलिए पूरी तरह यह कहना कि कामकाजी माता गृहस्थ जीवन में असफल होती है यह उचित नहीं है।

इस प्रकार पूर्व शोध पत्रों में मुख्यत: निम्न बातें देखी गयी :—

१. पति—पत्नी के आपसी सामंजस्य ने बच्चों के पालन—पोषण में सहायता की है।
२. माता—पिता दोनों के कामकाजी होने पर अतिरिक्त आय सुनिश्चित हुई जिसके कारण उनके बच्चों का पालन—पोषण बेहतर हो सका।
३. माता—पिता द्वारा बच्चों को कम समय देने के कारण उनमें अकेलेपन का भाव आया परिवार से लगाव कम हुआ है।
४. संयुक्त परिवार व्यवस्था में कामकाजी माता—पिता के बच्चों में अपने परिजनों से सहानुभूति मिलती है। तथा उनको अकेलेपन का अनुभव नहीं हुआ।

एकल परिवारों में जिसमें माता—पिता दोनों कामकाजी है सामान्यत: अपने बच्चों की देखभाल के लिए सहायक रखा जबकि संयुक्त परिवारों में ऐसा प्राय: कम देखा गया। बच्चों की देखभाल के लिए पति—पत्नी के बीच सामंजस्य ही कामकाजी माता—पिता में बच्चों के पालन—पोषणका मुख्य आधार देखा गया है। एकल परिवारों में कुछ दंपत्तियों में से पत्नियों ने बच्चों की देखभाल के लिए नौकरी छोड़ दी।

बच्चों की उचित देखभाल के अभाव में कामकाजी महिलाओं के अभाव में सर्वाधिक द्वन्द्व पाया गया। व्यक्तिगत देखभाल की आवश्यकता हो तथा घर में कोई अन्य सदस्य न हो। उन्हें बच्चों को नौकर या आया के संरक्षण में छोड़ना पड़ता है। बच्चों की उचित देखभाल के सम्बन्ध में एकांकी परिवार की महिलाएँ अधिक असुंष्ट एवं चिन्तित पाई गई। किन्तु जिन महिलाओं के बच्चे बड़े हो गये वे अपने को अधिकतर स्वावलम्बी एवं आत्मनिर्भर ही समझते हैं। कुछ ही अपने को उपेक्षणीय मानते हैं। अत: यहाँ हम आशा रानी बोहरा से सहमति पाते हैं— नौकरी से बच्चों में आत्मनिर्भरता एवं आत्म विश्वास की भावना पनपती है।''

कामकाजी माताएं यह भी मानती है कि बच्चों में स्नेह जताने या अच्छी शिक्षा देने के लिए अधिक समय की जरूरत नहीं है। आप कितना समय देती हैं इसका नहीं, कैसे देती है, इसका महत्त्व है। अगर ऐसा होता तो घर में रहने वाली सभी माताओं के बच्चे अधिक सुसंस्कृत एवं होशियार ही होते। कामकाजी माताएँ कम समय होने पर भी बच्चों की पढ़ाई लिखाई का पूरा ध्यान रखती हैं। कामकाजी परिवारों में अधिकांश समस्या छोटे बच्चों के पोषण और मानसिकता में देखा गया है। बच्चे खुद को अकेला महसूस करते हैं। जिस कारण उनमें हिंसा की भी प्रवृति उत्पन्न हो जाती है। वह माता—पिता से दूर और फोन, टी.भी के समीप ज्यादा होते हैं। इसके विपरीत संयुक्त परिवारों में यह घटना कम देखने को मिलती है।

उपयुक्त प्राप्त तथ्यों से कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य निकलकर आते हैं। जिससे हम इस प्रकार देख सकते हैं।

१. बच्चों की देखभाल करना संयुक्त परिवारों की अपेक्षा एकल परिवारों में ज्यादा कठिन रहता है।
२. बच्चों की देखभाल के लिए एकल परिवार के कामकाजी अभिभावकों ने सामान्यत: सहायक रखे है।।
३. बच्चों के दादा—दादी, चाचा—चाची का सहयोग संयुक्त परिवारों में ज्यादा मिलता है।
४. एकल परिवारों में बच्चों की देखभाल के मध्य सामंजस्य है।

इस तरह पूर्व अध्ययनों एवं इस आलेख के माध्यम से यह पता चलता है कि समाज में नयी बदलती सामाजिक—आर्थिक परिस्थितियों में बच्चों की देखभाल एक नवीन चुनौती लेकर खड़ी हुई है।। यह समस्या केवल बच्चों की पालन—पोषण तक ही सीमित नहीं है। यह इन बच्चों के स्वस्थ शारीरिक—मानसिक विकास, उनके युवा होते व्यक्तित्व के सद्मार्गी होने के साथ परिवार एवं संतुलित समाज के समक्ष भी चुनौती के रूप में देखा जा रहा है।

निष्कर्ष :—

निष्कर्षत: : दोहरे कामकाजी अभिभावकों वाले एकल परिवारों के माता—पिता एवं उनके बच्चों की देखभाल, पालन—पोषण एक महत्त्वपूर्ण

चुनौती के रूप में उभर कर दिखाई पड़ रही है। तथा इसके निवारन के लिए परिवार में सामंजस्य व्यवस्था अपनानी चाहिए। कामकाजी माताओं को समय–समय पर अवकाश की व्यवस्था होनी चाहिए। कामकाजी माता–पिता को जो भी समय अपने बच्चों को देना चाहिए उसमें वो बच्चों को सामाजिक ज्ञान और अच्छी–अच्छी बातें बतानी चाहिए। माताओं को बच्चों के भोजन पर विशेष ध्यान देना चाहिए कि जो भोजन वो बच्चों को दे रही है उसमें कितनी पोषण तत्त्व किस मात्रा में है। इन सभी बिन्दुओं पर ध्यान देना जरूरी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

१. रानी काला, १९७६, रोल कॉफ्लिक्ट इन वर्किंग वूमेन।

२. कोनानटम्बिगी, रजनी एम २००७ डे केयर फार यंग चिल्ड्रेन इन इंडिया इस्यू' एण्ड प्रॉस्पेक्टस।

३. कपूर, रामा, १९६९, 'रोल कान्फ्लिक्ट एण्ड कॉपिंग, बिहेवियर ऑफ मैरिड वार्किंग वूमने पार्टिनिका जे० सोशल साइन्स एण्ड ह्यूमन, वाल्यूम ३, पृ० ९७–१०४

४. राजाधयाक्क्षा, यू० अखन, २००९ वर्क फेमिली कॉनफ्लिक्ट इन टर्म ऑफ कमपाराटिव स्टडी औफ मेन एण्ड वूमेन, डिजरटेशन एकेडमी ऑफ मैंनेजमेंट एननुअंल मीटिंग।

५. वाल्क रेइमेरा एण्उ श्रीनिवासन, वासन्थी, २०११, ''वर्क फैमिली बैलेन्स ऑफ इंडियन सॉफ्टवेयर प्रोफेसर'' आई०आई० बी०एम० मैंनेजमेंट रिव्यूय ०३.२०११

६. कॉजी मर्गेक्स, २०१२ ''कान्फ्लिक्ट रोल्स: बैलेसिंग फेमिली एण्ड प्रोफेसनल लाइफ ए चैलेंज ऑफ वर्किंग वूमेन, मास्टर थेसिस स्प्रिंग २०१२, लिनेयूस यूनिवर्सिटी स्वीडन।

७. अहमद, अमीनाह २००८, ''जॉब फेमिली एण्ड इन्डभ्व्यूजवल फैक्टर्स' एस प्रीडिक्टर्स'' जनरल ऑफ ह्यमन रिसोर्स एण्ड एडल्ट लर्निंग, वाल्यूम प, पू० १३० ।

८. राथो, स्नेहनी मेडली २०१२, दी सिक रोल कान्फ्लिक्ट'' सोशियोलॉजी इन फोकस।

९. आशारानी वोहरा : भारतीय नारी : अस्मिता और अधिकार, प्रथम संस्करण, १९८६

१०.कपूर, प्रमिला, भारत में विवाह एवं कामकाजी महिलाएं विकास पब्लिकेशन्स, १९७०

११.सिंह, बी०एन० आधुनिकता एवं नारी सशक्तिकरण, रावत पब्लिकेशन्स, २०१०

१२. माथुर, दीपा : वुमन, फैमिली एण्ड वर्क, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, १९९२

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.4 No.4 Jan – Feb 2023

बालकों के शैक्षणिक विकास में सामाजिक—आर्थिक कारकों की भूमिका

सुलोचना कुमारी
शोधार्थी गृह विज्ञान विभाग एल०एन०एम०यू०, दरभंगा।
***Corresponding Author-* सुलोचना कुमारी**
Email: sulochnakumari324@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7648108

सारांश :—
बच्चों के शैक्षणिक विकास में सामाजिक—आर्थिक वातावरण का बहुत बड़ा योगदान होता है। आज हमारा देश काफी उन्नति कर चुका है, परन्तु आज भी यहाँ के समाज में बच्चों को सामाजिक आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। एक योग्य शिक्षक शैक्षणिक विकास के कारणों को बालक के वातावारण में ढूंढ़ते हैं इसका तात्पर्य यह नहीं है कि शैक्षणिक विकास में अनुवांशिकता का प्रभाव किसी तरह से कम होता है। सामान्य रूप से बालक अनुवांशिकता से ही बुद्धि का एक विशेष स्तर तथा विभिन्न मानसिक योग्यताएँ लेकर उत्पन्न होता है। इनमें अच्छा वातावरण देकर केवल एक सीमा तक ही उन्नति की जा सकती है। परन्तु शिक्षा का प्रयोजन वातावरण में सुधार कर के बालक के शैक्षणिक विकास को प्रोत्साहित करना है। भारत के आर्थिक विकास में शिक्षा का योगदान महत्वपूर्ण है, हालांकि अत्यंत सूक्ष्म रूप से इसे आकलित नहीं किया गया है तथापि शिक्षा का सामाजिक विकास में योगदान सार्थक पाया गया। जन्म दर, शिशु मृत्यु दर, निर्धनता में कमी, आयु प्रत्याशा, जीवन स्तर तथा आय वितरण में सुधार शिक्षा के कारण संभव हो रहा है। आर्थिक विकास पर विशिष्ट मानवीय पूँजी के संख्यात्मक प्रभाव से संबंधित अत्यंत कम आनुभविक अध्ययन उपलब्ध हैं, फिर भी यह कहा जा सकता है कि मानवीय पूँजी में निवेश की प्रत्याय दरें और अधिक ऊँची हो सकती हैं, यदि (अ) नियोजक, शिक्षा की गुणवत्ता पर गंभीरतापूर्वक ध्यान दें, तथा (ब) शैक्षणिक नियोजन को आर्थिक नियोजन, निर्धनता उन्मूलन तथा आर्थिक विकास के साथ समायोजित किया जाए। यह पाया गया कि भारत में अभी भी मानवीय पूँजी में निवेश से पर्याप्त लाभ प्राप्त नहीं किए गए हैं तथा भविष्य में उन्हें प्राप्त करने की पर्याप्त संभावना है।

कुंजी :— शैक्षणिक विकास, समाज, अर्थव्यवस्था, वातावरण, योग्यता।

प्रस्तावना :— शिक्षा और समाज में गहरा संबंध है। एक ओर शिक्षा, परम्परा की धरोहर को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाती है और इस तरह संस्कृति की निरंतरता बनाए रखने में सहायक होती है, दूसरी ओर पारिस्थितिकी परिवर्तन उसे अनुकूलन का साधन बनने की प्रेरणा देते हैं। अपने इस पक्ष में शिक्षा, परिवर्तन का माध्यम बनती है। यह परिवर्तन की दिशा—निर्धारित कर उसके वैकल्पिक प्रतिरूप प्रस्तुत करती है, प्राविधिक साधन जुटाती है और नवाचारों के लिए भावभूमि निर्मित करती है। शिक्षा के ये दोनों प्रकार्य महत्त्पूर्ण हैं, क्योंकि परंपरा की उपेक्षा यदि समाज को धुरीहीन बनाती है तो परिवर्तन की अस्वीकृति या मंदगति सांस्कृतिक पक्षाघात प्रमाणित हो सकती है। वैकल्पिक भविष्य की परिकल्पनाओं को साकार करने के लिए इन दोनों प्रकार्यों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है।

गर्भावस्था से ही बच्चों का मानसिक तथा शारीरिक विकास आरंभ हो जाता है। इस अवस्था में गर्भवती को उचित पोषण देकर बच्चें के मानसिक स्तर को उन्नत किया जा सकता है। मानसिक विकास की गति में भी व्यक्तिगत विभिन्नताएं पायी जाती है। साथ में इसके आस—पास के वातावरण के कारण भी उसके शैक्षणिक विकास में विभिन्नताएं पायी जाती है। स्वस्थ पोषण एवं स्वस्थ वातावरण से बच्चों का विकास अच्छा हो सकता है। इस संदर्भ में अरस्तू का कथन है कि "स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है"। पी. डी. पाठक के अनुसार उच्च सामाजिक स्थिति वाले परिवार के बच्चे की बुद्धि की मौखिक और लिखित परीक्षाओं में निम्न सामाजिक स्थिति वाले परिवार के बच्चे की बुद्धि की मौखिक और लिखित परीक्षाओं मे निम्न विकास

को बहुत हद तक प्रभावित करती है। अगर बच्चों के सही पोषण और सामाजिक आर्थिक पहलुओं पर ध्यान दिया जाए तो उनके विकास को सही दिशा मिलेगी। अत: कहा जा सकता है कि बच्चों के शैक्षणिक विकास की समस्या विकास का महत्वपूर्ण पहलू है जो सीधे—सीधे देश व समाज के विकास से संबंधित है। मनोवैज्ञानिक द्वारा पूर्व में भी बालकों के शैक्षणिक विकास के क्रम में सामाजिक आर्थिक प्रभावों का अध्ययन किया गया है एवं अन्तर भी दिखाया गया है। वर्त्तमान मे अच्छे सामाजिक—आर्थिक स्तर के परिवारों में बच्चों के शैक्षणिक विकास में समस्याएँ देखी जा रही है।

समाज का प्रमुख आधार मनुष्य होता है। जब तक मनुष्य को शिक्षा के माध्यम से उसकी अन्तर्निहित शक्तियों से अवगत न कराया जाये तब तक उसका शारीरिक, मानसिक, नैतिक आध्यात्मिक विकास सम्भव नहीं है। बालक के सर्वांगीण विकास के अभाव में समाज की नींव एवं व्यवस्था सुदृढ़ नहीं हो सकती क्योंकि शिक्षा जीवन को व्यवहारिक धरातल प्रदान करती है और प्रत्येक मनुष्य के जीवन की सच्चाइयों को उजागर करती है। प्रत्येक व्यक्ति का प्रसंग आते ही सदियों से उपेक्षित, शोषित जातियों की ओर ध्यान जाना स्वाभाविक है जिसने जाति भेद की समस्या को जन्म दिया। जाति भेद की समस्या का सूत्रपात वैदिक कालीन समाज व्यवस्था से प्रारम्भ होता है। वर्ण व्यवस्था का जब कोई नाम लेता है तो वेदों, पुराणों, स्मृतियों में अंकित सीमित अधिकारों की ओर ध्यान अनायास ही आकर्षित हो जाता है क्योंकि मानव की समस्त स्वाभाविक शक्तियों का पूर्ण, प्रगतिशील विकास ही शिक्षा है। यदि शिक्षा के गौरवपूर्ण इतिहास पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होता है कि भारतीय शिक्षा का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है इसकी प्राचीनता एवं विद्वता का प्रमाण मनुस्मृति से ज्ञात है।

हमारे दैनिक जीवन के हर कार्य को करने के लिए किसी न किसी प्रकार के शिक्षा और ज्ञान की आवश्यकता होती है। अत: हमारे जीवन में इनका इस्तेमाल हर रोज होता है। यह हो सकता है कि उनके स्वरूपों को हम नहीं पहचानते हों, क्योंकि उनका प्रयोग हम अलग—अलग नहीं करते हैं। इस इकाई को प्रभावी तौर से समझने के संदर्भ में आपके उन अनुभवों का विशेष महत्व है।

शिक्षा शब्द का बहुत ही सीधा—सादा और सरल अर्थ है— सीखना, सिखाना। परंतु अपने लक्ष्यों, सीखने—सिखाने की प्रक्रियाओं, कार्यों, अपेक्षाओं, प्रभावों और वास्तविकताओं के परिप्रेक्ष्य में यह एक बहुत ही व्यापक और साथ ही, जटिल प्रक्रिया है। इसे एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया माना जाता है, परन्तु इसके उद्देश्यों का स्वरूप इतना उलझा हुआ और अस्पष्ट रहता है कि अंतत: यह एक उद्देश्यहीन प्रक्रिया बन कर रह जाती है। जहां इससे एक ओर इतिहास की धरोहर को संभाले रखने की अपेक्षा की जाती है, वहीं दूसरी ओर, माना जाता है कि यह वर्तमान का पथ आलोकित करे परन्तु इसकी दृष्टि किसी अज्ञात पथ की ओर हो, यानि इसका स्वरूप भविष्यद्रष्टा हो। इसी प्रकार जहां एक ओर इसे व्यक्ति के विकास के सशक्त माध्यम के रूप में देखा जाता है, वहीं सामाजिक विकास का साधन भी यही माना जाता है। एक ओर इसे अपने आस पास की भौगोलिक परिस्थितियों से जोड़ने का प्रयास किया जाता है, तो दूसरी ओर, अंतर्राष्ट्रीय समझ, सहयोग व शांति की जिम्मेदारी भी इसी के कंधे पर रहता है।

वस्तुत: शिक्षा के क्षेत्र की दिशाएं व धाराएं इतनी व्यापक एवं बहु आयामी हैं कि इन्हें किसी एक दिशा व धारा में बांधना अथवा परिभाषित करना कठिन है। प्रत्येक समाज अपनी अपेक्षाओं, अपने लक्ष्यों अथवा जीवन—दर्शन के अनुसार इसे परिभाषित करता है। इस प्रकार मानव की प्रकृति, क्षमताओं अथवा योग्यताओं के स्वरूप अथवा उनसे की जाने वाली अपेक्षाओं के अनुकूल भी इसे परिभाषित करने का प्रयास किया जाता है।

कोई शिक्षा को अत्यंत व्यापक दृष्टि से देखता है, तो कोई अत्यंत संकुचित दृष्टिकोण से वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति जीवन के उद्देश्यों को अपने दृष्टिकोण से देखने का प्रयास करता है। उसका जीवन के प्रति यह दृष्टिकोण अपने अनुभवों पर निर्भर करता है। शिक्षा जीवन के इन उद्देश्यों को प्राप्त करने का साधन माना जाता है। मनुष्य जन्म से अंत तक कुछ न कुछ सीखता ही नहीं सिखाता भी रहता है। वह प्रतिक्षण नए—नए अनुभव प्राप्त करता व करवाता रहता है जिससे उसका दिन—प्रतिदिन का व्यवहार भी प्रभावित होता रहता है। उसका यह सीखना व सिखाना विभिन्न समूहों, उत्सवों,

पत्र—पत्रिकाओं, दूरदर्शन आदि से अनौपचारिक रूप में होता है।

इस प्रकार सीखना व सिखाना अनौपचारिक सीखना व सिखाना कहलाता है तथा यही शिक्षा का व्यापक अथवा विस्तृत अर्थ है। जब बच्चा औपचारिक कक्षाओं में निश्चित समय में निश्चित पाठ्यक्रम को पढ़कर अनेक परीक्षाओं को उत्तीर्ण करके सीखता है, तब उसे औपचारिक शिक्षा कहते हैं। इसे शिक्षा का संकुचित अर्थ माना जाता है।

निष्कर्ष :— यहां यह भी स्पष्ट है कि शिक्षा, समाज में चलने वाली समाज के लिए व समाज के द्वारा ही निर्धारित होने वाली प्रक्रिया है। और, समाज परिवर्तनशील एवं गतिशील है। अत: शिक्षा भी एक गतिशील व परिवर्तनशील प्रक्रिया मानी जाती है। यही कारण है कि शिक्षा को किसी अंतिम रूप में परिभाषित नहीं किया जा सकता। तथापि कुछ सामान्य प्रवृतियों के आधार पर इसे परिभाषित किया गया है। ये परिभाषाएं वैयक्तिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, आदि दृष्टियों से भिन्न—भिन्न संदर्भो में की गई है। दूसरे शब्दों में इसे इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि सामान्य तौर पर शिक्षा की व्याख्या अथवा स्पष्टता अपने—अपने अनुभवों पर आधारित विभिन्न चिंतनधाराओं, विचारधाराओं के परिप्रेक्ष्य में की जाती रही है। एक ही समय में अलग—अलग विचारधाराओं के कारण शिक्षा के स्वरूप को निश्चितरूप से एक बंधे—बंधाए ढांचे में नहीं बांधा जा सकता। यही कारण है कि विभिन्न विचारकों के अनुसार शिक्षा को किसी एक निश्चित परिभाषा में नहीं ढाला जा सकता अपितु अलग—अलग प्रकार से इसकी व्याख्या भी अलग—अलग परिप्रेक्ष्यों में अनेक प्रकार से की गई है। कहीं इसे शब्दार्थ की दृष्टि से, तो कहीं इसे लक्ष्यों, कार्यो, प्रक्रियाओं, अथवा सीमाओं की दृष्टि से स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इस सबके बाद भी इतना सा लगभग निश्चित है कि यह एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है। यद्यपि इसका कोई अंतिम रूप निर्धारित नहीं किया जा सकता तथापि प्रत्येक समाज अपनी भावी पीढ़ी व समाज के विकास के परिप्रेक्ष्य में इसका रूप निर्धारित करते रहने का प्रयास निरन्तर करते रहता है।

सम्पूर्ण जनसंख्या को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है— उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग एवं निम्न वर्ग। उच्च वर्ग के अन्तर्गत संपन्न जमींदार सेठ—साहुकार बिना कमाए बड़ी संपत्ति और धन के मालिक इत्यादि होते हैं मध्यम वर्ग में नौकरी पेशा या व्यवसायी आते हैं जिनकी आमदनी से किसी प्रकार खर्च चलता है। निम्न वर्ग में ऐसे लोग आते हैं जो कठिन शारीरिक श्रम द्वारा अपर्याप्त जीविका प्राप्त करते हैं। प्रत्येक वर्ग में ऊँचे नीचे लोग हो सकते हैं। अभिभावक के सामाजिक—आर्थिक स्तर का व्यापक प्रभाव बच्चों के व्यक्तित्व पर पड़ता है। ड्कर एवं रेमर्स (१९५२) ने उच्च विद्यालय के १००० विधार्थियों के व्यक्तित्व संबंधी समस्याओं को निर्धारित किया और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि उच्च आर्थिक स्तर के विधार्थियों की अपेक्षा निम्न आर्थिक स्तर के विधार्थियों की ५० प्रतिशत व्यवहार समस्याएँ अधिक थी। सिम्स (१९५४) ने उच्च विद्यालय और महाविद्यालय के विधार्थियों से पूछा कि वे मध्यवर्ग के हैं या श्रमिकवर्ग के हैं। विधार्थियों द्वारा दी गई रिपोर्ट के आधार पर ही उनका वर्गीकरण किया, फिर उनकी सामंजस्य समस्याओं की जाँच की। देखा गया कि श्रमिक वर्ग के विधार्थियों में सामजस्य समस्या अधिक थी। रिपिंगकर (१९३८) के अनुसार प्रत्येक सामाजिक आर्थिक वर्ग में बाल—पोषण पद्धति एक विशेष ढंग की होती है। निम्नवर्ग में प्रधानत: स्तनपान द्वारा बाल—पोषण होता है, जबकि ऊँचे वर्ग में बोतल से दूध पिलाकर बच्चे का पोषण किया जाता है। निम्न वर्ग में ऊँचे वर्ग की अपेक्षा शौच प्रशिक्षण सहज और आसान होता है निम्न वर्गीय माताएँ अपने बच्चों के साथ उतना समय नहीं देती हैं। जितना ऊँचे वर्ग की माताएँ देती हैं ये सभी भेद व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। सिर्स मेकोबी एवं लेबिन (१९५७) के अध्ययन से पता चलता है कि श्रमिकवर्ग की माताएँ अपने बच्चों को अधिक प्रतिबन्धों में जकड़ती हैं और उच्चवर्गीय माताएँ अधिक अनुज्ञापक (चमतउपेपअम) होती हैं। रिजेन (१९५६) ने देखा कि मध्य और उच्च वर्ग के बच्चों की आवश्यकता निम्नवर्गीय बच्चों से ऊँची होती है। इसलिए वे समाज में अपना स्थान क्रमश: ऊँचा करते जाते हैं।

बालक समाज में रहता है जिसके मानदण्ड सम्बन्ध, परम्पराएं, मान्यताएं आदि अप्रत्यक्ष रूप से बालक के विकास को प्रभावित करते हैं। बालक जिस प्रकार के समाज में रहता है उसका सामाजिक विकास वैसा ही होता है। साधारणत: उच्चवर्गीय परिवार में बालकों की रूचियाँ विस्तृत होती है क्योंकि उनके पास संसाधन अधिक होने से विचारों एवं

गतिविधियों को विस्तारित करने के अवसर अधिक उपलब्ध होते हैं जबकि एक गरीब परिवार जो कि शिक्षा के प्रति अति सम्मान रखता है अपने बच्चों को अधिगम के अवसर देने के लिये त्याग भी कर सकता है उनके बच्चों की रूचियाँ संकुचित होती है। सामाजिक—आर्थिक स्थिति उनकी शैक्षिक उपलब्धि में बाधक साबित होती है।

पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, अभिभावकों की जागरूकता ये सभी विद्यार्थी को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों रूपों से उसके शिक्षण कार्य को प्रभावित करता है तथा शैक्षिक अभिप्रेरणा से विद्यार्थी और उनकी उपलब्धि प्रभावित होती है। इन सभी के द्वारा उनके जीवन काल में अनेक प्रकार की उपलब्धियाँ प्राप्त की जाती हैं वह शैक्षिक उपलब्धि कहलाती है। शैक्षिक उपलब्धि को मुख्य रूप से विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त अंकों में आंका जा सकता है। यह विद्यार्थियों की स्वयं की योग्यताओं पारिवारिक वातावरण, सामाजिक—आर्थिक स्थिति, शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा अभिभावकों की जागरूकता से प्रभावित होती है।

संदर्भ सूची :—

१. अरोड़ा, रीता — "शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी", शिक्षा प्रकाशन, जयपुर, २००५

२. अग्रवाल, डॉ. संध्या — "शिक्षा मनोविज्ञान", विजय प्रकाशन मंदिर, वाराणसी, संस्करण—२००५

३. आहुजा, राम — "सामाजिक अनुसंधान", रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, २००७

४. अग्निहोत्री, आर. — "आधुनिक भारतीय शिक्षा संस्थाएँ और समाधान", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, १९८७

५. बेस्ट जान डब्ल्यू. — "रिसर्च इन एजुकेशन", दिल्ली प्रिंटिंग्स हॉल प्रा. लि., १९६३

६. भटनागर, ए.बी., मीनाक्षी, अनुराग — "शिक्षण अधिगम का मनोविज्ञान", आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ, २००५

७. भटनागर, आर.पी. एवं अन्य — "शिक्षा अनुसंधान", इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ

८. भटनागर, सुरेश — "अधिगम एवं विकास के मनोसामाजिक आधार", इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, २००५

९. भाग्य, निर्मला — "शिक्षा में मूल्यांकन के सिद्धांत और प्रविधियां", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

१०. भार्गव, महेश — "आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन", हर प्रसाद भार्गव शैक्षिक प्रकाशन, आगरा, १९९२

११. हैनरी ई. गैरेट — "शिक्षा व मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग", कल्याणी पब्लिशर्स, पंजाब

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.4 No.4 Jan – Feb 2023

"गणपतरावजी देशमुख यांचे दुष्काळी भागातील योगदान - एक विकासात्मक अभ्यास"

Dr. Ghantewad.M.T[1] Mr.Wakade Ashok Kisan[2]
[1] (Dept.of Political Science,Research Guide V.K.M. Solapur)
[2](SET, Political Science)
Corresponding Author- **Mr.Wakade Ashok Kisan**
Email: ashokwakade23@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7648119

प्रस्तावना

महाराष्ट्र राज्याची निर्मिती 1 मे 1960 रोजी झाली त्याअगोदर महाराष्ट्राचा फारसा विकास झालेला नव्हता महाराष्ट्र राज्याचा बरासा भाग हा दुष्काळी, निरक्षर,बेरोजगारी,दळणवळणची साधन नसणारा दुर्गम होता.महाराष्ट्राच्या विकासाला चालना देण्यासाठी शेतीला मोठ्या प्रमाणात प्राधान्य दिले पाहिजे .शेतीला हक्काचे पाणी नाविन्यपूर्ण तंत्रज्ञान जैविक शेती सरकारचे अनुदान मोठ्या प्रमाणात मिळाले पाहिजे. त्याचबरोबर ज्या घटकांना अनुदान पोहोचवण्यासाठी सरकारचे अंमलबजावणी करणारी यंत्रणा महत्त्वाचे असते ती सक्षम असणं गरजेचे आहे. महाराष्ट्र राज्याच्या विकासामध्ये अनेक दिग्गज थोर राजकारणी,समाज सुधारकांचे, शिक्षण तज्ञांचे योगदान आहे. महाराष्ट्राचा विकास हवा असेल तर तेथील शेतकऱ्यांनी पावसाच्या पाण्यावर अवलंबून न राहता पाणी साठवून ठेवून शेती केली पाहिजे. ज्या भागांमध्ये मोठ्या प्रमाणात पाऊस पडतो त्या भागातील पाणी दुष्काळग्रस्त पट्ट्यामध्ये वळवले पाहिजे व शेतीला पाणी मिळवून दिले पाहिजे .त्याचबरोबर शेतीला जोडधंदा म्हणून मोठ्या प्रमाणात उद्योगधंदे उभे केले पाहिजे. उदा. शेळीपालन, कुकूटपालन .शिवाराला पाणी मिळाले तर शेती फुलेल आणि देश अन्नधान्य बाबी बाबतीत स्वयंपूर्ण होईल हे ओळखून सांगोला तालुक्यामध्ये जलक्रांतीचे महामेरू शेतकरी कामगार पक्षाचे नेते भाई गणपतराव देशमुख यांनी उभ्या आयुष्यामध्ये शेतीसाठी पाणी व दुष्काळग्रस्त भागांसाठी काम केले कुटुंबामध्ये कोणताही राजकीय वारसा नसताना राजकारणामध्ये शून्यातून विश्व निर्माण केले, एकाच पक्षांमध्ये, एकाच मतदारसंघांमध्ये, एकाच झेंड्याखाली, लोकप्रतिनिधित्व करण्याचे भाग्य भाई गणपतराव देशमुख यांना लाभले .1962 ते 2019 यापर्यंत भाई गणपतराव देशमुख यांनी सांगोला विधानसभा मतदारसंघांमध्ये लोकप्रतिनिधित्व केले. 1962 ते 2019 पर्यंत दोन अपवाद वगळता त्यांनी सर्व मुख्यमंत्र्यांबरोबर काम केले आहे. त्यांचं अनेक पक्षाबरोबर सलोख्याचे संबंध होते ,सांगोला तालुक्यामध्ये सामाजिक, आर्थिक ,धार्मिक ऐक्य राखण्याचे काम भाई गणपतराव देशमुख यांनी मोठ्या प्रमाणामध्ये केले.त्यांनी कधी जातीय राजकारणाला थारा दिला नाही, समाजातील सर्व स्तरांना एकत्र घेऊन त्यांनी राजकारण केलं

उद्देश

1) गणपतरावजी देशमुख यांचा दुष्काळग्रस्त भागातील योजनांचा अभ्यास करणे.

2) कायमचा दुष्काळ हटविण्यासाठी गणपतरावजी देशमुख यांचे जलसिंचन विषयक विचार अभ्यासणे .

3) महाराष्ट्रातील विविध पाण्याची स्रोत धरणे यांची माहिती घेणे.

4) दुष्काळग्रस्त भागांसाठी पाण्यांच्या योजनांचा अभ्यास करणे उदाहरणार्थ टेंभू - म्हैसाळ योजना .

5) सिंचन क्षेत्रात ची वाढ करणे व विकास करणे यासंदर्भात सविस्तर अभ्यास करणे.

जलक्रांतीचे जनक - भाई गणपतरावजी देशमुख.

नेतृत्व हे प्रसंगापेक्षा परिस्थिती सापेक्ष असते .परिस्थिती बदलली काळ पालटला आणि पिढी बदलली की नेतृत्वाचे पार्टी फिरते मोठ्या नेत्यांच्या लोकप्रियता ओहोटी लागते .

पण नियमालाही काही अपवाद असतातच अर्ध्या शतकाहूनही अधिक काळ शेतकरी कामगार पक्ष यासारख्या विरोधी पक्षात राहून श्रमजीवी व कष्टकरी समाजाचे परिवर्तन करण्याचे ध्येय उराशी बाळगून सांगोला सारख्या दुष्काळी भागामध्ये तीन पिढ्यांचे नेतृत्व करणे सोपे नाही, पण माननीय गणपतराव देशमुख यांनी ही गोष्ट शक्य केली सतत 55 वर्ष त्यांची जनतेवर व जनतेची त्यांच्यावर असे प्रेम अबाधित राहिले आहे.गणपतराव देशमुख यांनी आपल्या सामाजिक कार्याची सुरुवात बुद्धेहाळ तालुका सांगोला तलावातील शेतकऱ्यांच्या 16 एकर जमीन आणि 250 घरे पाण्याखाली गेली होती, त्यांना न्याय मिळवून देताना केली. तोच त्यांच्या विश्वासू राजकारणाचा केंद्रबिंदू ठरला एक सच्चा नेता म्हणून 1962 मध्ये शेकाप च्या वतीने त्यांनी सांगोला तालुका विधानसभा निवडणूक लढवून जिंकली सुद्धा त्याविषयी ते परत स्वतः म्हणतात राजकारणात प्रवेशानंतर सुरुवातीपासून सरकारचा पैसा म्हणजे जनतेचा पैसा असतो ही त्यांची धारणा राहिली आहे. जनतेने राजकारण्यांना विश्वासाने निवडून दिले आहे त्यामुळे जनतेच्या पैशाची उधळपट्टी करणे चुकीच आहे असे ते नेहमी त्याच्या राजकीय आयुष्यामध्ये निकष पाळत आले आहेत हा समाजवादी व लोक हितार्थ दृष्टिकोन त्यांनी कायमस्वरूपी त्यांच्या व्यक्तिगत जीवनामध्ये अवलंबला आज शेतकऱ्यांच्या पोटी जन्माला आलेली माणसे राज्य कारभार करू लागले आहेत, पण शेतकरी पायाभूत सुविधा पासून खूपच दूर राहिला आहे. विधानसभेत शेतकरी आत्महत्या ,अपूर्ण सिंचन प्रकल्प, रोजगार हमी योजना ,वीजपुरवठा, निराधार योजना, दलित वस्ती सुधारणा योजना, महिला सक्षमीकरण, सुशिक्षित बेरोजगार आधी या विषयावर गांभीर्यपूर्वक आबासाहेब भाष्य करत असत.2014 ते 2019 या विधानसभेच्या कालखंडामध्ये महाराष्ट्राच्या विधानसभेतील सर्वात बुजुर्ग अनुभवी निष्कलंक चारित्र्यवान निस्वार्थी आणि आदरणीय असे लोकप्रतिनिधी राहिलेले आहेत .52 वर्षाहून अधिक काळ राजकारणात समाजकारणात राहूनही लोकशाही प्रणालीत पुरोगामी वैचारिक प्रगब्लेतेन जनतेचे प्रतिनिधित्व करून लोकशाहीची तत्वे तंतोतंत आचरणात आणणारे महाराष्ट्राच्या राजकारणात स्वतंत्र राजमुद्रा उमटवणारे सांगोलाचे एकमेव द्वितीय कार्यक्षम व विश्वविक्रमी आमदार म्हणजे गणपतराव देशमुख उर्फ आबासाहेब होय .हरी किशन सुरजीत यांच्या तोडीचा महाराष्ट्रातील नेता म्हणजे भाई गणपतराव देशमुख होय. राजकारणाचा ते एक आगळ वेगळं विद्यापीठ होतो. शब्दापेक्षा कृतीला अधिक महत्त्व देऊन पर्वताप्राय महान कार्य करूनही त्याचे श्रेय मात्र गणपतरावजी नेहमी पक्षाला व सामान्य कष्टकरी देत असत म्हणून राजा कांदळकर गणपतरावांना प्रस्थापित विरुद्ध नेता अँटीलिस्ट असे सार्थ संबोधतात, अशा महान नेत्यांचा जन्म अण्णासाहेब व कृष्णाबाई देशमुख या वारकरी संप्रदायाची परंपरा असणाऱ्या सुसंस्कृत दांपत्याच्या पोटी 10 ऑगस्ट 1927 रोजी नजीक पिंपरी तालुका मोहोळ जिल्हा सोलापूर येथे झाला.त्यांचे मूळ गाव पेनुर हे मोहोळ तालुक्यातच आहे. त्यांना विठाबाई रतनबाई तानुबाई जनाबाई रुक्मिणी व अनुसया अशा सख्ख्या सहा व दोन चुलत अशा आठ बहिणी होत्य. पाणी ही नैसर्गिक संपत्ती आहे तशी ती राष्ट्रीय संपत्ती आहे, पाणी जीवनाचा अनमोल आणि अविभाज्य घटक आहे .म्हणून या विषयाकडे डोळसपणे पाहायला हवी. याविषयी जागतिक जलतज्ञ माधवराव चितळे म्हणतात "गेल्या पाच दशकांमध्ये देशांतर्गत जागतिक पातळीवर अनेक बदल घडून आले आहेत, महाराष्ट्राची लोकसंख्या तिप्पटीने वाढली आहे पण तरीही याच काळात महाराष्ट्राचे जीवनमान आठ पटीने अधिक उंचावले आहे, निसर्गचक्रात उपलब्ध असणारे सरासरी पाणी मात्र तेवढेच आहे, त्यामुळे समाजाचे पाण्याची असलेले नाते खूप बदलले आहे, म्हणून पाण्याच्या संदर्भातील व्यवहाराची नवीन हितकारक व्यवस्था उदयाला आणणे अत्यंत महत्त्वाचे आहे. व्यक्तिगत व सामाजिक मनोधारणा प्रोत्साहित करणे आता आवश्यक आहे"कारण भारत हा कृषिप्रधान देश असून सुमारे 65 टक्के लोक हे शेतीवर अवलंबून आहेत. स्वातंत्र्यानंतरही शेती क्षेत्राला पाणी आणि वीज या पायाभूत सुविधा राज्यकर्ते देऊ शकले नाहीत हे वास्तव आहे निसर्गात मुबलक पाणी आहे ,की भावना सोडून निसर्गाच्या रचनेत पाण्याची जी मर्याद आहे यावर प्रत्येक प्रदेशाचा समतोल विकास साधण्यासाठी पाण्याचे संवर्धन आणि नियोजन काटेकरपणे केले पाहिजे, तरच दीर्घकालीन विकासाची उभारणी आपल्याला करता येईल .महाराष्ट्रात भौगोलिक दृष्ट्या प्रजन्य प्रजननाच्या दृष्टीने असमानतेचे प्रदेश आहेत. उदा.माणदेश

समुद्रसपाटीपासून उंचावर असल्याने या प्रदेशात सरासरी इतके पर्जन्यमान होत नाही, त्यामुळे तेथील लोकांना हजारो वर्षापासून दुष्काळाशी संघर्ष जीवन जगावे लागत आहे. तेरावा शतकातील दुर्गा देवीचे दुष्काळ, चौदाव्या शतकातील दामाजी पंतांचे दुष्काळ, सतरावे शतकातील छत्रपती शिवाजी महाराजांचे, संत तुकाराम महाराजांच्या कालखंडातील, 1876 - 1896 ब्रिटिश कालखंडातील दुष्काळाचा विचार करता पूर्णतः निसर्गावर अवलंबून असलेल्या भाग म्हणजे मान आटपाडी, सांगोला, मंगळवेढा,कवठेमंकाळ ,जत, खटाव हे तालुके पिढ्यान पिढ्या दुष्काळाचे केंद्रबिंदू आहेत, म्हणून ज्या प्रदेशात नैसर्गिक दृष्टीने पाणी उपलब्ध होत नाही, त्या प्रदेशाला विज्ञानाचा व विकसित झालेल्या तंत्रज्ञानाचा उपयोग करून दुष्काळाचे कायमस्वरूपी निर्मूलन करता येईल असा विचार दृष्टिकोन महाराष्ट्रात प्रथम सांगोलचे आमदार गणपतराव देशमुख यांनी ठेवून तत्कालीन खासदार क्रांतिसिंह नाना पाटील यांच्या अध्यक्षतेखाली 21 मे 1961 रोजी 101 बैलगाड्यातून पाणी जागृतीच्या मिरवणुका काढल्या. सांगोला येथेपाणी परिषद घेऊन सह्याद्रीच्या घाटमाथ्यावरून दुष्काळी भागाला पाणी आणण्याची योजना त्यांनी मांडली. कमालीचा त्याग आणि चिकाटी असल्याखेरीज कोणतीही कठीण कार्य साध्य होत नसते हे पूर्णपणे ओळखून कोणत्याही उदात्त दृष्टीने झपाटून जाणे हे जीवनाचे सार आहे ,हे ध्येय अंगी बाळगून दुष्काळी भागाचे परिवर्तन करण्याचे वृत्त त्यांनी दूरदृष्टी ठेवून घेतले, हे विशेष त्यांनी पाण्यासाठी केलेला संघर्ष व दुष्काळी भागाला आणलेले पाणी हे अनेक तपांचे फळ आहे .पुढे 13 ऑगस्ट 1977 तात्कालीन मुख्यमंत्री वसंतदादा पाटील यांच्या अध्यक्षतेखाली नागज जिल्हा सांगली येथे पाणी परिषदा आयोजित करून 1975 च्या कृष्णा पाणी तंटालावादाने महाराष्ट्राला दिलेल्या पाण्याच्या प्रश्नाला शासनाने अग्रक्रम देऊन सातारा ,सांगली, सोलापूर जिल्ह्यातील दुष्काळी तालुक्याला टेंभू - म्हैसाळ योजनेचे पाणी द्यावी ही मागणी करून हा क्रांतिकारी निर्णय घेण्यास भाग पाडले परंतु या प्रकल्पाचे अंमलबजावणी गतीने होत नाही, म्हणून कै.क्रांतिवीर नागनाथ अण्णा नायकवडे यांना सोबत घेऊन राजश्री शाहू महाराज यांचे जयंतीचे अच्युत साधून 26 जुलै 1993 रोजी तेरा दुष्काळी तालुक्यातील जनतेला संघटित करून आटपाडी येथे पाणी संघर्ष चळवळीचे रणशिंग भुकले. सातत्याने 21 पाणी परिषदा घेऊन चळवळीचा लढा आज तागायत ओव्यातपणे सुरू ठेवला आहे. जबाबदारीने आणि प्रामाणिकपणे काम करून हाच सन्मानाचा मार्ग आहे आंदोलनाला सुद्धा एक तर्कशास्त्र असते हे त्यांना जमले म्हणून 30 जुलै 1995 ची सांगोला पाणी परिषद, 26 ते 29 ऑक्टोबर 1998 तहसील समोरील धरणे आंदोलन, येथे सहा ते सात मार्च 2006 मुंबई येथे हे आंदोलन, नागपूर व सांगोला येथील वेळोवेळी मोर्चे , जन चळवळीच्या जोरावर शिरभावी व 81 गावाच्या पिण्याच्या पाणी योजना आणून प्रश्न सोडविला. टेंभू -म्हैसाळ, निरा उजवा कालवा या शेतीपूरक योजना आज पूर्णत्वास येत आहेत याचे सारे श्रेय शेतकरी कामगार पक्षाचे ज्येष्ठ नेते आणि सांगोला तालुक्याचे भाग्यविधाते भाई गणपतरावजी देशमुख यांनाच जात.

निष्कर्ष

शेतकरी कामगार पक्षाचे ज्येष्ठ नेते गणपतराव देशमुख यांचे महाराष्ट्राच्या जडणघडणीमध्ये फार मोठे योगदान आहे. भाई गणपतराव देशमुख यांनी सांगोला विधानसभा क्षेत्राचा सखोल अभ्यास करून कायमस्वरूपी दुष्काळ भाग हा शिक्का कसा मुजवता येईल यासाठी त्यांनी त्यांच्या उभ्या आयुष्यामध्ये मोठ्या प्रमाणामध्ये प्रयत्न केले. सांगोला तालुक्यासाठी सरकारच्या विविध योजना तयार करून त्याची अंमलबजावणी करण्याचे कार्य भाई गणपतराव देशमुख यांनी मोठ्या प्रमाणामध्ये केलं.सांगोला तालुक्याच्या दुष्काळा बरोबर विधानसभा क्षेत्रामध्ये कृषी उद्योग सूतगिरण्या सांगोला तालुक्यामध्ये डाळिंबासाठी मोठ्या प्रमाणामध्ये आवश्यक असणाऱ्या उपायोजना यासारखे काम त्यांनी केले .सांगोला तालुक्याचा पश्चिम भाग(कोळा) भागांमध्ये कायमस्वरूपी पाणी देण्याच्या उद्देशाने टेंभू सारखी योजना त्यांनी सांगोला मतदारसंघांमध्ये आणली. सरकार दरबारी या दुष्काळीग्रस्त भागाचे लोकप्रतिनिधित्व त्यांनी मोठ्या जमाने केले शेतीसाठी पाणी पुरवण्यासाठी योजना निर्माण करून त्याचे अंमलबजावणी केली पाहिजे त्यासाठी शासन दरबारी मोठ्या प्रमाणामध्ये प्रयत्न केले, याचे यश म्हणजे म्हैसाळ -

टेंभू सारखी योजना पाच नंबर फाट्याची योजना त्यांनी या तालुक्यामध्ये राबवलेल्या दिसून येतात.

संदर्भसूची

1 पाणीदार -डॉ. सुधीर भोंगळे.

2 कृष्णकाठ- यशवंतराव चव्हाण.

3 राजकारणातील मापदंड भाई गणपतराव देशमुख- डॉ.किसन माने.

4 ठाकूर किरण- संपा तरुण भारत(दिवाळी विशेषांक 2014) आम्ही विक्रमवीर पृ.क्रमांक 187.

5 माधवराव चितळे "पाणी आणि आपण" लोकराज्य ऑगस्ट 2011 पृ. क्रमांक 10.

6 ऍड. पृथ्वीराज चव्हाण "राजकारणातील शुभशक्ती" दैनिक तरुण भारत 10 ऑगस्ट 2011 पृ.क्रमांक 10.

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.4 No.4 Jan – Feb 2023

भारत पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

रघुबर प्रसाद सिंह[1] साध्वी सिंह[2]

[1]शोधार्थी, विश्वविद्यालय अर्थशास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।

[2]छात्रा, विश्वविद्यालय समाजशास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।

***Corresponding Author*-रघुबर प्रसाद सिंह**

Email: rrajji4@gmail.com

DOI- 10.5281/zenodo.7648129

सारांशः-

जलवायु परिवर्तन आज दुनिया के सामने मौजूद प्रमुख पर्यावरणीय चुनौतियों में से एक है। भारत अनेक समस्याओं का सामना कर रहा है। जलवायु परिवर्तन कृषि, जल संसाधनों, वनों और जैव विविधता, स्वास्थ्य, तटीय प्रबंधन और तापमान में वृद्धि पर विभिन्न प्रतिकूल प्रभावों से जुड़ा है। कृषि उत्पादकता में गिरावट भारत पर जलवायु परिवर्तन का मुख्य प्रभाव है। अधिकांश जनसंख्या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। जलवायु परिवर्तन पारिस्थितिक और सामाजिक आर्थिक प्रणालियों पर अतिरिक्त तनाव का प्रतिनिधित्व करेगा जो पहले से ही तेजी से औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और आर्थिक विकास के कारण जबरदस्त दबाव में हैं। यह पत्र भारतीय संदर्भ में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव और इसके विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करता है।

मुख्य शब्दः- जलवायु, पर्यावरणीय, प्रतिनिधित्व, सामाजिक, आर्थिक।

परिचयः-

वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन जैसी ट्रेस गैसों का संचय मुख्य रूप से जीवाश्म ईंधन के जलने जैसी मानवजनित गतिविधियों के कारण होता है, ऐसा माना जाता है कि यह पृथ्वी की जलवायु प्रणाली को बदल रहा है। इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (आईपीसीसी) ने अपनी चौथी मूल्यांकन रिपोर्ट में कहा कि "जलवायु प्रणाली का गर्म होना अब स्पष्ट है, जैसा कि अब वैश्विक औसत हवा और समुद्र के तापमान में वृद्धि, बर्फ और बर्फ के व्यापक पिघलने, और बढ़ते वैश्विक सील स्तर"। भारत के पास जलवायु परिवर्तन के बारे में चिंतित होने का एक कारण है, क्योंकि एक विशाल आबादी अपनी आजीविका के लिए कृषि, वानिकी और मत्स्य पालन जैसे जलवायु-संवेदनशील क्षेत्रों पर निर्भर करती है। वर्षा में गिरावट और तापमान में वृद्धि के रूप में जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभाव के परिणामस्वरूप देश में आजीविका के मुद्दों की गंभीरता में वृद्धि हुई है। जलवायु परिवर्तन पारिस्थितिक और सामाजिक आर्थिक प्रणालियों पर अतिरिक्त तनाव का प्रतिनिधित्व करेगा जो पहले से ही तेजी से औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और आर्थिक विकास के कारण जबरदस्त दबाव में हैं।

जलवायु परिवर्तन मानवता के सामने सबसे महत्वपूर्ण वैश्विक पर्यावरणीय चुनौतियों में से एक है, जिसका प्रभाव खाद्य उत्पादन, प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र, मीठे पानी की आपूर्ति, स्वास्थ्य आदि पर पड़ता है। नवीनतम वैज्ञानिक आकलन के अनुसार, पृथ्वी की जलवायु प्रणाली वैश्विक और क्षेत्रीय दोनों स्तरों पर स्पष्ट रूप से बदल गई है। पूर्व-औद्योगिक युग के बाद से। इसके अलावा, साक्ष्य से पता चलता है कि पिछले 50 वर्षों में देखी गई अधिकांश वार्मिंग (0.1 डिग्री सेल्सियस प्रति दशक) मानव गतिविधियों के लिए जिम्मेदार है।

जलवायु परिवर्तन पर अंतर सरकारी पैनल के अनुसार, वैश्विक औसत तापमान 2100 तक 1.4 से 5.8 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ सकता है। इस अभूतपूर्व वृद्धि से वैश्विक जल विज्ञान प्रणाली, पारिस्थितिकी तंत्र, समुद्र स्तर, फसल उत्पादन और संबंधित पर गंभीर प्रभाव पड़ने की उम्मीद है। प्रक्रियाओं। प्रभाव उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में विशेष रूप से गंभीर होगा, जिसमें मुख्य रूप से भारत सहित विकासशील देश शामिल हैं।

1992 में, रियो डी जनेरियो में पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (यूएनसीईडी) ने जलवायु परिवर्तन पर फ्रेमवर्क कन्वेंशन (एफसीसीसी) का नेतृत्व किया, जिसने सामान्य लेकिन विभेदित जिम्मेदारियों को पहचानते हुए वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों के अंतिम स्थिरीकरण के लिए रूपरेखा तैयार की। और संबंधित क्षमताएं, साथ ही साथ सामाजिक और आर्थिक स्थितियां।

कन्वेंशन 1994 में लागू हुआ। इसके बाद, 1997 क्योटो प्रोटोकॉल, जो 2005 में लागू हुआ, ने सतत विकास सिद्धांतों का पालन करते हुए वातावरण में ग्रीनहाउस गैस सांद्रता को स्थिर करने के महत्व पर जोर दिया। प्रोटोकॉल ने दिशानिर्देशों और नियमों को निर्धारित किया है कि किस हद तक एक भाग लेने वाले औद्योगिक देश को छह ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करना चाहिए: कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड, क्लोरोफ्लोरोकार्बन, हाइड्रोफ्लोरोकार्बन और पेरफ्लोरोकार्बन।

भारत की जनगणना 2001 के अनुसार, भारत की शहरी आबादी 1.02 अरब की कुल जनसंख्या का 286 मिलियन या 27.80 प्रतिशत थी। 2012 तक यह आबादी बढ़कर 368 मिलियन होने का अनुमान है। शहरी आबादी 5,161 में रहती है। भारत में शहरों और कस्बों और गंभीर जल और स्वच्छता तनाव का सामना करना पड़ता है। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत की जल अर्थव्यवस्था इस बात की ओर इशारा करती है कि भारत तेजी से पानी से बाहर हो रहा है, और 2020 तक यह गंभीर तनाव में होगा। यह भी अनुमान लगाया गया है कि 2050 तक मांग आपूर्ति से अधिक हो जाएगी। तेजी से बढ़ते आर्थिक परिदृश्य में पानी की मांग बढ़ना तय है। वातावरण में लाखों टन कार्बन डाइऑक्साइड का निरंतर और बेरोकटोक उत्सर्जन, भले ही मुख्य रूप से कुछ देशों या क्षेत्रों से उत्पन्न हो, संभावित विनाशकारी परिणामों के साथ वैश्विक और स्थायी जलवायु परिवर्तन का कारण बन सकता है, जैसे कि समुद्री जल का बढ़ना और जलमग्न होना। कई द्वीपों और तटीय क्षेत्रों, और परिवेश के तापमान में वृद्धि के कारण फसल पैटर्न और कृषि उत्पादकता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

भारत लगभग 700 मिलियन ग्रामीण निवासियों वाला एक बड़ा विकासशील देश है, जो सीधे तौर पर जलवायु-संवेदनशील क्षेत्रों और प्राकृतिक संसाधनों जैसे कि पानी, जैव विविधता, मैंग्रोव, तटीय क्षेत्रों और घास के मैदानों पर निर्भर करता है। इसके अलावा, शुष्क भूमि वाले किसानों, वनवासियों और खानाबदोश चरवाहों की अनुकूलन क्षमता बहुत कम है। प्रतीकात्मक रूप से महत्वपूर्ण होने के बावजूद, क्योटो प्रोटोकॉल को अब व्यापक रूप से "विफलता" माना जाता है क्योंकि इसने न तो विश्व स्तर पर उत्सर्जन में कमी की पहल की है और न ही ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में और कटौती का वादा किया है। वैज्ञानिकों ने लंबे समय से चेतावनी दी है कि क्योटो प्रोटोकॉल का 100 प्रतिशत पालन भी जलवायु में परिवर्तन को सीमित करने के लिए बहुत कम करेगा, फिर भी इस नीति की विफलता को बनाने में विश्व स्तर पर लगभग 15 साल लग गए हैं। क्योटो प्रोटोकॉल में शमन पर लगभग अनन्य ध्यान विकासशील देशों के हितों के विरुद्ध कार्य करता है। जलवायु परिवर्तन के खतरे के लिए धनी औद्योगीकृत राष्ट्रों के अस्थिर उपभोग पैटर्न जिम्मेदार हैं; वैश्विक आबादी का केवल 25 प्रतिशत इन देशों में रहता है, लेकिन वे कुल वैश्विक सीओ2 उत्सर्जन का 70 प्रतिशत से अधिक उत्सर्जन करते हैं और दुनिया के कई अन्य संसाधनों का 75 से 80 प्रतिशत उपभोग करते हैं।

जलवायु परिवर्तन से भारत को चिंतित होना चाहिए क्योंकि इसका देश पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। जलवायु परिवर्तन के सभी संभावित परिणामों को अभी तक पूरी तरह से समझा नहीं गया है, लेकिन प्रभावों की मुख्य "श्रेणियां" कृषि पर हैं, समुद्र के स्तर में वृद्धि से तटीय क्षेत्रों का जलमग्न होना, और चरम घटनाओं की बढ़ती आवृत्ति, जो गंभीर खतरे पैदा करती हैं भारत। यह पेपर भारत पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, विशेष रूप से कृषि, जल, स्वास्थ्य, वन, समुद्र स्तर और जोखिम की घटनाओं पर विस्तार से चर्चा करता है।

भारत से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जनः-

पूर्व-औद्योगिक समय से वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों की बढ़ती सांद्रता के कारण उत्पन्न होने वाला जलवायु परिवर्तन एक गंभीर वैश्विक पर्यावरणीय समस्या के रूप में उभरा है और मानव जाति के लिए खतरा और चुनौती बन गया है। जलवायु परिवर्तन को सतत विकास पथ में संभावित महत्वपूर्ण कारकों में से एक के रूप में तेजी से पहचाना जाता है, और एक उभरता हुआ अंतर्राष्ट्रीय साहित्य है जो पद्धति संबंधी मुद्दों और अध्ययनों के अनुभवजन्य परिणामों पर विचार करता है जो विभिन्न नीतिगत क्षेत्रों के बीच अंतर्संबंधों, व्यापार-नापसंद और सहक्रियाओं का पता लगाता है। भारत में मानवजनित ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन सूची का अनुमान 1991 में एक सीमित पैमाने पर शुरू हुआ था, जिसे बढ़ाया और संशोधित किया गया था, और आधार वर्ष 1990 के लिए पहली निश्चित रिपोर्ट 1992 में प्रकाशित हुई थी (मित्रा, 1992)। यूएनएफसीसीसी (नैटकॉम 2004) द्वारा सभी ऊर्जा, औद्योगिक प्रक्रियाओं, कृषि गतिविधियों, भूमि उपयोग, भूमि उपयोग परिवर्तन, वानिकी और अपशिष्ट प्रबंधन प्रथाओं से भारतीय उत्सर्जन की एक व्यापक सूची तैयार की गई है।

कृषि और खाद्य सुरक्षा

अत्यधिक जलवायु-संवेदनशील भारतीय कृषि, जिसका 65 प्रतिशत हिस्सा वर्षा आधारित क्षेत्रों में है, सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 25 प्रतिशत योगदान देता है, कुल कार्यबल का 65 प्रतिशत कार्यरत है, और संबद्ध गतिविधियों

(जीओआई, 2002) के साथ कुल निर्यात का 13.3 प्रतिशत हिस्सा है। कई अध्ययनों का अनुमान है कि राष्ट्रीय खाद्यान्न उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि के बावजूद, जलवायु परिवर्तन के साथ कुछ महत्वपूर्ण फसलों जैसे चावल और गेहूं की उत्पादकता में काफी गिरावट आ सकती है। भारतीय कृषि की जलवायु संवेदनशीलता पर क्रॉस-सेक्शनल डेटा का विश्लेषण किया है। क्षेत्र-स्तरीय विश्लेषण से पता चला है कि अधिकांश किसान "जलवायु परिवर्तन" शब्द से परिचित हैं, लेकिन उनकी समझ अक्सर अन्य घटनाओं के साथ ओवरलैप हो जाती है। 1980 के दशक के मध्य से 1990 के दशक के अंत तक की अवधि के दौरान उल्लेखनीय रूप से उच्च प्रभाव दर्ज किए गए। अध्ययन के निष्कर्ष भारत में समान अवधि में कृषि उत्पादकता को कमजोर करने के बढ़ते साक्ष्य की पुष्टि करते हैं। भारत-विशिष्ट जलवायु अनुमानों का उपयोग करके अनुमानित प्रभावों से पता चलता है कि 1971-1985 की अवधि के दौरान प्रभावों में गिरावट आई और फिर से वृद्धि हुई, संभवतः इस अवधि के दौरान भारतीय कृषि की बेहतर लचीलापन और जलवायु प्रक्षेपण में क्षेत्रीय भिन्नता के कारण भी।

जल संसाधन :-

भारत के समृद्ध जल संसाधन असमान रूप से वितरित हैं और इसके परिणामस्वरूप स्थानिक और अस्थायी कमी होती है। बढ़ती जनसंख्या, बढ़ती कृषि और तेजी से हो रहे औद्योगीकरण के कारण पिछले कुछ वर्षों में पानी की मांग में जबरदस्त वृद्धि हुई है, जो जल संसाधनों की मात्रा और गुणवत्ता में काफी असंतुलन के लिए जिम्मेदार हैं। जल संसाधन मंत्रालय के अनुसार, भारत में प्रति व्यक्ति उपलब्ध पानी की मात्रा 1951 में 3,450 सेमी से लगातार घटकर 1999 में 1,250 सेमी हो गई, और 2050 में प्रति व्यक्ति 760 सेमी तक और घटने की उम्मीद है। कम वर्षा और अधिक वाष्पीकरण के कम अपवाह, वाटरशेड में ताजे पानी की उपलब्धता में काफी बदलाव, मिट्टी की नमी में गिरावट और जल विज्ञान क्षेत्रों के शुष्कता स्तर में वृद्धि के गंभीर परिणाम होंगे। वर्ष 2050 तक, ब्रह्मपुत्र नदी में औसत वार्षिक प्रवाह में 14 प्रतिशत की कमी आएगी। यदि वर्तमान वार्मिंग दर को बनाए रखा जाता है, तो हिमालय के ग्लेशियर बहुत तेजी से क्षय हो सकते हैं, जो कि 2030 तक वर्तमान 5,00,000 वर्ग किमी से 1,00,000 वर्ग किमी तक सिकुड़ सकते हैं। भारत की ऊर्जा जरूरतों के आंशिक समाधान के रूप में हिमालयी जलविद्युत पर विचार करते समय यह भी चिंता का कारण है, क्योंकि जलवायु परिवर्तन नियोजित विशाल निवेशों की प्रभावशीलता को तेजी से कम करेगा।

जंगल :-

वैश्विक आकलन से पता चला है कि भविष्य में जलवायु परिवर्तन का वन पारिस्थितिकी प्रणालियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ने की संभावना है। जलवायु संभवतः विश्व स्तर पर वनस्पति पैटर्न का सबसे महत्वपूर्ण निर्धारक है और इसका वनों के वितरण, संरचना और पारिस्थितिकी पर महत्वपूर्ण प्रभाव है। भारत एक विशाल-जैव विविधता वाला देश है जहाँ भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 20 प्रतिशत (64 मिलियन हेक्टेयर) वन हैं (राज्य वन रिपोर्ट, 2001)। लगभग 200,000 गाँवों को "वन गाँवों" के रूप में वर्गीकृत किया गया है, यह स्पष्ट है कि समुदाय वन संसाधनों पर बहुत अधिक निर्भर हैं। भारत में वन प्रकृति में बेहद विविध और विषम हैं, और उन्हें कुछ श्रेणियों में वर्गीकृत करना मुश्किल है। नतीजतन, अखिल भारतीय "विविध वन" श्रेणी (बिना किसी प्रमुख प्रजाति के) उच्चतम (63 प्रतिशत) अनुपात दिखाती है। विविध वन क्षेत्र सभी प्रकार के वनों के अंतर्गत आता है। अन्य दो सबसे प्रमुख वन मध्य भारत के पूर्वी हिस्से में शोरिया रोबस्टा या साल (12 प्रतिशत) और मध्य भारत और दक्षिण भारत में पश्चिमी घाटों में फैले टेक्टन ग्रैंडिस या सागौन (9.5 प्रतिशत) हैं।

वन पर जलवायु परिवर्तन का प्रभावः-

वर्तमान जलवायु शासन के तहत और भविष्य के दो जलवायु परिदृश्यों के तहत प्रत्येक वन प्रकार में होने वाले क्षेत्र की सीमा की तुलना से पता चलता है कि प्रत्येक प्रकार के वन में होने वाले परिवर्तनों की भयावहता का पता चलता है। सीआरयू3 10-मिनट जलवायु विज्ञान का उपयोग करते हुए, बायोम42 मॉडल भारतीय क्षेत्र में स्थित कुल 10,864 ग्रिड बिंदुओं के लिए चलाया गया था। मृदा पैरामीटर मूल्यों से संबंधित डेटा में अंतराल के कारण, मॉडल इन ग्रिड बिंदुओं में से केवल 10,429 को वनस्पति प्रकार प्रदान कर सकता है। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, एफएसआई डेटाबेस के साथ तुलना ने हमें 35,190 एफएसआई ग्रिड से जानकारी का उपयोग करने की अनुमति दी। बायोम4 द्वारा अनुमानित वन प्रकारों और एफएसआई द्वारा निर्दिष्ट वन प्रकारों के बीच एक उचित मेल था। इस प्रकार, उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन दक्षिणी पश्चिमी घाटों और पूर्वोत्तर क्षेत्र में देखे गए, जबकि समशीतोष्ण वन फ़िर, स्प्रूस और देवदार के जंगलों के अनुरूप क्षेत्रों में पाए गए।

समुद्र तल से वृद्धि :-

समुद्र के स्तर में वृद्धि और तापमान में वृद्धि से तटीय पारिस्थितिक तंत्र प्रभावित होंगे। भारी आबादी वाले मेगाडेल्टा क्षेत्र, विशेष रूप से, बाढ़ में वृद्धि के कारण सबसे बड़ा जोखिम होगा। गोदावरी, सिंधु, महानदी और कृष्णा तटीय डेल्टाओं में परिवर्तन संभावित रूप से लाखों लोगों को

विस्थापित करेगा। अनुमानित समुद्र स्तर में वृद्धि जलीय कृषि उद्योगों को नुकसान पहुंचा सकती है और मछली उत्पादकता में गिरावट को बढ़ा सकती है। तटीय लहरों और चक्रों की बढ़ती आवृत्ति और तीव्रता के कारण उच्च जोखिम भी होंगे (भारत सरकार, 2005)।

अगर आज समुद्र के स्तर में एक मीटर की वृद्धि होती है, तो यह भारत में 70 लाख लोगों को विस्थापित कर देगा। भविष्य में और भी लोग विस्थापित हो सकते हैं। बांग्लादेश में लगभग 35 प्रतिशत भूमि एक मीटर की वृद्धि से जलमग्न हो जाएगी। संयुक्त राज्य अमेरिका में असुरक्षित समुद्र-स्तर वृद्धि क्षेत्रों के साथ दीवारों के निर्माण पर 1989 की कीमतों पर 107 बिलियन खर्च होने का अनुमान है। यह विकसित देशों के सकल घरेलू उत्पाद का एक छोटा सा हिस्सा हो सकता है, लेकिन इस तरह के उपायों, यहां तक कि बांग्लादेश के रूप में उनके समुद्र तटों के लिए स्केलिंग के लिए, इसके सकल घरेलू उत्पाद के एक बहुत बड़े हिस्से की आवश्यकता हो सकती है। ऐसी दीवार के लिए बांग्लादेश या भारत को भुगतान कौन करेगा? यह देखते हुए कि इन देशों के सुरक्षात्मक उपायों के लिए भुगतान करने में सक्षम होने की संभावना नहीं है, लाखों लोग बांग्लादेश में विस्थापित हो जाएंगे, और उनमें से कई भारत में फैल सकते हैं। समुद्र तल परिवर्तन दो प्रकार के हो सकते हैं: (1) माध्य समुद्र स्तर में परिवर्तन, और (2) चरम समुद्र स्तर में परिवर्तन। दुनिया के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न बंदरगाहों पर स्थित ज्वार गेज द्वारा रिकॉर्ड किए गए पिछले समुद्र स्तर के माप का विश्लेषण, पिछली सदी के दौरान प्रति वर्ष 1 से 2 मिमी की औसत समुद्र स्तर की वृद्धि का संकेत देता है। इन परिवर्तनों को आमतौर पर ग्लोबल वार्मिंग के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है। ग्लोबल वार्मिंग के विभिन्न परिणाम, जैसे समुद्री बर्फ का पिघलना और समुद्र में तापमान में वृद्धि के कारण आयतन का विस्तार आदि, वैश्विक समुद्र-स्तर में वृद्धि में योगदान कर सकते हैं।

स्वास्थ्य :-

लाखों लोगों के स्वास्थ्य की स्थिति प्रभावित होने का अनुमान है, उदाहरण के लिए, कुपोषण में वृद्धि, मौतों में वृद्धि, बीमारियाँ, और चरम मौसम की घटनाओं के कारण चोटें; अतिसार रोगों का बोझ बढ़ा; जलवायु परिवर्तन से संबंधित शहरी क्षेत्रों में ग्राउंड-लेवल ओजोन की उच्च सांद्रता के कारण कार्डियोरेस्पिरेटरी रोगों की आवृत्ति में वृद्धि; और कुछ संक्रामक रोगों का परिवर्तित स्थानिक वितरण। अपनी तीसरी आकलन रिपोर्ट में, संयुक्त राष्ट्र आईपीसीसी ने निष्कर्ष निकाला कि "जलवायु परिवर्तन मानव स्वास्थ्य के लिए खतरों को बढ़ाने का अनुमान है।" जलवायु परिवर्तन मानव स्वास्थ्य को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर सकता है (जैसे, थर्मल तनाव के प्रभाव, बाढ़ और तूफान में मृत्यु या चोट), और अप्रत्यक्ष रूप से रोग वैक्टर (जैसे, मच्छरों), जलजनित रोगजनकों, जल गुणवत्ता, वायु गुणवत्ता, और की श्रेणियों में परिवर्तन के माध्यम से। भोजन की उपलब्धता और गुणवत्ता। इसलिए, वैश्विक जलवायु परिवर्तन मानव स्वास्थ्य की रक्षा के लिए चल रहे प्रयासों के लिए एक नई चुनौती है।

तापमान में वृद्धि :-

जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से गर्म दिनों, गर्मी की लहरों, सूखे (जल स्तर में गिरावट, फसल की विफलता, आदि), और चक्रवातों के परिणामस्वरूप होने वाली प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति में वृद्धि होगी। कोठावले (2005) ने 1970-2002 की अवधि के लिए देश भर में वितरित 40 स्टेशनों के डेटा का उपयोग करके भारत में चरम तापमान का अध्ययन किया और नोट किया कि जून की तुलना में मई में गर्मी की लहर की स्थिति अपेक्षाकृत अधिक होती है, जबकि बहुत कम गर्मी की लहरें आती हैं। मार्च और अप्रैल के महीनों में। उन्होंने यह भी नोट किया कि प्री-मानसून सीज़न के दौरान गर्म दिनों की संख्या भारत के मध्य भाग में सबसे अधिक और भारत के पश्चिमी तट पर सबसे कम है। गर्म वातावरण में, अधिक गर्मी की वर्षा की उम्मीद है। हाल के आँकड़ों से पता चला है कि गर्म जलवायु में हिमालय और आल्प्स की ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं पर हिमपात कम हुआ है। निचले क्षोभमंडल में छोटे धूल कणों की बढ़ी हुई सघनता मानसून के बादलपन को कम करती है, जो दक्षिण भारत में सबसे अधिक ध्यान देने योग्य है, और इस प्रकार ग्रीष्मकालीन मानसून वर्षा (रामनाथन एट अल।, 2002)। भारत में मौसम संबंधी आंकड़ों के विश्लेषण से उत्तर और दक्षिण भारत के बीच न्यूनतम तापमान और बादल की मात्रा के रुझानों में महत्वपूर्ण अंतर दिखाई देता है। दुनिया भर में जलवायु परिवर्तन के परिणामों के कई गंभीर उदाहरण उपलब्ध हैं। एक सदी से भी अधिक समय में रिकॉर्ड किए गए सबसे गर्म वर्षों में से नौ 1988 के बाद से हुए हैं। दुनिया भर में, जुलाई 1988 अब तक का सबसे गर्म महीना था। 1998 में, भारत ने 50 वर्षों में अपनी सबसे खराब गर्मी की लहर का अनुभव किया, जिसने 3,000 से अधिक लोगों की जान ले ली। 1999 में उड़ीसा में उष्णकटिबंधीय चक्रवात ने लगभग 10,000 लोगों की जान ले ली। गंगोत्री में हिमालय और ग्लेशियर प्रति वर्ष 18 मीटर की दर से घट रहे हैं।

निष्कर्ष :-

जलवायु परिवर्तन से मानव कल्याण को कई अलग-अलग तरीकों से प्रभावित करने की उम्मीद है, जैसे

पूंजी, पारिस्थितिक तंत्र, बीमारी और प्रवासन के माध्यम से। मुद्दे के महत्व के बावजूद, यह स्पष्ट नहीं है कि अर्थशास्त्र में कला की वर्तमान स्थिति के साथ मूल्य की गणना कैसे की जाए। एक सार्थक विकास के लिए कम से कम कृषि से गैर-कृषि अर्थव्यवस्था में बदलाव की आवश्यकता होती है, जिससे कृषि पर निर्भरता कम हो जाती है। चूंकि अधिकांश श्रम बल-लगभग 70 प्रतिशत-जीविका और रोजगार के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से इस क्षेत्र पर निर्भर करता है, यह तब होता है जब यह क्षेत्र अधिक उत्पादक होता है और खाद्य आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करता है कि यह विनिर्माण के लिए आवश्यक श्रम और पूंजी जारी करेगा और सेवा क्षेत्रों। जलवायु परिवर्तन के बारे में मौजूदा बहस के संदर्भ में, यह दिखाना आवश्यक है कि भारत निष्क्रिय होने से बहुत दूर है और नीतियों, कार्यक्रमों और परियोजनाओं के संदर्भ में काफी कार्रवाई की जा रही है। प्रौद्योगिकी हस्तांतरण आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को तेज कर सकता है, और अतिरिक्त धन ऊर्जा संरक्षण में सरकारी प्रयासों को गति दे सकता है। हालांकि, गरीबी उन्मूलन के लिए नीतियों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

सन्दर्भ सूचीः-

1. अचंता ए एन (1993), "भारतीय चावल उत्पादन पर ग्लोबल वार्मिंग के संभावित प्रभाव का आकलन", द क्लाइमेट चेंज एजेंडाः एन इंडियन पर्सपेक्टिव, टाटा एनर्जी रिसर्च इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली।
2. एशिया लीस्ट-कॉस्ट ग्रीनहाउस गैस एबेटमेंट स्ट्रैटेजी (अल्गास)(1998), "इंडिया कंट्री रिपोर्ट", एशियन डेवलपमेंट बैंक, ग्लोबल एनवायरनमेंट फैसिलिटी, यूनाइटेड नेशंस डेवलपमेंट प्रोग्राम, मनीला, फिलीपींस।
3. एशियाई विकास बैंक (1995), "एशिया में जलवायु परिवर्तन", वी अस्थाना द्वारा लेख।
4. भास्कर राव डीवी, नायडू सीवी और श्रीनिवास राव बी आर (2001), "ट्रेंड्स एंड फ्लक्चुएशंस ऑफ द साइक्लोनिक सिस्टम्स ओवर नॉर्थ इंडियन ओशन", मौसम, नंबर 52, पृष्ठ 37-46.
5. भट्टाचार्य सुमना, शर्मा सी, धीमान आर सी और मित्रा ए पी (2006), "क्लाइमेट चेंज एंड मलेरिया इन इंडिया", करंट साइंस, वॉल्यूम 90, नंबर 3, पृष्ठ 369-375.
6. बाउमा एमजे और वैन डेर काए एच (1996), "भारतीय उपमहाद्वीप और श्रीलंका पर एल नीनो सदर्न ऑसिलेशन एंड द हिस्टोरिक मलेरिया एपिडेमिक्सः एन अर्ली वार्निंग सिस्टम फॉर फ्यूचर एपिडेमिक्स?", ट्रॉपिकल मेडिसिन एंड इंटरनेशनल हेल्थ, वॉल्यूम 1, नंबर 1, पृष्ठ 86-96.
7. चर्च जेए, ग्रेगरी जेएम, ह्यूब्रेक्ट्स कुह्न एम एट अल। (2001), द साइंटिस्ट बेसिस कंट्रीब्यूशन ऑफ वर्किंग ग्रुप प् टू द थर्ड असेसमेंट रिपोर्ट ऑफ द इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑफ क्लाइमेट चेंज, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज, पृष्ठ 639-693,
8. साइरानोस्की डी (2005), "जलवायु परिवर्तनः लंबी दूरी का पूर्वानुमान", प्रकृति, 438, पृष्ठ 275-276.
9. डैश एसके और हंट जेसीआर (2007), "भारत में जलवायु परिवर्तन की विविधता", वर्तमान विज्ञान, वॉल्यूम 93, नंबर 6, पृष्ठ 782-788.
10. फिशर गुंथर, महेंद्र शाह, हरिज वैन वेल्थुइज़न और फ्रेडी नेचटरगेल ओ (2001), "21वीं सदी में कृषि के लिए वैश्विक कृषि-पारिस्थितिक आकलन", इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एप्लाइड सिस्टम्स एनालिसिस, ऑस्ट्रिया, पृष्ठ 27-31,

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.4 No.4 Jan – Feb 2023

आदिवासी समाज विकास परिवर्तनातील राजकीय भूमिकांचा अभ्यास.

प्रा.गांगुर्डे रामदास भिमा.
राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख, सुपे कला,विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय सुपे, ताबारामती.,जिल्हा पुणे.
***Corresponding Author-* प्रा.गांगुर्डे रामदास भिमा.**
Email: abhiramdip@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7648137

प्रस्तावना:

आज आपण संपूर्ण भारतातील सर्व समाज, घटक आणि प्रदेशात राहत असणाऱ्या लोकांनी भारताचा 75 वा सुवर्ण अमृत महोत्सव मोठ्या उत्साहात साजरा केला. राष्ट्राची प्रतिभा, राष्ट्राचा स्वाभिमान, मायभूमीची ऋण. तसेच या देशाचा सर्वांगीण विकासाची स्वप्न पाहणाऱ्या महापुरुष, समाज सुधारक, राजकीय नेता,क्रांतिकारक, यांनी देशाला स्वातंत्र्य देण्यापासून तर देशातील सर्व समाज घटकाच्या प्रबोधन आणि सामाजिक राजकीय आर्थिक, शिक्षण,विज्ञान,तंत्रज्ञान, कृषी, आरोग्य,पर्यावरण संतुलन, महिला, मागासलेला वंचित, उपेक्षित रंजल्या गांजलेल्या लोक,समाज, वर्ग उन्नती विकास परिवर्तनातील केलेल्या योगदानाची आठवण करून देत आहे. यामध्ये राष्ट्रप्रेम,राष्ट्रीय भक्ती राष्ट्रीय एकात्मता,धर्मनिरपेक्षता आणि राष्ट्रीय स्वाभिमान जागृत होताना दिसत आहे. या सर्व क्षेत्रातील होणाऱ्या बदल, परिवर्तनात राष्ट्रातील राजकीय धोरण, प्रशासकीय अंमलबजावणी, कार्यक्षम, प्रभावी शासन आणि प्रभावी निर्भीड धोरण, निर्मिती,राज्यकर्ते यांची राजकीय भूमिका अत्यंत मोलाची महत्त्वपूर्ण ठरत असते. आंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय,स्थानिक अशा सर्व भारतीय मानवी समाजाच्या सर्वच क्षेत्रात परिवर्तन आणि बदल घडवून आणण्यात प्रभावी, स्वच्छ, निर्भीड, पारदर्शक राजकीय भूमिका योगदान दिल्यास. मला असे वाटते भारताच्या वर्तमान व भविष्यकालीन आदिवासी समाज विकास परिवर्तनात भारतीय राजकारणातील, राजकीय,राष्ट्रीय राजकीय भूमिका महत्त्वपूर्ण ठरतील. महाराष्ट्र राज्य,भारत हा खेड्यांचा देश आहे. खेड्यांचा विकास म्हणजे देशाचा विकास सर्वांचा उदय म्हणजे राष्ट्राचा विकास. भारतात विभिन्न जाती, धर्म, वर्ग, दारिद्र्य, बेरोजगारी, कुपोषण निरक्षरता, आर्थिक, सामाजिक विषमता कृषी समस्या, शेतकरी आत्महत्या मागास वंचित वर्ग आदिवासी समाज यांचे यांचे प्रश्न/समस्याचे आजही पूर्णपणे उच्चाटन झालेली नाही. अनेक समाज घटक विकासापासून दूर, वंचितच असल्याचे पुढे येत आहे. याला महाराष्ट्र राज्यातील राज्यकर्ते त्यांच्या राजकीय उदासीन भावना, कृती धोरणे,राष्ट्रीय राजकारणातील राजकीय अक्षमता असल्याचे अभ्यासांअती निश्चित दिसते.

उद्दिष्टे:

१) आदिवासी समाज बदल, परिवर्तनातील राजकीय धोरण, कृती अमलबजावणीचा अभ्यास करणे.

२) निर्भिड,प्रभावी राजकीय भूमिका मुळे होणाऱ्या बदल, परिवर्तनाचा अभ्यास करणे.

गृहितके:

१) वर्तमान व भविष्य काळातील आदिवासी समाजाला बदल परिवर्तन,उन्नती घडवून आणण्यासाठी येथील प्रभावी,निर्भीड,स्वच्छ राजकीय कृती,धोरणाचा लाभ होईल.

२) महाराष्ट्र राज्यातील आदिवासी समाजाच्या विकास बदल परिवर्तन सद्यस्थि माहिती होईल.

अभ्यास पद्धती: सर्वेक्षण संशोधन अभ्यास पद्धतीचा वापर करण्यात आला आहे.

आदिवासी.

" नागरी समुदायापासून दूर अंतरावर विशिष्ट भूभागावर जंगल व डोंगराळ भागात राहणाऱ्या समान बोलीभाषा बोलणाऱ्या ज्यांची संस्कृती किंवा परंपरा चालीरीती नागरी समाजापेक्षा वेगळ्या आहेत अशा लोकांना आदिवासी असे म्हणतात."

भारतात आज आदिवासी जमातीचा विचार करता 428 एवढ्या जमाती असून महाराष्ट्रामध्ये 45 हून अधिक आदिवासी जमाती आहे. त्यामध्ये प्रामुख्याने वारली, कोकणा, कोकणी, कोळी ,महादेव कोळी, ठाकूर,भिल्ल

धनवार,गोंड ,हलवा, कोलम,कातकरी, काथोडी अशा प्रामुख्याने आदिवासी जमाती आहे.ठाणे, रायगड, नासिक, धुळे, नंदुरबार ,जळगाव ,अहमदनगर हिंगोली ,नांदेड ,अमरावती ,यवतमाळ, वर्धा ,नागपूर ,भंडारा ,गोंदिया, चंद्रपूर, गडचिरोली या जिल्ह्यात मोठ्या प्रमाणात आदिवासी जमाती आढळून येतात.

2011 च्या जनगणनेनुसार महाराष्ट्र राज्याची एकूण लोकसंख्या अकरा कोटी 23 लाख इतकी असून त्यापैकी आदिवासी जमातीची संख्या एक कोटी पाच लक्ष इतकी आहे ही राज्याच्या एकूण लोकसंख्येच्या 9. 35% इतकी आहे.आदिवासी हा शब्द कोठून आला महाराष्ट्रातील अनुसूचित जमातीच्या यादीत एकूण 45 ते 47आदिवासी जमातींचा समावेश असून त्यातील प्रमुख जमाती भिल्ल, महादेव, कोळी, कोरकू, प्रधान राजगुंड, वारली, कोकणा, ठाकर,. कातकरी इत्यादी अदिम जमाती म्हणून अधिसूचित केले आहे.भारतामध्ये आदिवासीच्या किती जमाती आढळतात महाराष्ट्रामध्ये आदिवासी समाज घटकांची किती जमाती आहेत. आजही आदिवासी जमाती अस्तित्वात आहेत. आदिवासी म्हटलं की सर्वप्रथम दिसते ते मागासलेपणा कारण आदिवासींची वास्तव्य किंवा निवास अति दुर्गम भागात दऱ्याखोऱ्यात निसर्गाच्या सहवासात असते. भारतात आदिवासी लोकसंख्येच्या दृष्टीने महाराष्ट्राचा चौथा क्रमांक लागतो. आदिवासी समाजात एका विशिष्ट भूप्रदेशात राहतो. भूप्रदेश क्षेत्रफळाच्या दृष्टीने प्रगत समाजाच्या प्रदेशाच्या मानाने लहान असतो. आदिवासी क्षेत्र इतर प्रगत समाजापासून दूर किंवा जंगलात असते. रस्त्याच्या अभावि तो प्रदेश दुर्गम असतो.आदिवासी समाज मोठ्या संख्येने विखरलेला आहे. या जमातींना विविध नावे दिलेली आहेत त्यांना " Aboriginals"म्हणजे अगदी मूळ रहिवासी प्राचीन किंवा आदिवासी असे म्हटले जाते. त्याचप्रमाणे जंगलात राहणारी म्हणून वनवासी आणि पर्वतडोंगराळ, भागात राहणारे म्हणून गिरीजन असे शब्द वापरले जातात. तर हिंदीत जनजाती हा शब्द वापरला जातो. मराठी मध्ये अनुसूचित जमाती असा शब्दप्रयोग आदिवासी समाज घटकांच्यासाठी वापरला जातो .

महाराष्ट्र राज्यातील जाती,वर्गाचे समीकरणे आणि पक्षीय राजकारण:

आदिवासी समाजाचे स्थान काय? त्यांची भूमिका काय असू शकते? याशिवाय मुरब्बी, श्रेष्ठ राजकारणी आपापले राजकीय सत्ता कायम प्रस्थापित ठेवण्यासाठी आदिवासी समाजाच्या मतपेटीचा उपयोग कोणत्या हेतूने करतात.? आदिवासी समाजाच्या महिला,पुरुष उमेदवारांना आपापल्या गट, राजकीय पक्ष नेतृत्वाखाली आणण्यासाठी अनेक वेगवेगळ्या प्रकारचे धोरणे, मार्ग,हेतू अवलंबताना दिसतात. या सर्व राजकीय समीकरणांचा, घटकांचा आदिवासी समाज घटकावर मोठ्या प्रमाणावर परिणाम आणि प्रभाव होताना दिसत आहे. राजकारणात ग्रामपंचायती, सहकारी संस्था, पंचायत समिती, जिल्हा परिषदा वेगवेगळे गाव, वाड्या, वस्तीवर राहणाऱ्या आदिवासी समाजाच्या समाज घटकांना सहभाग देऊन त्यांचाही आर्थिक, सामाजिक शैक्षणिक, कृषी क्षेत्रातील स्तर, जीवनमान उंचावण्यासाठी एकूणच आदिवासी समाजाच्या विकास परिवर्तनातील आदिवासी समाज घटकांचा राजकारणातील सहभाग संधी आणि योग्य तो वाटा देऊन येथील जात,धर्म,वर्ग राजकारणाच्या पलीकडे जाऊन वरिष्ठ, मातब्बर राज्यकर्त्यांनी,राजकारण्यांनी वरिष्ठ पातळीपासून स्थानिक पातळीपर्यंत आपल्या राजकीय भूमिका,त्यांचा उपयोग सदसद विवेक बुद्धीने आणि नैतिकतेने राजकारण आणि सत्तेचा उपयोग केल्यास अशा राजकीय भूमिकांचा आदिवासी समाज घटकावर होणारा प्रभाव त्यातून त्यांच्या विकास परिवर्तनाला पूरक असे वातावरण तयार होइल. एकूणच अशा परिस्थितीत आदिवासी समाज विकास परिवर्तनातील विकसित राजकीय भूमिका ह्या प्रेरणादायी आणि भविष्यातील स्वच्छ, निर्भीड राजकारणाची नांदी ठरू शकते. आदिवासी समाज देखील शूर आणि पराक्रमी होता..आदिवासींचा खरा इतिहास का लिहिला गेला नाही? आदिवासी समाजाचा इतिहास काय आहे? मुळात लिहिणे ही पद्धत भारतीयांना सहज शक्य जमणारी नाही का?आत्ताचा काळ पाहिला तर मोजके लोक सोडल्यास अधिकांश लोक अजूनही लिहिण्याला महत्त्व देत नाही? प्रयत्न केले तर लिहून सर्व शकतात पण लिहिण्याबाबतचा आळस अनास्था,हा पूर्व काळापासून आलेला आहे. सर्जनशीलता विचारशक्ती अशी परिस्थिती एकविसाव्या शतकात दुसर होताना दिसत आहे.

निर्भीड प्रभावी सत्ताधारी आणि विरोधी राजकीय पक्षांची भूमिका:

खऱ्या अर्थाने राजकीय पक्ष ही लोकांची इच्छा आकांक्षा पूर्तीचे स्थाने असतात. राजकीय सत्ता अधिकार प्रस्थापित करण्याबरोबर सामाजिक राजकारण, समाजाभिमुख राजकीय पक्षाची उद्दिष्टे धोरणे निर्णय क्षमता ही उदार आणि दूरदृष्टी ,राजकीय पक्षांनी राजकारणामध्ये आपली भूमिका, स्वच्छ आणि निर्भीड समानतेच्या माध्यमातून प्रभावी मांडली आणि त्याची कार्यवाही, वास्तव अंमलबजावणी जर सुयोग्य मार्ग आणि पद्धतीने केल्यास. महाराष्ट्र राज्यातील आदिवासी समाज घटकांमध्ये राजकारणा संदर्भात असणारी चीड, द्वेष मत्स,र नकारात्मकतेची भूमिका नष्ट होऊन, आदिवासी समाज घटक त्यामध्ये नवनवीन नेतृत्व कार्यकर्ते ,महिला पुरुष राजकारणामध्ये सहभागी होऊ लागतील. या दृष्टीने

महाराष्ट्र राज्यातील राजकारणात वेगवेगळ्या राजकीय पक्षांनी एक प्रभावी आणि स्वच्छ राजकारणातून आदिवासी समाज घटकांच्या उन्नती विकास परिवर्तनाच्या वाटा खुल्या करून त्यांनाही विकास वाटा मध्ये सहभागी करून घेण्याची गरज आज आहे.राजकीय पक्षांची स्वच्छ निर्भीड ध्येय/ उद्दिष्टे आणि राजकारण या माध्यमातून आदिवासी समाजाचा वेगवेगळ्या अंगानी विकास उन्नती परिवर्तन होण्यास मदत होईल.

याकरिता महाराष्ट्र राज्यातील राजकीय पक्षांनी, राजकारण्यांनी ,राज्यकर्त्यांनी प्रथमत ही लक्षात ठेवली पाहिजे. की केवळ राजकीय सत्ता प्रस्थापित करण्यासाठी आदिवासी समाज घटकांचा मताचा,मतपेटी करिता उपयोग या वापर न करता त्यांनाही योग्य प्रमाणात विश्वासात घेऊन त्यांच्या उन्नती विकासाच्या वाटा राजकारणातील सहभाग विकासातील संधी वेगवेगळ्या विकासात्मक योजना यासाठी रस्त्यावर उतरून प्रस्थापित सरकारच्या समोर आदिवासी समाज घटकांच्या विकास परिवर्तनातील अडथळे मोठ्या दिलाने मोठ्या मनाने मोकळे केले जावेत. वेगवेगळ्या प्रसार माध्यमातून समाज माध्यमातून सभा, मीटिंग प्रचार राजकीय पक्षांतील अजिंठा या माध्यमातून प्रयत्न केल्यास नक्कीच विकासात्मक, परिवर्तनात आदिवासी समाज घटकांच्या उन्नती विकासात राजकीय पक्षांची स्वच्छ निर्भीड भूमिका ही प्रभावी ठरू शकते. आज मात्र हा समाज वेगवेगळ्या स्तरावर शिक्षण घेऊन जागृत होताना दिसतो आहे. त्यांनाही राजकीय सत्ता, सत्ता स्थानी, अधिकार या गोष्टीची आता जाणीव होताना दिसत आहे. म्हणून राजकीय पक्षांनी ही लक्षात घेतल पाहिजे. प्रत्येक वेळी राजकीय स्वार्थ डोळ्यासमोर ठेवूनच आदिवासी समाज त्यांच्या मताचे राजकारण न करता त्यांना विकासाच्या संधी, वाटा निर्माण करून देणे महत्त्वपूर्ण आहे.

लोकप्रतिनिधी आणि राजकीय नेत्यांची आदिवासी समाजाच्या प्रती कायम उदारमत, दृष्टिकोन, भूमिका महत्त्वाची आहे:

लोकप्रतिनिधी राजकीय नेता आणि राजकीय संघटन, संस्था आणि संघटना या सर्व प्रक्रियेमध्ये आदिवासी समाजाच्या प्रति असणारी आस्था त्यांच्या मतपेटीच्या संदर्भात असणारी प्रत्येक राजकीय नेता, संघटनाची, संस्थांची, उदार दृष्टिकोन आदिवासी समाजाचा स्थानिक ते केंद्रीय पातळीपर्यंत वेगवेगळ्या भागात राहणाऱ्या आदिवासी समाज घटकांना प्रमाण मानून त्यांच्या साठीची विधिमंडळात महाराष्ट्र राज्याच्या स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या माध्यमातून आदिवासी समाज घटक महिला,पुरुष,विद्यार्थी,विद्यार्थिनी, शेतकरी, रोजगार अशा सर्व घटक परिस्थिती डोळ्यासमोर ठेवून भूमिका ठेवावी . येथील समाजाचा बदल परिवर्तनात राजकीय नेता राजकीय संघटना यांनी केवळ आदिवाशी समाज घटकांचा मतांच्या किंवा मतपेटीच्या आधारावर सत्ता प्राप्तीच्या दृष्टिकोनातून विचार न करता आदिवासी समाज घटकांचा कोणत्या पद्धतीने आणि मार्गाने योजनांनी, अनुदानाने, सहकार्याने परिवर्तन आणि विकास घडवून आणता येईल याचाही राजकारण करताना एक उदार दृष्टिकोन हेतू मार्ग ही प्रस्थापित करणे .

आजच्या महाराष्ट्रातील राजकीय नेता, राजकीय पुढारी, राजकीय संस्था,संघटना यांनी लक्षात घेणे आवश्यक आहे. तरच खऱ्या अर्थाने आपली राजकीय सत्ता स्थान ,महत्त्व आणि प्रभाव कायमस्वरूपी आदिवासी समाजाच्या मनामध्ये विश्वास निर्माण करून त्यांना आपल्या प्रति बनवून त्यांच्यातील कर्तुत्वाला ,नेतृत्वाला योग्य तो वाटा संधी निर्माण करून दिल्या पाहिजेत. या समाजाचा मध्ये परिवर्तन आणि बदल घडवून येऊ शकेल यात शंका नाही. मात्र आज महाराष्ट्र राज्यासह संपूर्ण देशाच्या राजकारणाचा वास्तव, घडामोडींचा अभ्यास करता महाराष्ट्र राज्याच्या विधिमंडळासह देशाच्या संसदेमध्ये होत असणारी चर्चा, निर्णय, धोरण ही निश्चित नाही.त्यामुळे असे निश्चित स्पष्ट होते आहे. की येथील राज्यकर्त्यांना राजकीय पक्षांना राजकीय संघटनांना केवळ आपले राजकारणाच्या माध्यमातून मत पेटी बांधून तिचा सार्वत्रिक, स्थानिक, राज्य निवडणुकीसाठी उपयोग करणे आणि सोयीने सत्तेचा उपयोग करून आपली सत्ता स्थाने पक्की करण्याचा स्वार्थी हेतूच दिसत आहे. केवळ आपले स्वार्थासाठी आदिवासी समाज घटकांच्या मतांचा मतपेटीचा आधार घेताना दिसत आहेत. महाराष्ट्र राज्यातील बहुतांशी जिल्हे हे आदिवासी जिल्हे म्हणून घोषित केले गेलेली आहेत. अशा जिल्ह्यात राहणाऱ्या आदिवासी समाज घटकांची संख्या ही महाराष्ट्र राज्याच्या लोकसंख्येच्या तुलनेने सर्वात अधिक आहे. या बहुतांशी आदिवासी समाज घटकांच्या करिता आज सर्व क्षेत्रांमध्ये वेगवेगळ्या प्रकारची जनजागृती होणे अत्यंत आवश्यक वाटते. राज्यकर्त्यांनी राजकीय नेता संघटनांनी त्यांच्या मुळात पारंपारिक राजकीय डावपेच, स्वार्थी, हेतू, दृष्टिकोन बाजूला ठेवून आदिवासी समाज घटकांचा विकास परिवर्तनाला चालना आणि प्रेरणा देण्यासाठी त्यांच्या जनजागृती घडून आणून त्यांचा ही उन्नती विकासात राजकीय नेता,राजकीय ,संघटना, राजकीय कार्यकर्ता यांनी योगदान दिल्यास आदिवासी समाजाचा विकास परिवर्तन उन्नतीच्या वाटा ह्या प्रगतीच्या दिशेने सुरू होतील .यात शंका नाही. आदिवासी समाज घटकांच्या मतपेटी व मतांच्या आधारे राजकीय नेते राजकीय पक्ष राजकीय संघटना आपली सत्ता स्थान जर निश्चित करत असेल. तर आदिवासी समाजाच्या समस्या त्यांच्या उन्नती विकासातील अडथळे त्यांच्या प्रगतीच्या संधी मार्ग हेतू आर्थिक योजना कृषी योजना ह्या प्रत्येक राजकीय नेता राजकीय पक्ष संघटन यांनी गाव पातळीपर्यंत वेगवेगळ्या माध्यमातून पोहोचवून आदिवासी समाज घटकाला त्यांची खरे राजकीय अधिकार स्वातंत्र्य, सामाजिक प्रतिष्ठा, स्थान सहभाग त्या त्या वेळी

त्यांना उपलब्ध करून दिल्यास राजकीय पक्ष राजकीय नेता राजकीय संघटना यांच्यातही सामाजिक राजकारण आणि राजकारणातून सामाजिक परिवर्तन अशा प्रकारचं एक समीकरण पुढे येऊ शकेल. मात्र आज आदिवासी समाज घटकांच्या उन्नती विकास आणि परिवर्तनावर कोणताही राजकीय नेता राजकीय पक्ष संघटना आवाज उठवताना दिसत नाही. बोलताना हि दिसत नाही त्याचबरोबर कोणत्याही प्रकारचं लिखाण करण्यासही कोणी पुढे येताना दिसत नाही. आदिवासी समाजाप्रती केवळ वरवरची आस्था बाळगली जाते. सहानुभूती निर्माण केली जाते. वास्तवता त्यांच्या करिता प्रत्येक वेळी कृतीमध्ये कोणत्याही प्रकारची ठोस निर्णय धोरण आणि त्या धोरणाची अंमलबजावणी त्या अनुषंगाने शासनाच्या माध्यमातून कोणत्याही प्रकारची कार्यवाही अंमलबजावणी होताना दिसत नाही. याचाच अर्थ असा होतो. आदिवासी समाज घटकांचा उन्नती परिवर्तन आणि विकास यापेक्षा आमचे राजकीय सत्ता स्थान अधिकार, नेतृत्व, प्रभाव आणि राजकीय सत्ता काबीज करण्यासाठी राजकीय धोरण निर्णय आणि सोयी सोयीने राजकारण करून वाटेल तेव्हा मते मागण वाटेल तेव्हा त्यांना सोडून देणे अशा या अनिश्चित धोरणामुळे आदिवासी समाज घटकांचा विकास आणि परिवर्तन होण्यास खूप विलंब होताना दिसत आहे.

जात वर्ग समाज धर्म राजकारणाचा अंत आणि जात वर्ग धर्माच्या पलीकडील राजकारण:

आदिवासी विकास परिवर्तन बदलत घडवून आणण्यासाठी समाजातील राजकारणात राजकीय ध्येय, धोरण कार्यात कोणत्याही प्रकारच्या धर्म, जाती, वर्ग, समाज यांना महत्त्व न देता सर्वांना विकासाची संधी लाभ मार्ग स्थाने योग्य तो वाटा प्राप्ती साठी जात वर्ग धर्म समाज याच्या पलीकडे राजकीय धोरण निर्णय कार्यवाही अंमलबजावण्याची गरज आज आदिवासी समाज उन्नती परिवर्तनात महत्त्वाची भूमिका घेण्याची गरज आहे.

आज महाराष्ट्रामध्ये पुरोगामी विचारांच्या ध्येय, धोरणांना मूठ माती देऊन स्वार्थी स्वतःच्या सत्ता स्थान,नेतृत्व वर्चस्व, प्रभाव इतर समाज घटक धर्म जातीवर कसा प्रस्थापित करता येईल. आम्हीच इतरांच्या पेक्षा श्रेष्ठ आमचा राजकीय पक्ष आमचे राजकीय संघटन इतरांच्या पेक्षा किती श्रेष्ठ व मजबूत आहे.अशा स्वार्थी विचार दृष्टिकोन, भूमिकांनी राजकारणात प्रवेश केला आहे.

असे स्वार्थी निर्णय धोरण त्याची कार्यवाही व अंमलबजावणी सर्व व्यापक ठरू शकत नाही. तिचा प्रभाव आणि परिणाम सर्वांना प्राप्त होताना दिसत नाही. ज्या मतपेटीचा उपयोग तुम्ही तुमच्या सत्तास्थानी राजकीय पदे प्राप्तीसाठी उपयोग करून घेता आहेत त्याच मतपेटी, मतदार त्या समाज घटक वर्गाशी आपण किती प्रामाणिक आहोत? याचा विचार महाराष्ट्रातील प्रत्येक राजकीय नेता राजकीय संघटन राजकीय पक्ष आणि मुख्य प्रशासन यांनी विचार करावा. पद्धतीने आदिवासी समाज घटकांच्या उन्नती प्रगती बदल परिवर्तनासाठी खऱ्या अर्थाने ग्रामपंचायत पंचायत समिती जिल्हा परिषद आणि महाराष्ट्र राज्याच्या विधिमंडळात आत्ता पावे तो राजकारण्यांनी कोणत्या प्रकारची ठोस निर्णय धोरण घेतले आहे.? थोड्याफार प्रमाणात घेतले ही असतील तरी त्याला सोयीने फांद्या फोडण्याची काम राजकीय नेता संघटना राजकीय पक्षांनी केलेली. स्पष्ट दिसत आहे. केवळ आदिवाशी, आदिवाशी म्हणून मते मागण्यात आपण माहीर आहोत. आदिवासी म्हणून त्यांची सहानुभूती घेऊन वेळ मारून नेण्यात आपण पटाईत बनलो आहोत. असे येथील राज्यकर्त्यांना राजकीय नेता राजकीय पक्ष संघटनांना वाटत नाही काय.? मला या ठिकाणी असे नमूद कराव असे वाटते की,आज संपूर्ण देशामध्ये आम्ही विकास परिवर्तनाच्या राजकीय भूमिका आणि राजकारण दृष्टिकोनातून विविध माध्यम मीटिंग सभा द्वारे घोषित करताना खरोखरच या समाज घटकांचा संविधान आणि विधायक पद्धतीने आपण विकास करू शकलो काय? याचा अभ्यास ही आज महत्त्वाची गरज वाटते. राजकीय नेता राजकीय संघटना राजकीय पक्ष पुढारी यांना सुद्धा ही माहीत आहे. आपण केवळ स्वार्थापोटी आदिवासी आदिवासी आदिवासी समाज घटकांना आपल्या दावणीला बांधून सोयीनुसार आपण त्यांना वेळ पडल्यास सोडून देतो. त्यांच्या उन्नती परिवर्तन संधी लाभ सहभागाची आम्हाला कोणत्याही प्रकारचे देणे घेणे किंवा त्यांची गरज वाटत नाही. असे बऱ्याच वेळी पुढे येताना दिसत आहे. इतकी उदासीनता आणि अनास्था ही आदिवासी समाज घटकांच्या उन्नती प्रगती परिवर्तन संधी लाभा साठी त्यांचा विकास परिवर्तन आणि बदल हा संविधानिक आणि विधायक पद्धतीने सर्व समाज घटकातील नेते राजकीय पक्षी संघटन विधिमंडळ संसद कार्यकारी मंडळ आणि प्रशासन यांच्या माध्यमातून घडवून आणण्याची जबाबदारी या राज्यकर्त्यांच्यावर येथील समाजावर पूर्णपणे बंधनकारक केलेली. असतानाही येथील राजकीय भूमिका, राजकीय धोरण आणि निर्णय केवळ स्वार्थापोटी राजकारण करण्यासाठी त्याचा पुरेपूर उपयोग करताना दिसत आहे. यात शंकाच नाही.

आदिवासी समाज, उन्नती विकास, परिवर्तन संदर्भात सविस्तर वास्तव असे संशोधन व लिखाण करणे आवश्यक, गरज आहे:

माझ्या असे अभ्यासाअंती लक्षात आलेले आहे. आदिवासी समाजावर त्यांच्या परिस्थिती त्यांच्या उन्नती विकास अडथळे समस्या गरजा यासंदर्भात अनेक लोकांनी केवळ लिखाण केलेले असून ते संशोधन वास्तव आणि सत्य परिस्थिती बघता त्रोटक पद्धतीचे वाटते. म्हणून स्वच्छ निर्भीड आणि तटस्थ राहून आदिवासी समाज त्यांच्या सामाजिक सांस्कृतिक राजकीय शैक्षणिक आर्थिक कृषी आरोग्य अशा वेगवेगळ्या क्षेत्रात येणाऱ्या अडचणी समस्या त्या समस्यांची उकल आणि त्यावर योग्य तो पर्याय, उपाययोजना यासंदर्भात शासनाला शिफारस करून महाराष्ट्र राज्याच्या विधिमंडळ आणि भारताच्या संसदे असे

मुद्दे मांडून त्यावर आवाज उठविला जावा अशा पद्धतीचे लिखाण हे सविस्तर आणि वास्तव प्रचलित परिस्थिती झाल्यास आदिवासी समाज परिवर्तनात अनेक राजकीय नेता राजकीय पक्ष राजकीय संघटना एकूणच राजकीय भूमिका ही महत्त्वाची कामगिरी करू शकते म्हणून मला असे वाटते राजकीय भूमिका आणि त्या उधार दूरदृष्टी भूमिका या ठिकाणी महत्त्वाच्या ठरू शकतील.

आदिवासी समाजाच्या विकास उन्नती आड येणारे सामाजिक राजकीय आर्थिक सांस्कृतिक अडथळे त्याचबरोबर त्यांची शैक्षणिक, प्रगती ,कुपोषण ,महिला आरोग्य, शिक्षण या संदर्भातील अडथळे समस्या आणि उपाययोजना सरकार धोरणे निर्णय वेगवेगळ्या विभागातून राबवल्या जाणाऱ्या वास्तव योजना अनुदान योजना त्या-त्या समाज घटकापर्यंत पोहोचतात किंवा नाही त्यासंदर्भात त्यात येणाऱ्या अडचणी समस्या कोणत्या आहेत.? त्या वेगवेगळ्या विकास परिवर्तनात आदिवासी समाजाचे योगदान आणि सहभाग संधी लाभ हा प्रत्यक्षात अभ्यासला जावा तशा स्वरूपाचे सत्यवास्तव, प्रचलित परिस्थितीतील आदिवासी समाज परिवर्तन बदलावर होणारी आघात. त्याची सोडवणूक म्हणजेच उपाययोजना त्यासंदर्भातील कोणत्या धोरणांची निर्मितीची गरज आहे या अनुषंगाने संशोधन होणं गरजेचं आहे संशोधन केवळ संशोधकाने करावी असे नाही तर समाजातील समाज माध्यमे, वृत्तपत्रे ,वेगवेगळ्या समाज घटकातील कार्यकर्ते, राजकीय नेता, राजकीय संघटना, राजकीय पक्ष, यांच्या माध्यमातून हे संशोधन सविस्तर अभ्यास आणि त्या संदर्भात येणारी निष्कर्ष त्या निष्कर्षाच्या अनुषंगाने आदिवासी समाजाच्या विकास परिवर्तनात येणाऱ्या अडचणी समस्या दूर करण्याची उपाययोजना त्यामध्ये वेगवेगळ्या प्रसार माध्यमे तसेच प्रशासकीय यंत्रणा या माध्यमातून कोणत्या प्रकारचा बदल घडवून आणता येईल यासंदर्भात विचार मंथने सविस्तर लिखाण आणि वास्तव चित्र समाजासमोर आणणे गरजेचे आहे.

जे लिहितात जे मांडतात ते केवळ मागासलेल्या समाज वर्गातील असून त्यांच्या या सविस्तर लेखनाला आणि मांडण्याला येथील राजकीय नेता पुढारी राजकीय पक्ष आणि राजकीय भूमिका म्हणाव्या अशा प्रमाणात दात देताना दिसत नाही.त्यामुळे ते लिखाण ते संशोधन ती वास्तव परिस्थिती ही केवळ त्याच्याच समाजाची म्हणून त्याकडे सोयीने राजकारण करून दुर्लक्षित केले जाते.आज हे दुर्लक्षित आणि संकुचित राजकारण आदिवासी समाजाच्या परिवर्तनात विकासातील एक अडथळा आणि मोठी समस्या म्हणून उभे राहताना दिसत आहे. आदिवासी समाज घटकांच्या विकास वाटीतील निर्माण होणाऱ्या प्रमुख अडचणी, समस्या कोणत्या आहेत?त्या आपण या ठिकाणी निर्भीडतटस्थमांडल्या पाहिजेत,.

राज्यातील आदिवासी भागातील मोठ्या समस्या अडचणीत आदिवासी समाजातील लोक गरीब ,निरक्षर, कुपोषण भूकबळी, धुरंदर आजार, विविध रोगग्रस्थ आहेत.त्याचबरोबर शैक्षणिक अडथळयामध्ये शाळा महाविद्यालय अपुऱ्या सोयी सुविधा रस्ते पूल यांच्या अपुऱ्या सुविधा असल्यास त्या त्रोटक आणि चांगल्या स्थितीत नाहीत यासंदर्भात राजकीय उदासीनता विभागाच्या राबविण्यात येणाऱ्या योजना मधील अक्षमता जबाबदारीची जाणीव नसणे शासनाच्या किंवा राजकीय योजना राबविण्यात पारदर्शकता नसणे, भ्रष्टाचार, शासनपद्धतीतील, अकार्यक्षमता नोकरशाहीची उदासीनता याशिवाय समाजातील राजकीय सामाजिक जाणीव जागृतीचा अभाव आणि खऱ्या आदिवासी समाज घटकांच्या राजकीय पदे संधी लाभ नेतृत्व डावलून त्यांना हेतू पुरस्कार त्यापासून दुर्लक्षित ठेवणे अशा अनेक वास्तव प्रचलित सामाजिक उनिवा ह्या आदिवासी समाज घटकात आजही आपल्याला मोठ्या प्रमाणामध्ये दिसून येतात. नेमकी आमच्या राज्यकर्त्यांना राजकीय नेत्यांना राजकीय पक्षांना संघटनांना हे सर्व नेहात आहे. परंतु त्यावर कुठलाही राजकीय नेता राजकीय पक्ष राजकीय संघटना प्रत्यक्षात आवाज उठवत नाही. केवळ सार्वत्रिक निवडणुका लागल्या त्या सार्वत्रिक निवडणुकांमध्ये आपल्या राजकीय पक्षाला निश्चित केलेल्या उमेदवाराला आदिवासी समाज घटकातील महिला- पुरुष तरुण--तरुणींची मते आणि त्या मतांची पेटी प्राप्ती करण्यासाठी ज्या कधीच पूर्ण केल्या जाणार नाही अशा पोकळ घोषणा आश्वासने देऊन या समाजाची राजकीय भूमिकेतून फसवणूक करताना दिसत आहे. मात्र आपला राजकारणातील हक्क सत्ता अधिकार नेतृत्व आणि स्थान पक्क करून घेतल्यानंतर या समाज घटकांच्या विकास परिवर्तन उन्नती आणि समस्या संदर्भात महाराष्ट्र राज्यातील तसेच संपूर्ण देशातील असा कोणताच निर्भीड वक्ता नेता पुढारी राजकीय संघटना आवाज उठवताना आज तरी दिसून येत नाही. कारण त्याला इतर राजकीय पक्ष समाज घटकांची भीती असून भविष्यातील आपले स्थान दळमळीत होऊ शकेल की काय आपण केवळ आदिवाशी समाज घटकांचा नेता किंवा पुढारी म्हणून बघितले जातील जाईल की काय पुढील राजकारणाच्या वाटचालीत यावर अनेक अडचणी येथील काय? वरिष्ठ आणि राजकीय संघटन आपल्या विरोधात जाऊ शकेल की काय? माझे राजकारणातील पुढची रक्षक मला संरक्षण देतीलच काय? वगैरे यासारख्या अनेक शंका अशा संकुचित भावनेतून खऱ्या राजकीय भूमिका साकारताना दिसत नाही म्हणून आदिवासी समाज परिवर्तन बदल विकासात वास्तव खरी राजकीय भूमिका निभवल्यास खऱ्या अर्थाने महाराष्ट्र राज्यामध्ये बहुतांशी असलेल्या आदिवासी समाज घटक आणि वर्गाला योग्य तो न्याय संधी लाभ हा त्यांच्या विकास परिवर्तनास पूरक ठरेल म्हणून महाराष्ट्रातील राजकीय भूमिका राजकीय निर्णय राजकीय धोरणे ही सर्व आदिवासी विकास परिवर्तनात महत्त्वपूर्ण भूमिका ठरू शकते. हे या संशोधन अभ्यासाअंती पुढे येऊ शकेल असा मला विश्वास वाटतो आहे.

आदिवासी समाजात प्रभावी नेतृत्व, नेता, राजकीय भूमिका निर्मिती होणे आजच्या काळाची गरज आहे:

आदिवासी समाज घटकांमध्ये निसर्गवाद आहे. निसर्गावर आधारित जीवन जगणारी ही जमात ख़ऱ्या अर्थाने येथील रहिवासी असून ती निसर्गवादी जीवन जगताना अनेक दुर्गम ,डोंगराळ ,निरक्षर, भागामध्ये समूहाने जीवन जगताना दिसत असली. तरी ती इतर श्रीमंत ,उच्चस्त, प्रभावी ,जात, वर्ग ,समाज ,वर्गाच्या प्रभावाखाली आजही दिसत आहे.आणि कालही होती. याची कारण वस्तुस्थिती आजही या समाजावर इतर श्रीमंत प्रभावी जात वर्ग राजकीय नेता पुढारी राजकीय पक्ष संघटनांचा या समाज घटकावर मोठ्या प्रमाणात दबाव आलेला दिसत आहे. तसे बघता महाराष्ट्र राज्यामध्ये एकूण लोकसंख्येच्या आदिवासी बहुजन समाज वर्ग घटकांची लोकसंख्या आणि मतदार संख्या ही मोठ्या प्रमाणात आहे. मात्र त्यांच्यामध्ये भीती अस्पष्टता या कारणामुळे आदिवासी समाजात असा कोणताही प्रभावी नेता राज्यकर्ता पुढारी किंवा आदिवासी समाज घटकांचे संघटन राजकीय पक्ष हा महाराष्ट्र भारताच्या कोणत्याही प्रदेशात अद्यावत निर्माण झालेला दिसत नाही. थोड्याफार प्रमाणामध्ये आदिवासी समाज वर्ग गटातील संघटन स्थापित झाले. मात्र याच्यातही काही हुशार आदिवासी समाज वर्गातील लोक उच्चस्त श्रीमंत राजकीय नेता समाज वर्ग राजकीय संघटनांच्या दावणीला बांधल्या गेल्यामुळे त्यांनाही आपल्या समाज बांधवांच्या विषयी आंतरिक असता वाटत असली तरीही नाविलाजाणे त्याकडे दुर्लक्षित करण्याची सवयी लागलेली दिसते आहे. जोपर्यंत आदिवासी समाजात मी आदिवासी समाजातील मागास प्रवर्गातील दुर्गम डोंगराळ भागातील रंजल्या गांजलेल्या माझ्या समाज वर्गासाठी पूर्णपणे राजकीय संघटन निर्माण करून समाजात राजकीय सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक शैक्षणिक कृषी आरोग्य एकूण परिस्थिती अशा सर्व क्षेत्रांमध्ये परिवर्तन आणि बदल घडवून आणण्यासाठी पूर्णपणे झोकुन देईल आणि इतर उच्चस्त श्रीमंत राजकीय नेता पक्ष समाज वर्ग गटात ज्याप्रमाणे राजकीय नेता आपला प्रभाव वर्चस्व स्थापित करतो अशी भावना आदिवासी समाज वर्ग गटातील राजकीय नेता राज्य करता पुढारी आणि समाज वर्गात तरुण वर्गात याची जाणीव होत नाही. तोपर्यंत आदिवासी समाजामध्ये कोणत्याही प्रकारचा वेगवान बदल परिवर्तन होणे अपेक्षित नाही.

कोणत्याही समाजाचा विकास घडवून आणण्यासाठी त्या समाजामध्ये प्रभावी राजकीय नेता पुढारी आणि संघटन निर्माण होणे आवश्यक आहे. उदाहरणार्थ आफ्रिकेतील अमेरिकेतील काळा गोरा संघर्ष हा एक मोठा इतिहास आणि लोकांना गोऱ्या लोकांच्या बरोबरची स्थान मिळवून देण्यामध्ये जेथे नेल्सन मंडेला यांचा इतिहास आपल्याला सर्वांना माहित आहे. भारतात रंजल्या गांजलेल्या दलित बहुजन वंचित समाज घटकांना भारतातील इतर जाती वर्ग समाजाबरोबरची स्थान स्वातंत्र्य हक्क प्राप्त करून देण्यासाठी महात्मा ज्योतिबा फुले सावित्रीबाई फुले डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांनी घडविला इतिहास हा आधुनिक आणि ताजाच आहे. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी मागासलेल्या वंचित बहुजन समाज घटकांना त्यांची न्याय हक्क स्वातंत्र्य राजकीय अधिकार प्राप्त करून देण्यासाठी विश्वविक्रमी असा संघर्ष देऊन आज या समाजाच्या उन्नती प्रगती विकासाला मोठी दिशा मिळालेली आपल्याला दिसत आहे.

म्हणून मला आज या ठिकाणी असे मांडावे वाटते आहे. की आदिवासी समाज घटक वर्गात अशाच प्रकारचा राजकीय खंबीर नेता नेतृत्व पुढारी कार्यकर्ता जो निर्भिड आणि प्रभावी विचार दृष्टीने आदिवासी समाजात आपल्या राजकीय भूमिका धोरण निर्णय कृतीतून शासनकर्त्यांना राज्यकर्त्यांना प्रशासनाला धारेवर धरून आदिवासी समाज वर्ग गटात मोठा बदल परिवर्तन उन्नती विकास घडवून आणण्यासाठी एक महत्त्वपूर्ण राजकीय भूमिका साकार करणाऱ्या आदिवासी समाजाचा नेता पुढारी राज्यकर्ता याची आवश्यकता आज आहे.

आदिवासी समाज वर्गात संघटनात्मक एकात्मतेचे राजकारण आणि राजकीय भूमिका निर्मितीची गरज.

संख्येने मोठा मतदार आणि लोकसंख्या असणाऱ्या या आदिवासी समाज वर्गात एकात्मतेची राजकीय संघटन आणि राजकीय भूमिका निर्मिती झाल्यास आदिवासी समाजाच्या उन्नती परिवर्तन विकासा त फार मोठ्या प्रमाणामध्ये बदल परिवर्तन घडवून आणण्याची क्षमता यामध्ये आहे. नेमकी आज महाराष्ट्रातील अनेक जिल्हे तालुके आणि गाव स्थानिक सोसायटी पंचायत समिती जिल्हा परिषदा वेगवेगळ्या पदावर आदिवासी समाज वर्गातील महिला पुरुषांना राजकीय संधी लाभ नेतृत्व ही संविधानिक आणि कायदा आत्मक दृष्टिकोनातून देणे किंवा निमणी हे बंधनकारक झाले असून त्या संदर्भाची आता आदिवासी समाज वर्ग यांच्यात मोठ्या प्रमाणात जनजागृती आणि जाणीव झालेली दिसून येते. मात्र प्रभावी असे राजकीय नेतृत्व राजकारण आणि भूमिका निर्णय धोरण साकारताना दिसत येत नाही.

त्याच्या मनामध्ये राजकीय पक्ष संघटना आणि इतरत्र उच्चस्त श्रीमंत प्रभावी समाज वर्ग नेता यांची भीती अजूनही त्याच्या मनातून गेलेली दिसत नाही. कारण आज भावे तो यांच्यावरचणीला बांधलेला हा राजकीय नेता स्वच्छ निर्भीड आणि स्वतंत्रपणे आपली आपल्या समाज घटकाच्या उन्नती विकास बदल प्रगती आणि त्या अनुषंगाने निर्माण होणाऱ्या अडीअडचणी धोरण निर्णय यात येणारे अडथळे आणि समस्या मांडण्यात अपयशी ठरत आहे. आपल्याला कायमस्वरूपी आदिवासीचाच नेता म्हणून राहावा लागेल आणि आपले राजकीय स्थान नेतृत्व धोक्यात येईल या भीतीने तोही आपल्या समाजाप्रती प्रभावी अशी राजकीय धोरण निर्णय करताना आपली राजकीय भूमिका प्रभावी

आणि निर्भीड अशी मांडत नाही. आदिवासी समाजामध्ये कोणत्याही प्रकारचं एकात्मिक सामाजिक असे परिपक्व संघटन राजकीय पक्ष आणि नेतृत्व त्या संदर्भातील राजकीय भूमिका स्वतंत्रपणे अस्तित्वात येत नाही तोपर्यंत या समाजाच्या राजकीय नेता कार्यकर्ता पुढारी समाज परिवर्तन बदल घडवून आणण्यात अपेशी ठरतील असे स्पष्ट चित्र दिसत आहे. उदाहरणार्थ. भारतामध्ये एकूण लोकसंख्येच्या निम्म्याहून अधिक लोकसंख्या म्हणजे महिला या महिलांना पुरुषाबरोबरची सर्व अधिकार प्राप्त करून देण्यासाठी डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांनी हिंदू कोड बिल आणले आणि त्या हिंदू कोड बिल ला भारताच्या संसदेमध्ये असणाऱ्या उच्चस्त श्रीमंत जाती वर्गातील नीता राजकीय पुढाऱ्यांनी नाकारले असे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या लक्षात आल्यानंतर डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांनी संसदेत संसदेत आहे प्रसार माध्यमात भारतातील महिलांना नाकारलेल्या या हक्काचे आणि स्वातंत्र्याची वारंवार क्रांती प्रेरणा केली जनजागृती घडून आणली आणि हिंदू कोड बिल पास झाली नाही म्हणून तडाफडकीने डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी भारताच्या पहिल्या काहीतरी मंत्रीपदाचा राजीनामा दिला तेव्हा डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांच्या मनामध्ये कोणत्याही प्रकारची स्वतःच्या नेतृत्व भूमिकेविषयी आणि इतरत्र श्रीमंत उच्चस्त राजकीय नेता पुढारी यांच्या विषयीची डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांच्या मनात भीती नव्हती म्हणून त्यांनी भारतातील महिलांच्या उन्नती विकासाच्या आड येणाऱ्या या महिला विरुद्ध आमच्या राजकीय भूमिकेला विरोध म्हणून ऐतिहासिक राजीनामा देऊन महिलांच्या उन्नती विकासावर बोट ठेवले. अशा प्रकारचा आदिवासी समाज वर्ग गटामध्ये जेव्हा एखादा राजकीय नेता राज्यकर्ता समाजकर्ता विश्वासाने आदिवासी समाज घटकांच्या उन्नती विकासात अडथळे निर्माण करणाऱ्या राजकीय भूमिकांना हाणून पाडण्यासाठी विधिमंडळ समाज माध्यमे प्रसार माध्यमे वृत्तपत्रे आणि समाज वर्गात आपल्या समाज उन्नती बदल परिवर्तन घडवून आणण्याच्या राजकीय निर्णय धोरण आणि भूमिका साकारू शकत नाही. तोपर्यंत आदिवासी समाज घटक वर्गाला योग्य तो वाली मिळणार नाही. असे मला आजच्या या महाराष्ट्रातील आणि भारतातील राजकीय राजकारण भूमिका आणि धोरणातून निश्चित दिसत आहे.

आदिवासी समाज वर्गाच्या करिता संविधानिक आणि विधायक नियम, कायदे धोरण निर्णयाची काटेकोरपणे अंमलबजावणी होणे आवश्यकआहे.

भारतामध्ये सर्व समाज वर्ग यांचा समान विकास परिवर्तन सर्वांचा विकासाबरोबर राष्ट्राचा विकास आणि प्रगती घडवून आणणे असे संविधानिक आणि कायदा सांगतो. असे असले तरी येथील उच्च श्रीमंत मागतो बर मुरब्बी राजकीय नेता राजकीय पक्ष संघटना ही याकडे हेतू पुरस्कर दुर्लक्ष करून केवळ स्वार्थी भूमिकेतून राजकीय सत्ता राजकारण धोरण निर्णय घडवून आणताना दिसत आहेत. त्यांना संविधानात दिलेल्या वचनांचा आणि कायद्यांचा विसर पडलेला दिसत आहे. असे या ठिकाणी नमूद करावा असे वाटते. त्याचे कारण प्राचीन काळापासून भारतातील या समाज घटकांनी आदिवासी समाज बहुजन मागास समाज वर्ग गटावर निर्विवाद असे राजकारण आणि निर्णय धोरण भूमिका लाभलेल्या आहे. त्याच पुढेही लागताना ते दिसत आहेत. हे संविधानाला आणि कायद्याला धरून नाही. म्हणू महाराष्ट्र राज्यातील राजकीय नेता पुढारी राजकीय पक्ष राजकीय संघटन इतरत्र उच्चस्त श्रीमंत जाती वर्ग समाज लोकांनी या ठिकाणी हे लक्षात घेतले पाहिजे भारताच्या विकासात भारताच्या परिवर्तनात आणि भारताची प्रतिभा आंतरराष्ट्रीय पातळीवर निर्माण करण्यात या आदिवासी समाज वर्गातील लोकांचा ही वाटा आहे. याचा त्यांना विसर पडतो आहे. म्हणून आदिवासी विकास परिवर्तन बदल घडवून आणण्यासाठी केवळ सार्वजनिक प्रसार माध्यमात प्रतिनिधी सभेत सार्वजनिक क्षेत्रात विधिमंडळ संसदेत केवळ सहानुभूती म्हणून आदिवासी समाज घटका प्रति निर्माण करता कामा नाही तर प्रत्यक्षात या समाज घटक वर्गामध्ये शिक्षण आरोग्य कृषी राजकीय सामाजिक अशा सर्व क्षेत्राबरोबर रस्ते वीज पाणी घरकुले आर्थिक अनुदान यासारख्या निर्णय धोरणाची काटेखोरपणे आदिवासी समाज घटकात अगदी खेड्या गावापर्यंत ती निर्भीडपणे शासनाच्या माध्यमातून आदिवासी समाजवर्ग गटाला वेगवेगळ्या संधी लाभ हा पोहोच करता आला पाहिजे. तो पोहोचला पाहिजे. तो वेळीच त्यांच्या प्रत गेला पाहिजे. याची काळजी घेऊन निर्णय धोरण आणि राजकीय भूमिका निर्माण करून साकारल्या तर काटेखोरपणे संविधानिक आणि कायदा आत्मक दृष्टिकोनातून येथील इतर समाजाबरोबर आदिवासी समाज वर्गाचाही विकास होण्यास वेळ लागणार नाही असे स्पष्ट चित्र आजच्या राजकीय भूमिका आणि राजकारणातून पुढे येते आहे.

शासकीय प्रशासकी आणि लोकप्रशासनातील अधिकारी वर्ग कर्मचारी मुख्य प्रशासकांना त्या संदर्भात तंबी देऊन काटेकोरपणे नियमाची अंमलबजावणी आणि त्याची पडताळणी ही राजकीय भूमितीतून पार पडल्यास आदिवासी समाज परिवर्तन विकास बदलामध्ये प्रभावी राजकीय भूमिका ह्या आदिवासी विकासातील महत्त्वपूर्ण अशा भूमिकांची नांदी ठरू शकेल.

मात्र राजकीय भूमिका उदासीन, अक्षम असल्यामुळे प्रशासक, प्रशासकीय अधिकारी आदिवासी समाज वर्ग गटाच्या उन्नती विकास परिवर्तनातील चल ढसाळ करून केवळ कागदी घोडे राबवले जातात तरीही राजकीय नेता पुढारी सहप्रशासकी अधिकारी वर्ग यांची त्याला पर्याय काढून खोटी दस्ताऐवज आणि उत्तरे देऊन समाज माध्यमाची दिशाहीन आणि फसवणूक करताना समजते. मी तर हे म्हणतो की जर भारतीय संविधानाने आणि कायद्याने भारतातील प्रत्येक नागरिकांची उन्नती विकास परिवर्तन घडवून आणण्यासाठीची उपाययोजना धोरण निर्णय आणि त्या अनुषंगाने कार्यवाही करण्यासाठी विधिमंडळ संसद आणि समाज माध्यमे यांच्या ठौस निर्णय धोरण आणि उपाययोजनातून सर्वांची उन्नती विकास समान घडवून

आणण्याचे नियम कायदे संहिता आहे. तर आदिवासी समाज वर्गाच्या बहुजन वंचित समाज वर्गाच्या हक्क न्याय स्वातंत्र्य आणि उन्नती विकास यामध्ये इतरांना अडथळे समस्या आणण्याची कोणतेही कारण नाही. म्हणून आदिवासी समाज वर्ग गटाला स्वतंत्र नंतरही आजच्या अमृत मत्सवी वर्षा परत सार्वत्रिक स्थान स्वातंत्र्य आणि हक्क राजकीय सत्ता संधी लाभ नेतृत्व खऱ्या अर्थाने प्राप्त न झाल्याने आत्ता केवळ राजकीय राजकारण धोरण निर्मिती आणि ही सर्व साकारण्यात उदार तेची सामाजिक भावनेतून एकात्मतेतून निर्माण होणाऱ्या अशा राजकीय भूमिकांची गरज आणि महत्त्व वाटते आहे. म्हणून आदिवासी समाज परिवर्तनातील राजकीय भूमिकांचे महत्त्व ही आजची गरज आहे.

निष्कर्ष-

आदिवासी समाज वर्ग घटकातील निर्भीड स्वच्छ उधारात्मक दृष्टिकोन आणि प्रभावी राजकारणातून धोरण निर्णय द्वारे राजकीय भूमिका बजावून सामाजिक जनजागृती राजकी संधी, लाभ, नेतृत्व, प्रभाव, पदे, स्थान, सार्वजनिक मानसन्मान, उन्नती, विकास, बदल,प्रगती होईल.तसेच कायद्याची त्वरित व काटेकोर अमल बजावणीची गरज आहे.

संदर्भ ग्रंथ-

१. सुहास पळशीकर: जातीय राजकारण निराली प्रकाशन.

२. गारे गोविंद: आदिवासी विकास योजना आदिवासी विकास पुणे विद्या प्रकाशन.

३. खडसे भा.की: भारतीय समाज आणि सामाजिक समस्या हिमालय पब्लिकेशन नागपुर.

४. सुहास पळशीकर सीमा लोकन समाज प्रबोधन पत्रिका २०११.

५. गारे गोविंद: बदलत्या उंबरठ्यावरील कोकणा आदिवासी विद्या प्रकाशन पुणे.२००७.

६. शैलेंद्र खरात व विवेक घोटाळे: महाराष्ट्र राजकीय पक्षातील स्पर्धेचे राजकारण व आघाड्यांची राजकारण पुणे विद्यापीठ.

७. ग.भा गिरीधर: अनुसूचित जाती और जनजाती संबंधी संविधानिक उपबंध हिमालया पब्लिकेशन मुंबई.

८. शासकीय प्रकाशने: महाराष्ट्रातील आदिवासी व त्यांचे सामाजिक सांस्कृतिक जीवनाची प्रश्न व कल्याणाच्या योजना आदिवासी संशोधन व प्रशिक्षण संस्था पुणे.

९. रघ वराडकर: महाराष्ट्रातील शासन आणि राजकारण निराली प्रकाशन.

१०. गारे गोविंद: सह्याद्रीतील आदिवासी महादेव कोळी.

११. सुहास पळशीकर: महाराष्ट्राचे शासन आणि राजकारण.

१२. अशोक जैन: महाराष्ट्राचे शासन आणि राजकारण निराली प्रकाशन.

१३. दै.महाराष्ट्र टाइम्स दै लोकसत्ता दै सकाळ दै लोकमत दै पुण्यनगरी दै देशदूत दै गावकरी.

१४. मुंबई ग्रामपंचायत अधिनियम१९५८ महाराष्ट्र शासन लोकराज्य मासिक महाराष्ट्र जिल्हा परिषद व पंचायत समिती अधिनियम १९६१.

१५. आदिवासी विभाग: वार्षिक आदिवासी उपाय योजना.

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.4 No.4 Jan – Feb 2023

नविन राष्ट्रिय शैक्षणिक 2020 धोरणांची वैशिष्टये

प्रा.डॉ. कार्तिक पोळ
अर्थशास्त्र विभाग,यशवंतराव चव्हाण माहविदयालय, तुळजापूर जि. उस्मानाबाद
Corresponding Author- **प्रा.डॉ. कार्तिक पोळ**
DOI- 10.5281/zenodo.7648141

प्रस्तावणा –

15 ऑगस्ट 1947 ला भारत देश स्वतंत्र झाल्यानंतर आपली साक्षरतेची गरज सर्वांनाच प्रकर्षाने जाणवली. राज्यघटनेने 6 ते 14 वयोगटातील मुलांना मोफत व सक्तीचे शिक्षण देण्याची तरतुद राज्यघटनेत केली. स्वातंत्रयानंतर भारत सरकारने विविध शैक्षणिक आयोग भारतीय शिक्षणाच्या सुधारणेसाठी नेमले. त्यामध्ये 1948 चा राधाकृष्ण आयोग देशातील उचच शिक्षणात सुधारणा घडवून आणण्यासाठी नेमला. त्यानंतर 1964 ला डॉ. डी.एस. कोठारी यांच्या अध्यक्षतेखाली देशातील प्राथमिक,माध्यमिक,उचच माध्यमिक व उच्च शिक्षणातील दर्जा सुधारण्यासाठी कोठारी आयोग नेमला. या आयोगाने भारतातील शिक्षणाचा विकास करण्यासाठी शिक्षणाचा एक साधारण पॅटर्न विकसित करण्यासाठी आणि मार्गदर्शक तत्वे आणि धोरणांना सल्ला देण्यासाठी स्थापना करण्यात आला होता. कोठारी आयोगाच्या शिफारशी मध्ये देशातील मुला-मुलींनासमान अभ्यास क्रमातुन विज्ञान िाणि गणित शिकवावे. प्राथमिक शिक्षण मातृभाषेत आणि माध्यमिक स्तरावरील शिक्षण स्थानिक भाषेत दिले जावे, 10+2+3 पॅटर्न देशभरात लागू करावे, प्राथमिक शिक्षणाचा अभ्यासक्रम संपूर्ण देशासाठी एक समान असावा.व्यावसायिक वर्गाचा अभ्यासक्रम विशिष्ठ ठिकाणच्या गरजांवर आधारीत असावा. शासकीय व निमसरकारी अनुदानीत शाळांमधील शिक्षकांचे वेतन समान असावे, केंद्र सरकारने सर्व शिक्षकांसाठी योग्य वेतन निश्चित करावे. सर्व नियमित शिक्षकांना भविष्य निर्वाह निधी व पेन्शन , विमा इ. सुविधा देण्यात याव्यात. इ. महत्वाच्या शिफारशी केल्या.

राष्ट्रिय शैक्षणिक धोरण – 1986 –

राजीव गांधी सरकारने हे धोरण जाहिर केले. या धोरणांतील महत्वाच्या सुचना पुढील प्रमाणे.

1) सर्वांना शिखणाची समान संधी उपलब्ध करून देणे.
2) समता प्रस्थापित करण्यासाठी शिक्षणदेणे.
3) प्राथमिक,माध्यमिक व उच्च शिक्षणाची पुनर्रचना करणे.
4) शिक्षकांचया प्रशिक्षणात आधुनिकता आणणे.
5) राष्ट्रिय उत्पन्नाच्या 10% इतकीगुंतवणूक शिक्षणात करणे.

1986 च्या शैक्षणिक धोरणातील अनेक मुददे मागील पुर्ण न होवू शकल्याने त्यांचे पुनरावलोकन करून ज्या बाबी अपुर्ण आहेत त्यात सुधारणा करण्यासाठी नविन राष्ट्रिय शैक्षणिक धोरण 2020 ला मंजुरी केंद्रीय म्रत्रीमंडळाने 29 जुलै 2020 रोजीच्या बैठकित मंजुरी दिली आहे. इस्त्रोचे माजी प्रमुख के. कस्तुरीरंगन यांच्या अध्यक्षतेखालील समितीने या धोरणांचा मसुदा तयार केला आहे.

2) नविन राष्ट्रिय शैक्षणिक धोरण 2020 ची वैशिष्टये –

अ) शालेय शिक्षण –

1) 10+2 ची सदय शिक्षण प्रणाली नविन व सुधारित 5+3+3+4 रचनेव्दारे अनुक्रमे 3-8,8-11,11-14 आणि 14-18 वयोगटातील परस्पर बदलली जाईल.

2) मातृभाषा/प्रादेशिक भाषा 5 वी पर्यंत शिक्षण देण्यासाठी वापरली जाईल आणि कोणत्याही विदयार्थ्यावर कोणतीही भाषा कठोरपणे लादली जाणार नाही.

3) इयत्ता 6 वी पासून इंटर्नशिपसह व्यावसायिक शिक्षणाची तरतुद.

4) 10 वी बोर्ड नसेल फक्त 12 वी च्या वर्गाला बोर्ड असेल.सन 2030 पर्यंत विविध उपाययोजनांच्या माध्यमातून शालेय शिक्षणामण्ये 100 ग्रॉस एनरॉलमेंट रेशो (म्हणजेच एकुण विदयार्थ्या ांपैकी पुढील शिक्षणासाठी प्रवेश घेणाऱ्या विदयार्थ्यांचे गुणोत्तर) आत्मसात करणे, हे या धोरणाचे उदिष्ट आहे.

6) जन्म व कौटुंबीक पार्श्वभूमि यांच्याशी निगडित परिस्थितीमुळे कोणतेही मुल शिकण्याच्या व प्रगतिच्या एकाही संधीला मुकणार नाही. याची हमी देण्यासाठी या धोरणामध्ये अनेक नियोजित उपाय योजना अंतर्भूत आहेत.

7) शिक्षकांची नेमणूक अतिशय सक्षम व पारदर्शक प्रक्रीयेव्दारे करण्यात येईल. शिक्षकांना गुणवत्तेच्या निकषानुसार बढती देण्यात येईल.

8) इयतता 1 ली ते 5 वी मध्ये प्रारंभिक भाषा व गणित यांच्याकडे विशेष ध्यान पुरविले जाईल.

ब) उच्च शिक्षण –

1) महाविदयालयीन पदवी 3 व 4 वर्षाची असेल. जे संशोधणासाठी उच्च शिक्षण घेवू ईश्चितात त्या विदयार्थ्यांसाठी चार वर्षाची पदवी अभ्यासक्रम तर जे विदयार्थी पदवीनंतर नोकरी करू ईश्चितात त्यांच्यासाठी तीन वर्षाचा पदवी अभ्यासक्रम असेल.

2) विदयार्थ्यांना एम.फिल करावे लागणार नाही म्हणजेच संशोधन करण्यासाठी पदवी अधिक एक वर्षाचा मास्टर्स अभ्यासक्रम अशी चार वर्षाची पदवी असेल. यानंतर ते थेट पी.एच.डी. करू शकतात.

3) उच्च शिक्षणामध्ये 2035 पर्यंत सकल पट नोंदणी Gross Enrolment Tatio 2035 पर्यंत 50% पोहचवण्याच उदिदष्ट. दुसरीकडे नविन शिक्षण धोरणांतर्गत जर एखादया विदयार्थ्याला कोर्सच्या मध्यभागी दुसरा कोर्स करावयाचा असेल तर तो मर्यादित काळासाठी पहिल्या कोर्स मधून ब्रेक घेवून दुसरा कोर्स करू शकतो.

4) सर्व सरकारी, खाजगी, मान्यताप्राप्त संस्थांसाठी समान नियम असतिल.

5) मल्टिडिसिप्लिनरी अभ्यासक्रम – एकाच वेळ वेगवेगळे विषय एकत्रितपणे शिकता येणार आहेत. यात मेजर आणि मायणर अये विषयांचे विभाजन असेल. आर्थिक किंवा अन्य कारणांमुळे होणारे ड्रॉपआउट यामुळे कमी होतील शिवाय ज्यांना एखादा विषय आवडीचा असेल तर तो विषय त्यांना शिकता येईल.

6) नवीन संरचना (आर्किटेक्चर) – उच्च शिक्षणासाठी नवीन दुरदृष्टी व संरचा परीकल्पीत करण्यात आली आहे. सध्या अस्तितवात असलेली 800 विदयापीठे, 40,000 महाविदयालये, सुमारे 15000 उत्कृष्ट संस्थामध्ये संकलीत करण्यात येईल.

7) व्यावसायिक शिक्षण –

व्यावसायिक शिक्षण सर्व प्रकारच्या शिक्षणाचा अविभात्य घअक असेल.सन 2025 वर्यंत शिकाउ विदयर्थ्यांपैकी 50 विदयार्थ्यांना व्यावसायिक शिक्षणाचा लाभ मिळावा हे या धोरणांचे उदिदष्ट आहे.

8) शिक्षणांसाठी वित्तपुरवठा –

सार्वजनिक शिक्षणाचा विस्तार व पुनरूजिवन करण्यासाठी मोठयाप्रमाणावर सार्वजनिक क्षेत्रातून गुंतवणूक करण्यात येईल.

9) राष्ट्रीय शिक्षण आयोग –

पंतप्रधानांच्या अध्यक्षतेखाली राष्ट्रीय शिक्ष्ण आयोग किंवा नॅशनल एज्युकेशन कमिशनची स्थापना करण्यात येईल. हा आयोग भारतातील शैक्षणिक दुरदृष्टीचा परिरक्षक (कस्टेडियन) असेल.

10) व्यावसायिक शिक्षण एकंदर उच्च शिक्षण प्रणालीचा अविभाज्य भाग असेल. येथून पुढे स्वतंत्र/ एक एकटी तांत्रीक विदयापीठे, आरोग्य शास्त्र/वैदयकिय विदसपीठे विधी व कृषी विदयापीठे किंवा या आणि इतर क्षेत्रातील संस्थांची उभारणी बंद करण्यात येईल. या धारणानुसार व्यावसायिक किंवा सामान्य शिक्षण प्रदान करणाऱ्या सर्व संस्था सन 2030 पर्यंत दोन्ही प्रकारचे शिक्षण सहजगत्या प्रदान करण्याइतपत प्रगत व प्रगल्भ होणे आवश्यक आहे.

निष्कर्श –

नव्या शैक्षणिक धोराणानुसार शालेय अभ्यासक्रमात कृत्रिम बुध्दिमत्ता आणि आर्थिक बाबींचा समावेश करण्यात आला आहे. नव्या आर्थिक धोरणांमध्ये मातृभाषा किंवा प्रादेशिक भाषेला अधिक प्राधान्य देण्यात आले आहे. भारताच्या शैक्षणिक क्षेत्रातील विविधता आणि आकार लक्षातघेता या धोरणांची अंमलबजावणी हे एक अवघड काम असणार आहे.

उदा – आपण शालेय शिक्षएा व्यवस्थेचा विचार करू. 15 लाखांहून अधिक शाळा, 25 कोटी विदयार्थी आणि 89 लाख शिक्षकांसह भारतातील शिक्षण व्यवस्था ही जगातील दुसऱ्या क्रमांकावरील शिक्षण व्यवस्था आहे. उच्च शिक्षण व्यवस्थेचा आकारही मोठा आहे. AISHE च्या 2019 च्या अहवालानुसार भारतात 1000 विदयापिठे, 39931 महाविदयालये आणि 10725 स्वायत्ता संस्थामध्ये मिळून 3.74 कोटी विदयार्थी शिक्षण घेत आहेत. यामुळे या धोरणांची अंमलबजावणी करण्यात अडचणी येणार आहेत.

आणखी एक महत्वाची गोष्ट म्हणजे हे धोरण मुख्यत्वे केंद्र आणि राज्यांमधील सहकार्यावर अवलंबून असणार आहे. गेल्या कांही वर्षामध्ये केंद्र व राज्ये यांच्यातील संघर्ष पाहता केंद्राला काळजीपुर्वक पाउलेउचलावी लागणार आहेत.

संदर्भ –

1) राष्ट्रीय शिक्षण धोरण 2019 मसुदा.
2) राष्ट्रीय शिक्षण आयोग.
3) कोठारी आयोग.
4) Education.gov.in
5) https//hi-m.Wikipedia.org
6) orf online org.

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.4 No.4 Jan – Feb 2023

राजनीतिक समाजशास्त्र की चुनौतियाँ एवं प्रासंगिकता

डॉ. उर्मिला रावत
प्रवक्ता, समाजशास्त्र डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून
***Corresponding Author*- डॉ. उर्मिला रावत**
DOI- 10.5281/zenodo.7648149

सारांश -

ऑगस्ट काम्ट समाजशास्त्र की अवधारणा के जनक हैं और वॉन स्टीन समाज की एक स्वतंत्र विषय के रूप में व्याख्या करने वाले प्रथम व्याख्याकार हैं। समाजशास्त्र में समाज, सामाजिक सम्बन्धों की व्यवस्था अथवा सम्पूर्ण सामाजिक जीवन का अध्ययन किया जाता है। और राजनीतिक समाजशास्त्र भारतीय परिपेक्ष्य में प्रयुक्त लंबे व गहन अध्ययन व शोध का परिणाम है। राजनीतिक समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान और समाजशास्त्र दोनों विषयों को मिलाने वाले सैद्धांतिक एवं पद्धतिमूलक सेतू के रूप में आधुनिक युग में विकसित हो रहा है। समाजशास्त्र और राजनीतिक शास्त्र में गहरा सम्बन्ध है फिर भी राजनैतिक समाजशास्त्र के सामने काफी चुनौतियां आ जाती हैं, क्योंकि विकासशील देशों में प्रतिदिन बढ़ती नगरीकरण जनित समस्याऐं जैसे भ्रष्टाचार, कुपोषण, आवास, अशिक्षा, असमानता और अनेक समस्याऐं हैं जिनका राजनैतिक समाजशास्त्र में सामाजिक शास्त्रों के कई महत्वपूर्ण विषयों के बीच दूरी को हटा कर उनके बीच अध्ययन हेतु एकता पर बल दिया जाता है। राजनैतिक समाजशास्त्र शब्द राजनीति विज्ञान की तुलना में अधिक पसन्द किया जाता है।

सूचक शब्द - सामाजिक, सहभागी, राजनीतिक, अंत:सम्बन्ध, समस्याऐं, सत्ता, समाजशास्त्र

प्रस्तावना

अगस्ट कॉम्ट समाजशास्त्र के जनक हैं और वान स्टीन स्वतन्त्र विषय की व्याख्या करने वाले प्रथम व्याख्याकार हैं। समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों की व्याख्या का अध्ययन करता है। राजनैतिक समाजशास्त्र सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, संस्थाओं में राजनैतिक शक्तियों के बीच निरंतर जारी अंतक्रियाओं, प्रक्रियाओं, अन्त: सम्बन्धों और गतिविधियों का अध्ययन एवं विश्लेषण करता है। राजनैतिक समाजशास्त्र, राजनैतिक व समाजशास्त्र दोनों विषयों का मिश्रण है। इसके अन्तर्गत राजनीति तथा समाज का अध्ययन व मूल्यांकन किया जाता है। इसके अन्तर्गत व्यक्ति को राजनैतिक व सामाजिक प्राणी के रूप में स्वीकार किया गया है। इसके अन्तर्गत राजनीतिक, आर्थिक, संरचनाओं का, राजनीतिक विकास, राजनीतिक संस्कृति, राजनीतिक समाजीकरण, चुनाव, व्यवहार एवं प्रक्रिया राज्य सम्बन्ध और मुद्दों के अध्ययन पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

उद्देश्य

१. समाजशास्त्र व राजनीतिक शास्त्र दोनों स्वतंत्र विज्ञान हैं, फिर भी दोनों शास्त्र मिलकर समाज के किन-किन पहलुओं का अध्ययन करते हैं यह जानने की कोशिश करना।
२. समाजशास्त्र का राजनीतिक समाजशास्त्र बनने पर समाज के राजनीतिक पहलुओं का किस प्रकार अध्ययन किया जाता है। यह ज्ञात करना।
३. दोनों शास्त्रों में अन्त:सम्बन्ध कितना है और क्या-क्या चुनौतियाँ राजनीतिक समाजशास्त्र के अध्ययन करने पर आती हैं। यह जानकारी हासिल करना।

लिपसैट, बेडिक्स, रिचर्ड जी. बोगार्ट ने विश्लेषित किया है कि राजनैतिक समाजशास्त्र विषयों के बीच गतिशील रूप से सम्बद्ध है जैसे- राजनीति का सामाजिक स्रोत, राजनीति का सामाजिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण पर प्रभाव, सामाजिक वर्ग, जाति, धार्मिक संस्थानों के साथ-साथ सरकारी व राजनीतिक संस्थाओं को भी इसमें सम्मिलित करते हैं। कुछ ऐसे विद्वान भी हैं, जिन्होंने बड़े समूहों, जैसे श्रमिक संघों, चर्च, व्यापारिक संगठन, स्वयंसेवी राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय

व स्थानीय संगठनों को राजनैतिक समाजशास्त्र से बाहर रखा है। उनके अनुसार वे सही अर्थ में राजनीतिक कार्य नहीं करते हैं। गीयर ऑरिलियंस की मान्यता है कि राजनैतिक समाजशास्त्र मुख्य रूप से उस विशिष्ट सामाजिक संगठन, जो राज्य कहलाता है की व्याख्या, विश्लेषण एवं सामाजिक विवेचना से सम्बन्धित है। कुछ विद्वानों का कहना है कि राजनीति प्रायः सभी सामाजिक सम्बन्धों में विद्यमान रहती है, व्यक्तियों तथा समूहों द्वारा अपनी प्राथमिकताओं को अपने पैतृक संगठन जैसे परिवार, क्लब तथा महाविद्यालय आदि पर थोपने का प्रयास करते हैं मेरियम तथा लासवले ने बल और शक्ति को विशेषतः वर्गों व समूहों के बीच संघर्ष और विवाद के क्रम में राजनैतिक सम्बन्धों में अंतर्निहित माना है। वैसे देखा जाय तो समाजशास्त्र तथा राजनीति शास्त्र में घनिष्ठ सम्बन्ध हैं क्योंकि दोनों ही शास्त्र समाज के बहुत करीब हैं। परन्तु समाजशास्त्र के साथ राजनैतिक प्रवृत्तियाँ जुड़ने की वजह से समाज शास्त्र राजनैतिक समाजशास्त्र बन जाता है तथा राजनैतिक समाजशास्त्र की विशिष्ट प्रकृति और विषय सामग्री से उसकी समस्याऐं निर्धारित होती हैं। जैसे- (१) सामाजिक और राजनैतिक विज्ञान परिवत्यों के मिलन से सम्बन्धित है क्योंकि राजनीति समस्त समाज में आच्छादित होती है। तो अत्यधिक अराजनैतिक और सामाजिक बन जाती है और अराजनैतिक राजनीति के विचार के साथ राजनीतिक समाजशास्त्र राज्य और समाज के मुख्य दीवार को तोड़ देती है। (२) राजनैतिक समाजशास्त्र राज्य से आरम्भ नहीं करता हैं शक्ति को भी नहीं लेता बल्कि समाज के अनेक प्राथमिक व द्वितीयक समूहों को लेता है। क्योंकि राजनैतिक समाजशास्त्र शक्ति को राज्य का एकाधिकार नहीं मानता इसके लिए शक्ति, सापेक्ष, सामाजिक मापनीय है। इसमें शक्ति वाहक (च्वूमत भ्वसकमत) तथा शक्ति चालित (च्वूमत ंककतमेमे) दोनो ंही महत्वपूर्ण हैं। क्योंकि यह शक्ति को सीमित करने पर जोर देता है और शक्ति की अधिकता को मापा जा सकता है। (३) सत्ता में रूपान्तरित हुए बिना शक्ति नहीं रह सकती, सत्ता वैध शक्ति है समाजशास्त्र तीन प्रकार की सत्ता बताता है (१) परम्परागत (ज्तंकपजपवदंस) (२) करिश्मावादी (बीतंबजमतपेजपबे) (३) बौद्धिक कानूनी (त्ंजपवदंस स्महंस), राजनैतिक समाजशास्त्र अन्तिम सत्ता का ही समर्थन करता है। पहले दो की आलोचना करता है क्योंकि ये दोनों सत्ता समाज को कमजोर बनाती है। आधुनिक समाजों के बौद्धिक कानूनी सत्ता को प्राथमिकता दी जाती है। राजनैतिक समाजशास्त्र असीम एवं अनियंत्रित सत्ता के विरुद्ध है। सत्ता को जनतंत्रीय समाजों में शक्ति वाहक तथा शक्ति चालक के मध्य जनतंत्रीय सम्बन्धों के अनुरूप सीमित किया जाना चाहिये प्रत्येक समाज में विशिष्ट वर्ग (म्सपजम) अविशिष्ट वर्ग पर शासन करता है। समाज में अनेक विशिष्ट वर्ग होते हैं जन सहमति के आधार पर शक्ति के वितरण को वैधता मिलती है। (४) नौकरशाही के बिना सत्ता का प्रभावशाली रूप से कार्य करना, सम्भव नहीं होता, राजनैतिक समाजशास्त्र नौकरशाही से राजनैतिक अर्थों में बल्कि व्यापक सामाजिक परिप्रेक्ष्य से सम्बन्धित है। समाज की संरचना विभेदीकृत होती है, और नौकरशाही से ही कौशल व सहयोगी भावना सम्भव हो पाती है। राजनैतिक समाजशास्त्र नौकरशाही में सुधार के लिए सुझाव पेश करता है। संगठित समाज के लिए नौकरशाही एक महत्वपूर्ण यंत्र है। (५) राजनैतिक संस्कृति भी मूल्यों से बनती है। तथा वह राजनैतिक शक्ति को वैधता प्रदान करती है, विभिन्न समाजों में राजनैतिक व्यवस्थाओं में अन्तर राजनैतिक संस्कृति के कारण होता है। राजनैतिक संरचना और राजनैतिक संस्कृति में समन्वय ही राजनैतिक सहमति का आधार है। (६) राजनैतिक समाजीकरण में राजनीतिक संस्कृति का हस्तांतरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को होता है। यह सामाजिक अंतक्रियाओं के द्वारा अचेतन रूप से प्राप्त किया जाता है। यह एक स्वभाविक प्रक्रिया है, आजीवन चलती रहती है, राजनैतिक समाजीकरण के कारण ही समाज में स्थायित्व रहता है। (७) राजनैतिक सहभागीकरण राजनैतिक शक्ति को वैधता प्रदान करता है। तथा राजनैतिक सहभागीकरण से तात्पर्य राजनैतिक जीवन में शासक और शासित का सहभागी सम्बन्ध है। यह एक ही समाज में प्रत्येक स्तरों पर भिन्न-भिन्न होता है। यह राजनैतिक संस्कृति और व्यवस्था को स्थायित्व प्रदान करता है। (८) राजनैतिक दल- सामाजिक तथा राजनैतिक प्रक्रियाऐं समाज में संघर्ष उत्पन्न करती हैं ये संघर्ष राजनैतिक दल ही सुलझाते हैं। एक राजनैतिक दल एक जैसा रूचि वाला समूह होता है, विपक्षी दल सत्ता धारी सरकार को मनमानी करने से रोकता है। (९) दबाव समूह

समाज में संघर्ष दूर करते हैं। दलगत सहमति को संगठित करता है, नीति निर्धारकों को निर्णायकों की मांगो की याद दिलाता है। और आवश्यक समायोजन करता है। राजनैतिक प्रक्रिया को व्यवस्था प्रदान करता है। यह सामाजिक परिवर्तन और राजनैतिक परिवर्तन में संतुलन उत्पन्न करता है। (१०) सामाजिक और राजनैतिक परिवर्तन की व्याख्या, राजनैतिक समाजशास्त्र की महत्वपूर्ण समस्याऐं तथा आन्दोलन, क्रान्ति, संघर्ष, हिंसात्मक कार्यवाही आदि की सामाजिक व राजनैतिक प्रकृति की व्याख्या ही नहीं करता है। बल्कि राजनैतिक समाजशास्त्री इन्हें केवल राजनैतिक प्रकृति नहीं समझता बल्कि उसे सामाजिक व्याख्या प्रदान करता है। राजनैतिक समाजशस्त्री का लक्ष्य समाज में आर्थिक विकास को तीव्र करना है तथा राजनैतिक संस्थाओं को आधुनिक बनाने का प्रयास करना है। सामाजिक परिवर्तन और राजनैतिक परिवर्तन में संतुलन हो जाने से ही राजनैतिक प्रक्रिया व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ती है। राजनैतिक समाजशास्त्र इतिहास के नियमों का अर्थ भी स्पष्ट करता है। (११) उदार जनतंत्र का राजनैतिक समाजशास्त्री उपयोगिता के कारण समर्थन करता है। संघर्ष राजनैतिक प्रक्रिया के लिए हानिकारक नहीं है। यह जनतंत्रीय राजनैतिक प्रक्रियाओं को स्वस्थ रखता है। उदार जनतंत्र राजनैतिक सत्ता को सीमाओं में रखता है। इन राजनैतिक दलों व दबाव समूहों के माध्यम से लोग अपनी रायों को अभिव्यक्त करते हैं और सरकार इस जनमत का प्रयोग करके उपयुक्त कानून बना सकती है। राजनैतिक समाजशास्त्री जनतंत्रीय राज्य को सबकुछ मानती है। जनतंत्र में नौकरशाही अधिक उत्तरदायी होती है तथा राजनीतिक दल और दबाव समूह अधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। राजनीतिक समाजशास्त्र पूंजीवाद का पक्षधर है तथा क्रान्ति के विरुद्ध है यह यथावत स्थिति का समर्थक है। राजनैतिक समाजशास्त्र अभी शैशवास्था में है उसकी वास्तविक प्रकृति अभी विकसित होनी है। इस कारण बहुत सी समस्याऐं राजनैतिक समाजशास्त्र के आगे आती हैं क्योंकि धीरे-धीरे यह अधिक परिपक्व हो जायेगा तो समस्याऐं धीरे-धीरे खत्म हो जायेगी।

लिपसैट तथा बॉडिक्स ने माना है कि राजनैतिक समाजशास्त्र समाज से प्रारम्भ होता है, और परीक्षण करता है, कि राज्य को किस प्रकार प्रमाणित करना है जबकि राजनीतिक विज्ञान राज्य से प्रारम्भ होता है और परीक्षण करता है कि राज्य किस प्रकार समाज को प्रभावित करता है। ये दोनों बातों से दोनों विषय अलग-अलग प्रतीत होते हैं परन्तु राजनैतिक समाजशास्त्र को मिलाने का कारण ही यही है कि समाज में हर क्षेत्र में राजनैतिक गतिविधियाँ हो ही जाती हैं।

राजनैतिक समाजशास्त्र को चुनौतियाँ का सामना भी करना पड़ता है। जैसे राजनैतिक समाजशास्त्र में सामाजिक शास्त्रों के कई महत्वपूर्ण विषयों के बीच दूरी को हटा कर उनके बीच अध्ययन हेतु एकता पर बल दिया जाता है। इसमें दार्शनिक तार्किक पद्धतियों के स्थान पर आनुभाविक, प्रयोगिक शोध पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है। इसलिए डुवर्जर ने कहा है कि राजनैतिक समाजशास्त्र शब्द राजनीति विज्ञान की तुलना में ज्यादा पसंदीदा है। विद्वानों का मानना है कि राजनीतिक समाजशास्त्र की कितनी समस्याऐं क्यों न हो जाय परन्तु राजनीतिक समाजशास्त्र ने राजनीति एवं समाज को अन्त:क्रिया के कई उपक्षेत्रों को समाविष्ट, कर व्यापक, एवं सार्थक रूप में एकीकृत कर अपनी प्रासंगिकता प्रमाणित कर दी है और इसके योगदान की अपार सम्भावनाऐं भविष्य के गर्भ में अभी भी छिपी हुई है। बशर्ते कि सभी विद्वान इस बात को मानें कि राजनैतिक समाजशास्त्र समाज के राजनैतिक पहलुओं का अध्ययन करने में सक्षम है।

त्मेमंतबी डमजीवकवसवहल - भ्लचवजीमेपे (अध्ययन प्रविधि व उपकल्पना)

"राजनैतिक समाजशास्त्र की चुनौतियाँ एवं प्रासंगिकता" विषय के लिए उपकल्पना बनी थी कि समाजशास्त्र समाज का विज्ञान है और राजनीतिक शास्त्र समाज के राजनैतिक व्यवस्थाओं का अध्ययन करता है। इस कारण राजनैतिक समाजशास्त्र बनने के बाद यह राजनैतिक व्यवस्थाओं को सामाजिक व्यवस्थाओं के साथ जोड़कर अध्ययन करेगा तो समाजशास्त्र व राजनीतिशास्त्र का मिला जुला अध्ययन एक साथ देखने को मिलेगा। राजनैतिक "समाजशास्त्र की चुनौतियां एवं प्रासंगिकता" इस विषय से सम्बन्धित जानकारी द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से ली गयी और कुछ विद्वानों की किताबों से इन दोनों विषयों की जानकारी लेते हुए राजनैतिक समाजशास्त्र की चुनौतियों तथा प्रासंगिकता के बारे में ज्ञान प्राप्त किया।

निष्कर्ष – उपरोक्त अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है। कि राजनीतिक समाजशास्त्र ने राजनीति एवं समाज की अन्त:क्रिया के कई उपक्षेत्रों को समविष्ट, व्यापक एवं सार्थक रूप में एकीकृत कर अपनी प्रासंगिकता प्रमाणित कर दी है और इसके योगदान की अपार सम्भावनाएँ भविष्य के गर्भ में अभी भी हुयी है। राजनैतिक शास्त्र तथा समाजशास्त्र दोनों ही मिलकर समाज के हर क्षेत्र के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करके एक दूसरे की घनिष्ठता को दर्शाते हैं और इसका नया रूप 'राजनैतिक समाजशास्त्र' दिनोदिन उभरता रहा है।

संदर्भ सूची

1- Lipset, S.M. 'Political Sociology', New York 1965
2- MkW- ,- ,l- ukjax] ßÒkjrh; "kklu vkSj jktuhfrÞ xhrkatfy ifCyf"kax gkml] ubZ fnYyhA
3- Lindenfeld, E. 'Political Sociology' (1968), New York.
4- Hyman, H. (1959), Political Socialization, Free Press Glance.
5- Kavanagh, D., Political Culture (1972), London.
6- राजेन्द्र कुमार शर्मा, 'राजनैतिक समाजशास्त्र' (२००७) एटलांटिक पब्लिशर्स नई दिल्ली
7- डॉ. गौतम वीर, 'राजनीतिक समाजशास्त्र' (२००९) ओमेगा पब्लिशर्स नई दिल्ली

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.4 No.3 Jan – Feb 2023

मराठी ग्रामीण साहित्यातील कृषी जीवनाचा आविष्कार

डॉ.प्रेरणा एल.चव्हाण
विठ्ठलराव पाटील महाविद्यालय कळे, ता.पन्हाळा जि.कोल्हापूर.
***Corresponding Author*- डॉ.प्रेरणा एल.चव्हाण**
Email- prerna6731@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7648156

प्रस्तावना

म.गांधीनी १९२० नंतर ग्राम उद्धाराची चळवळ सुरु केली.प्रथम खेडी जागी झाली पाहिजे,या उद्देशाने 'खेड्याकडे चला' हा संदेश लोकांना दिला.तत्कालीन परिस्थितीत ग.ल.ठोकळ र.वा. दिघे यासारख्या लेखकांनी खेड्यातील निसर्ग, तेथील माणसांचा रांगडेपणा,हेवेदावे यांचे वर्णन केल्याचे विपुल प्रमाणात दिसून येते. १९४० ते १९५० च्या दशकात मराठी साहित्यात नवसाहित्य अवतरले.दुसऱ्या महायुद्धोत्तर काळात ढासळत जाणारे मूल्य आणि नष्ट होऊ पाहणारी संस्कृती,तसेच ग्रामीण जीवनाचे वास्तव चित्रण बनगरवाडी या सारख्या कादंबऱ्यांमधून पाहायला मिळते.१९६० नंतर महाराष्ट्र राज्याची स्थापना झाली.गाव गाड्याची पुनर्बांधणी झाली.खेड्याचा चेहरा बदलला,पण मानसिकता,जातिव्यवस्था यात बदल झाला नाही.इ.स.१९७२ चा दुष्काळाचे भीषण स्वरूप,शेतीची होरपळ,शेती विकने,,शेतीला पूरक असलेले जोडधंदे.यांचे चित्रण ग्रामीण साहित्यातून पहावयास मिळते. १९८० नंतर कृषी क्षेत्रात औद्योगिक क्रांती झाली. शेतात ट्रॅक्टर आला.बागायती पद्धतीने शेतकरी शेती करू लागला.बदलत्या ग्रामीण जीवनाचे वास्तव चित्रण नागनाथ कोतापल्ले,राजन गवस, भारत काळे,शेषराव मोहिते,दादाभाऊ गावडे, सदानंद देशमुख यांच्या साहित्य कृतीतून दिसून येते.१९९० नंतरचे ग्रामीण जीवन व तेथील परिसर याहीपेक्षा खूप वेगळे आणि बदललेले आहे.याचा अभ्यास मी येथे मांडण्याचा प्रयत्न केला आहे. स्वातंत्र्योत्तर काळात शिक्षणाचा प्रसार ग्रामीण भागापर्यंत जाऊन पोहोचला.यातूनच ग्रामीण भागातील सुशिक्षित तरुण ग्राम जीवनाचे व कृषी संस्कृतीशी निगडित असलेले स्वतःला आलेले अनुभव लिखाणाच्या माध्यमातून सांगू लागला. मराठीतील कथा,कादंबरी,कविता अशा विविध साहित्य प्रकाराच्या माध्यमातून प्रत्ययाला आलेला कृषी जीवनाचा आविष्कार मी या निबंधात थोडक्यात मांडण्याचा प्रयत्न केला आहे.

कृषी संस्कृतीचा लेखाजोखा लेखणीतून अविस्कृत करणे हे ग्रामीण साहित्याची प्रेरणा आहे.बलुतेदार,अलुतेदार,शेतकरी, शेतमजूर यांचे परस्पर संबंध हे आधुनिकीकरणामुळे मोडकळीस आले आहेत.यांत्रिकीकरणामुळे शेतमजुरावर उपासमारीची वेळ आली आहे.शिवाय आधुनिक पद्धतीने करण्यात येणारी शेती,रासायनिक खतांचा अतिवापर,त्यातून उद्भवणारे विविध आजार,तसेच यातून उद्भवणारा जमिनीचा नागरिकपणा,पिकास येणारा हमीभाव यातील चढ- उतार यातून शेतकऱ्याच्या वाट्याला आलेले उद्ध्वस्तलेपन या सर्वांचे चित्र मराठीतील विशेष करून ग्रामीण साहित्यातून कृषी जीवनाचा आविष्कार चित्रित झाल्याचे दिसून येते.

उद्दिष्टे:-

1) मराठी ग्रामीण साहित्यातील कृषी जीवनाचा आविष्कार अभ्यासणे.
2) शेती संस्कृतीचा होत असलेला ऱ्हास व आव्हाने यांचा आढावा घेणे.

गृहितके:-

1) आधुनिकीकरणामुळे कृषी जीवन वरदानयुक्त तसेच शापित झाले आहे.
2) आज कृषी संस्कृतीचा तथा पर्यावरणाचा ऱ्हास होत आहे.
3) रासायनिक खतांच्या अति वापरामुळे जमीन नापिक होत आहे शिवाय मानवी आरोग्य धोक्यात आले आहे.

भूमिका:-

भविष्यातील पृथ्वीचा शाश्वत विकास संधी आणि आव्हाने हा विषय मराठी विषयाच्या अनुषंगाने अभ्यासत असताना मराठीतील ग्रामीण साहित्याची व त्यातील कृषी संस्कृतीची आठवण होते.तसेच पूर्वीची शेती पद्धती आणि आजची शेती पद्धती यात जमीन आसमानाचे अंतर असल्यासारखे वाटते.पूर्वीचे असलेले पर्यावरण संतुलन आणि मानवी आरोग्य यात निश्चितच बदल झाल्याचे मराठी ग्रामीण साहित्यातील कृषी जीवनाचा अभ्यास केल्यास लक्षात येते.यातून यांत्रिकीकरण, जागतिकीकरण,आधुनिकीकरण यातून मानवास जितका जास्त फायदा झाला.त्यापेक्षा जास्त झालेल्या हानीस आपणा सर्वांना आज सामोरे जावे लागत आहे.याचे जिवंत उदाहरण मराठी ग्रामीण साहित्यातून पहावयास मिळते.रासायनिक खतांच्या अतिवापरामुळे मानवी जीवन धोक्यात आले आहे.शिवाय जमीन नापीक

होत आहे.यातूनच पर्यावरणाचा ऱ्हास होत आहे.याचा परिणाम म्हणून मानवी जीवन धोक्यात येत असल्याचे आढळून आले आहे. या ऱ्हासाचे संभाव्य धोके लक्षात घेऊन भविष्यातील पृथ्वीचा शाश्वत विकास व्हावा.या विकासाची संधी प्राप्त करून घेण्यास आपण सर्वजण सामर्थ्यशील व्हावे आणि भविष्यातील विकासाची संधी हीच आपली आव्हाने आहेत.ही आव्हाने मला फार महत्त्वाची वाटली.म्हणून मी मराठी ग्रामीण साहित्यातील कृषी जीवनाचा आविष्कार हा अभ्यास विषय या शोधनिबंधात मांडला आहे.यातून कृषी संस्कृतीचे जतन आणि संवर्धन व्हावे ही अपेक्षा आहे.तसेच हे आव्हान येत्या पुढील पिढीसमोर ठेवणे मी माझे परम कर्तव्य समजते. १९६० नंतर उदयास आलेल्या मराठी साहित्यातील विविध प्रवाहापैकी ग्रामीण साहित्यातून सर्वसाधारणपणे पर्यावरण डोकावते.मराठी ग्रामीण साहित्यातील कृषी जीवनाचा अभ्यास मांडण्याच्या अगोदर ग्रामीण साहित्य म्हणजे काय ते पाहू:-डॉ.नानासाहेब सूर्यवंशी लिखित 'ग्रामीण साहित्य मूल्य आणि अभिरुची' या पुस्तकात ग्रामीण साहित्याची व्याख्या करत असताना ते म्हणतात,"ज्या साहित्यातून खेडी तेथील निसर्ग भाषा संस्कृती याचे चित्र केले जाते त्यास ग्रामीण साहित्य असे म्हणतात."१ याचे चित्र मराठी ग्रामीण साहित्यातील ज्या लेखकांनी कवींनी केले आहे त्यांना ग्रामीण कथाकार,कादंबरीकार,कवी, कवयित्री म्हणून ओळखले जाते. ज्यांचे नाव घेतल्याशिवाय पुढे जाता येत नाही असे ह.ना.आपटे, श्री. म. माटे, धनुर्धारी, कृष्णराव भालेकर, वि. स. सुखटणकर, ग. ह. पाटील, शंकर पाटील, द. मा. मिरासदार ग.ल.ठोकळ,र.वा.दिघे,उद्धव शेळके,रा. र. बोराडे, आनंद यादव, द. ता. भोसले, गो. नि. दांडेकर, श्री. ना. पेंडसे,महादेव मोरे, नागनाथ कथापल्ले, भास्कर चंदनशिव,वासुदेव मुलाटे, सखा कलाल,गणेश आवटे,बाबाराव मुसळे, पुरुषोत्तम बोरकर, राजन गवस, सदानंद देशमुख, श्रीकांत देशमुख, शेषराव मोहिते, मोहन पाटील, विश्वास पाटील, इंद्रजीत भालेराव यासारख्या कवी-लेखकानी ग्रामीण मराठी साहित्य समृद्ध बनवले आहे.

'कालचक्र'२ या कादंबरीतून वि.शं.पारगावकर यांनी काळ एक मोठे चक्र असल्याचे सांगून शेतीत पूर्वी हिरे मोती पिकत होते. त्या शेतीची स्थिती आज दयनीय झाली आहे.काळ बदलला आणि कुळ कायदा आला.या कुळ कायद्यामुळे जमीन कसली जात नव्हती आणि पीकही भरभराटिने पिकत नव्हते.आज या कायद्यावर बंदी आली आहे.पण इथूनच पीक घेण्याच्या पद्धतीच्या ऱ्हासाला सुरुवात झाली आहे असे म्हटल्यास वावगे ठरणार नाही.पण याचे परिणाम म्हणून शेतकऱ्यास हळूहळू दुष्काळ परिस्थितीला सामोरे जावे लागले.राजन गवस यांच्या 'ब बळीचा' या कादंबरीतील नायक शिक्षण आणि नोकरी यामुळे शहराशी जोडला जातो व गावापासून आपल्या माणसांपासून तुटला जातो.धड तो शहराशी जोडला जात नाही आणि त्याच्या गावाशीही व माणसांशी सुद्धा जोडला जात नाही.हरित क्रांतीमुळे शेतीची उन्नती होईल असे वाटतानाच भांडवलशाही व्यवस्थेने शेतकऱ्यांचे सुख हिरावून घेतले.त्यामुळे यातील पात्र द्वंद्व मानसिकतेत जगत असताना आढळून येतात.या कादंबरीतील कल्लाप्पा,आडव्याप्पा तसेच कादंबरीतील

डायरी,पत्रे,नोंदी, चित्रपटांची पटकथा.अशा माध्यमांच्या आधारे ही कादंबरी व्यक्त केली गेली आहे.गावात दुष्काळी कामावर आलेले साहेब दिगंबर फडणवीस यांच्यामुळे ग्रामीण स्त्रीच्या जीवनातील उध्वस्तलेपण रंगनाथ पठारे यांनी 'हारण'३ या कादंबरीतून चित्रित केले आहे.

पर्यावरणाच्या होत असलेल्या या ऱ्हासामुळे पाऊस पडेनासा झाला आणि याचा परिणाम म्हणून नदी,नाले,ओढे आटले. म्हणून सरकारने गावात नळ योजना आणली आणि ही नळ योजना गावापर्यंत येता येतात खाऊन संपली.शिवाय या नळ योजनेचे गंडांतर पखालीच्या धंद्यावर आले.गावात नळ योजना आल्यामुळे आपला पाणक्याचा पिढ्यानपिढ्या चालत आलेला व्यवसाय बंद पडणार या भीतीने पखालीवाला मानसिकता संतुलन गमावून बसतो.त्याचे चित्र बाबाराव मुसळे यांच्या 'पखाल'४ या कादंबरीतून पहावयास मिळते.पाणक्यांची ससेहोलपट,पुनर्वसन आणि स्थित्यंतर याचे अत्यंत हृदयभेदक असे चित्रण इथे आले आहे.आधुनिकीकरणातून सरकारच्या विविध योजना आल्या दिल्लीतून निघालेल्या या सरकारी योजना गाव पातळीवर येता येता वाटेतच नाहिशा होतात.याचे चित्र पुरुषोत्तम बोरकर यांनी 'मेड इन इंडिया'५ या कादंबरीतून चित्रित केले आहे.

पाणी टंचाई चे चित्रण 'तहान' कादंबरीत सदानंद देशमुख यांनी केले आहे.दुष्काळग्रस्त विदर्भातील शेतकऱ्यांचा करूण वास्तव चित्र त्यांनी रेखाटले आहे. कमी पगाराची का असेना सरकारी नोकरी असावी,पण शेतकरी नसावा.ही करूण विचारधारा पुढे येताच,जगाचा पोशिंदा असलेला शेतकरी स्वतः मात्र भुके कंगाल असल्याचं जाणवतं. इंद्रजीत भालेराव यांनी 'पीकपाणी' या त्यांच्या कविता संग्रहातून ग्रामीण जीवनाची व तेथील कृषी संस्कृतीचे वास्तव चित्र रेखाटले आहे.पशुपक्षी हे सुद्धा निसर्गाचे मुख्य घटक आहेत.त्यांचे जतन आणि संवर्धन व्हावे या हेतूने कवि म्हणतात-

" बाप म्हणायचा काढलेली नख/दारात कधी नयेत टाकू/दाणे समजून खातात चिमण्या/आणि मरतात आतडे फाटूफाटू"६

पर्यावरण संवर्धनाचा हा मोलाचा संदेश आजही तुम्हा आम्हाला शिकवण देणारा असा आहे.गाई,म्हशी,कुत्री,मांजर हा सर्व शेतकऱ्यांचा गोतावळा होता पण १९८० नंतर यांत्रिकीकरणामुळे शेतात नवनवीन यांत्रिक अवजारे आली.शेतात ट्रॅक्टर आला आणि नारबा या गोतावळयापासून दूर फेकला गेला.याचे चित्र १९८० नंतर आनंद यादव यांच्या 'गोतावळा' या कादंबरीमधून पहावयास मिळते.१९८० नंतर आधुनिकीकरणाचं वार गावात आलं.त्याचं राजकारण झालं आणि गावातली एकात्मता नष्ट झाली.माणुसकी लयाला गेली.त्याचप्रमाणे या राजकारणातून शेती लयाला गेली.'पेरा' या कवितासंग्रहातील कवितेतून इंद्रजीत भालेराव म्हणतात-

"डोळयाने पाहतो जळणारे शेत/जळलेली माती करायला लोणी/येईल का कुणी भूमिपुत्र."७ लयाला जाणाऱ्या कृषी संपत्तीचे जतन करण्याच्या उद्देशाने प्रेरित होऊन इंद्रजीत भालेराव शेतकरी बांधवांना पेटून उठण्यासाठी सांगतात.भूमिपुत्रांना क्रांती करण्याचे,संघर्ष करण्याचे आव्हान देतात.जळलेल्या मातीला पुर्ववत करण्यासाठी भूमिपुत्रांना बारमाही शेतीच्या राशी नेटाने सांभाळण्याचे आव्हान देतात.पण शेवटी पर्यावरणाचा ऱ्हास हळूहळू होत गेला.मराठवाड्यातील शेतकरी शेतीच्या नापिकापाई कर्जबाजारी झाला.प्रसंगी आत्महत्येला सामोरे गेला.या काव्यसंग्रहातील कवितेतील इंद्रजीत भालेराव म्हणतात-

"मेघा मेघा येगा येगा/रानामध्ये झाल्या भेगा/भेगा झाल्या भळी/भळीमध्ये गेला बळी"८

शेतकऱ्यांनी जी झाड जगवली त्याच झाडाच्या फांदीला फास घेऊन शेतकऱ्यावर आत्महत्या करायची वेळ आली आहे. शेतकरी जीवनाचा आर्त टाहो इंद्रजीत भालेराव यांनी 'टाहो' या काव्यसंग्रहातून चित्रित केला आहे.जागतिकीकरणामुळे शेती व शेतकरी यांची पडझड झाली आहे.शेतकरी जिवाचा आर्त टाहो मराठी कथा,कविता,कादंबरी यातून हृदयस्पर्शीपणे चित्रित झाला आहे. आधुनिकीकरणात सुधारित शेती पद्धती आली.रासायनिक खत,सुधारित बी बियाणे यामुळे कृषी क्षेत्रात हरितक्रांती झाली आणि भांडवलदारांच्या हातचे खेळणे बनली.शिवाय अति रासायनिक खतांच्या वापरामुळे त्याचा मानवी आरोग्यावर विपरीत परिणाम झाला. मानवास वेगवेगळे आजार जडले.कॅन्सर सारख्या आजाराच्या प्रमाणात वाढ झाली.याचे चित्र बाबाराव मुसळे यांच्या 'आतंक'९ या कादंबरी मधून पहावयास मिळते.या कादंबरीमधून ग्यानबाला कॅन्सर होतो.त्यावेळी त्याची आजाराशी संघर्ष करण्याची,जगण्याची धडपड आणि त्याच्या परिवारातील तणावयुक्त वातावरण,सामान्य शेतकरी कुटुंब आणि त्याची आर्थिक विवंचना,गावातील शंकर पाटील त्यांना अधून मधून आर्थिक सहाय्यक करत असतो.यातून ग्यानबाच्या कुटुंबावर वाढत जाणारा उपकाराचा बोजा,शंकर पाटील यांचा मान्यतावादी दृष्टिकोन.हे सर्व वाचत असताना हे वर्णन दुःखाचा परमोच्च शिखर गाठत असल्याचे दिसून येते. तर उद्धव शेळके यांनी 'धग'१० या कादंबरीतून विदर्भातील ग्रामीण वास्तव रेखाटले आहे.विदर्भातील पर्यावरण उष्णकटिबंधाचे आहे आणि या उन्हाच्या झळा,चटके सहन करावे लागत असल्याचे चित्र 'धग' मधून दिसून येते.ग्रामीण भागातल्या मातीच्या गुणसूत्राशी समरस होऊन यश प्राप्त करून घेणाऱ्या शेतकऱ्यांच्या वाट्याला यश येतच नाही.प्रतिकूल परिस्थितीशी झुंज देत जगण्याची प्रखरता उद्धव शेळके यांनी या कादंबरी मधून चित्रित केली आहे.

एकंदरीत शेतीचा तथा पर्यावरणाचा होत असलेल्या ऱ्हासामुळे शेतकऱ्यांच्या जीवनात व्यथा,वेदना,शोषण,उपहास,आला आहे.पर्यावरणाच्या असंतुलनामुळे शेतकऱ्यांच्या जीवनात दुःख आणि दारिद्र्य आले आहे.शिवाय गावातील लोकांच्या मनात असुरक्षिततेची भावना निर्माण झाली आहे.

निष्कर्ष:-

१) मराठवाड्यातील दुष्काळग्रस्त शेतकऱ्यांची करून कहाणी येथे दिसून येते

२) नापिकतेला व कर्जाला कंटाळून शेतकरी आत्महत्या करत आहेत.

३) रासायनिक खतांच्या अतिवापरामुळे जमीन नापीक होत आहे.

४) शेतीचा तथा पर्यावरणाचा ऱ्हास होत आहे.

आधुनिकीकरणामुळे मानवी जीवनमान बदलले आहे.ग्रामीण भागातील शेतकऱ्यांच्या वाट्याला उद्धस्तलेपण आले आहे. पर्यावरणाचा वाढता ऱ्हास लक्षात घेता शेतीला पूरक वातावरण नाही.त्यामुळे बरीचशी खेडी कामाच्या निमित्ताने शहराकडे स्थलांतरित झाली आहेत.विभक्त कुटुंब पद्धती अस्तित्वात आली आहे.माणूस माणसाला पारखा झाला आहे.शेतकऱ्यांचे जीवन आनंदी व्हावे म्हणून तसेच पर्यावरणाचा वाढता ऱ्हास थांबावा म्हणून आपण प्रत्येकाने एक तरी झाड लावले पाहिजे.कौंटुबिंक,सामाजिक,शैक्षणिक, आर्थिक, राजकीय स्तरावर विविध कार्यक्रमाच्या माध्यमातून भेटवस्तू म्हणून रोपांचा वापर करण्यात यावा.रोप लागवडीचा उपक्रम शेअर मार्केट सारखा व्हावा.याप्रमाणे आपण सर्वजण पुढे येणे गरजेचे आहे आणि त्या दृष्टीने पावले उचलणे देखील गरजेचे आहे.

संदर्भ ग्रंथ:-

१) सूर्यवंशी नानासाहेब,'ग्रामीण साहित्य मूल्य आणि अभिरुची',पद्मगंधा प्रकाशन पुणे,प्रथम आवृत्ती १२ नोव्हेंबर २०१५,पृष्ठ २२.

२) पारगावकर विठ्ठल शंकर,'कालचक्र', प्रतिमा प्रकाशन पुणे,द्वितीयावृत्ती १९९८ पृष्ठ ३५.

३) पठारे रंगनाथ,'हारण',मॅजेस्टिक प्रकाशन मुंबई, प्रकाशन वर्षे १९९०, पृ ५०.
४) सुरवसे सोपान,'बाबाराव मुसळे व्यक्ती आणि वाङ्मय',प्रकाशक एज्युकेशन पब्लिशर्स अँड डिस्ट्रीब्यूटर औरंगाबाद,ईबूक, गूगल,दि.१९.११.२०२२, वेळ ६:०० pm.
५) अक्षरनामा मराठी ऑनलाईन फीचर्स, पुरुषोत्तम बोरकर यांच्या जीवनावर आधारित लेखातून 'मेड इन इंडिया' गुगल दिं .२० नोव्हेंबर २०२२ वेळ ७:२१ pm.
६) सूर्यवंशी नानासाहेब,'ग्रामीण साहित्य मूल्य आणि अभिरुची',पद्मगंधा प्रकाशन पुणे,प्रथम आवृत्ती १२ नोव्हेंबर २०१५,पृष्ठ १७८.
७) सूर्यवंशी नानासाहेब,'ग्रामीण साहित्य मूल्य आणि अभिरुची',पद्मगंधा प्रकाशन पुणे,प्रथम आवृत्ती १२ नोव्हेंबर २०१५,पृष्ठ १८०.
८) सूर्यवंशी नानासाहेब,'ग्रामीण साहित्य मूल्य आणि अभिरुची',पद्मगंधा प्रकाशन पुणे,प्रथम आवृत्ती १२ नोव्हेंबर २०१५,पृष्ठ १८३.
९) नागरे शिवाजी,'बाबाराव मुसळे नावाचा माणूस आणि त्यांचे साहित्य',अथर्व प्रकाशन धुळे,ईबूक,गूगल,दि.२२.११.२०२२, वेळ ५:pm.
१०)शेळके उद्धव, 'धग' प्रकाशन गुगल,२० नोव्हेंबर २०२२,वेळ ८:००pm.

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.4 No.4 Jan – Feb 2023

"कक्षा ९ व १० में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के मध्य शैक्षिक रूचि का तुलात्मक अध्ययन"

खेमेन्द्र कुमार शर्मा
शोधार्थी - शिक्षा शास्त्र
श्री जे० जे० टी० विश्वविद्यालय, विद्यानगरी झुंझनू , राजस्थान (भारत)
Corresponding Author- **खेमेन्द्र कुमार शर्मा**
Email: kksimt@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7649164

शोध साराशं

शोध अध्ययन के द्वारा उत्तराखण्ड राज्य के रूद्रपुर जनपद के उत्तराखण्ड बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा ९ व १० के छात्र व छात्राओं की रूचि का अध्ययन किया गया। अध्ययन के समय शोधकर्ता ने दो अलग-अलग विद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन किया जिसमें विद्यार्थियों की कुल संख्या १०० ली गयी जिसमें ५० छात्र व ५० छात्राओं का चयन सामान्य यादृच्छिक न्यायदर्शन विधि के माध्यम से किया गया। उन छात्र व छात्राओं की रूचि को ज्ञात करने हेतु डा० एस०पी० कुल श्रेष्ठ द्वारा निर्मित शैक्षिक रूचि प्रपत्र नामक उपकरण का प्रयोग किया गया। अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया। प्राप्त समंकों के विश्लेषण हेतु औसतमान, मानक विचलन एवं टी-परीक्षण नामक सांख्यिकी का प्रयोग किया गया और प्राप्त निष्कर्ष में यह पाया गया और प्राप्त निष्कर्ष में यह पाया गया कि कक्षा ९ व १० में अध्ययन कर रहे छात्र व छात्राओं के मध्य शैक्षिक रूचि में अन्तर पाया जाता है। दोनों में अलग विषय के प्रति रूचि प्रदर्शित होती है।

की वर्ड - माध्यमिक विद्यालय, माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, शैक्षिक रूचि

प्रस्तावना-

शिक्षा का उद्देश्य है ज्ञान में वृद्धि करना और व्यवहार मे वांछित परिवर्तन लाना जिसके द्वारा बालक को जीवन में सफलता मिलती है। शिक्षा की प्रक्रिया के अन्तर्गत सभी स्तरों पर शिक्षा उद्देश्यों का निर्माण किया जाता है। इन शिक्षण उद्देश्यों को प्रापत करना ही शैक्षिक रूचि कहलाती है। इस शैक्षिक रूचि को अनेक प्रकार के कारक प्रभावित करते हैं जिसके कारण भिन्न-भिन्न बालकों की शैक्षिक अभिरूचियाँ अलग-अलग पाई जाती है। किस कारण से शैक्षिक अभिरूचि कम होती रही है अगर इसका पता चल जाये तो अभिरूचि के निषेधात्मक कारणों को घटाया जा सकता है। अतः सही शिक्षा के द्वारा स्पष्ट रूप में विद्यार्थियों में उचित दिशा में रूचि को बढ़ावा दिया जा सकता है। मानव जीवन की सुन्दरता एवं लक्ष्य की पूर्ति में जिन साधनों की आवश्यकता होती है उनमें शिक्षा को प्रमुख माना गया है। इसलिए शिक्षा को मानव जीवन की आधारशिला माना गया है। यह समाज का निर्माण करती है उसमें परिवर्तन करती है। बालक में सभी प्रकार की बौद्धिक, शारीरिक एवं मानसिक क्षमताएं रूचियाँ वृत्तियों एवं योग्यताएं उसी प्रकार विद्यमान रहती हैं जिस प्रकार कोयले में ऊर्जा छिपी रहती है। कोयले को जब तक जलाया न जाय तब तक इंजन को ऊर्जा नहीं मिलती और इंजन गतिमान नहीं होता है।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

सामान्यतः यह देखने को मिलता है, कि एक ही विद्यालय में विद्यार्थी अलग-अलग विषयों में अध्ययन करते हैं जबकि सभी विषयों का अध्ययन एक ही शिक्षा में करते हैं लेकिन उन विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचियों में अन्तर होता है जिसका प्रभाव उसकी सम्पूर्ण सफलता या अफसलता पर पड़ता है। अगर सम्पूर्ण शिक्षा बालक की रूचि के अनुरूप हो तो बालक अधिकतर अपने लक्ष्य को कम समय में या आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। इस शोध अध्ययन से समाज को लाभ होगा यह सोचकर मैंने यह अध्ययन किया इस अध्ययन की समाज में विशेष आवश्यकता होती है।

शोध समस्या

"कक्षा ९ व १० में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के मध्य शैक्षिक रूचि का तुलात्मक अध्ययन"

शोध अध्ययन के उद्देश्य

१. शहरी क्षेत्र के छात्र व छात्राओं के मध्य शैक्षिक रूचि की तुलना करना।
२. ग्रामीण क्षेत्र के छात्र व छात्राओं के मध्य शैक्षिक रूचि की तुलना करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

१. शहरी क्षेत्र के छात्र व छात्राओं के मध्य शैक्षिक रूचि में सार्थक अन्तर नही है।
२. ग्रामीण क्षेत्र के छात्र व छात्राओं के मध्य शैक्षिक रूचि में सार्थक अन्तर नही है।

शोध का सीमांकन

१. यह अध्ययन केवल उत्तराखण्ड राज्य के अन्तर्गत रूद्रपुर जनपद तक ही सीमित है।
२. अध्ययन में केवल कक्षा ९ व १० के छात्र व छात्राओं को ही चयनित किया गया है।
३. कुल ५० छात्र व ५० छात्राओं का ही चयन किया गया है।
४. इसके अन्तर्गत केवल शैक्षिक रूचि का ही अध्ययन किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

बेगम, डा० सहाना व बेगम परवीन (२०१०),ने व्यावसायिक रूचि पर एम०एड० उपाधि हेतु लघु शोध किया। इस अध्ययन में बरेली जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि को ज्ञात किया जिसके लिए इन्होंने ५० छात्र और ५० छात्राओं का चयन न्यायदर्श प्रतिदर्श विधि से चयन किया और इसके लिए प्रो० डी०एन० श्रीवास्तव और बंसल द्वारा निर्मित व्यवसायिक रूचि प्रपत्र का उपयोग कर आंकड़े एकत्रित किये गये इन आंकड़ों का विश्लेषण के उपरान्त यह ज्ञात हुआ कि माध्यमिक विद्यालयों छात्र व छात्राओं की शैक्षिक रूचि में सार्थक अन्तर है।

मेहता एवं भोजकर (२००७), ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि का अध्ययन किया और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि सभी बालक व बालिकाओं ने बाह्य प्रयोगात्मक और सामाजिक सेवा को वरीयता दी। कला की छात्राओं की तुलना में विज्ञान की छात्राओं ने समाज सेवा में विशेषण रूचि ली। व्यवसायिक रूचि में कला एवं विज्ञान के क्षेत्रों में अन्तर पाया गया।

कुमार, राकेश (२०१०) ने माध्यमिक स्तर के हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्र/छात्राओं के वैज्ञानिक रूचि की तुलना करके अध्ययन किया और निष्कर्ष के रूप में पाया कि माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम और अंग्रेजी माध्यम से विद्यार्थियों के वैज्ञानिक रूप में कोई सार्थक अन्तर नही ंहै।

कुमारी, डा० मंजू (२०१८), ने मुरादाबाद जनपद के संवालिक माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं के विज्ञान विषय के प्रति रूचि एवं शैक्षिक सम्प्राप्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि इन छात्र व छात्राओं के मध्य किसी भी प्रकार को कोई सार्थक अन्तर नही है।

तिवारी प्रदीप कुमार व सिंह डा० सतीश कुमार (२०१६) ने "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का अध्ययन" नामक शीर्षक पर शोधकार्य किया और निष्कर्ष में पाया गया कि, माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तकनीकी, फाईन आर्ट्स, साइंस और कॉमर्स में अन्य विषयों की अपेक्षा अधिक रूचि है। छात्र व छात्राओं की रूचियों में अन्तर पाया गया। जिसमें छात्रों की रूचि तकनीकी, विज्ञान, कॉमर्स, मानविकी एवं फाईन आर्ट्स में अधिक है और छात्राओं की फाईन आर्ट्स, ग्रह विज्ञान, विज्ञान वाणिज्य में अधिक रूचि हैं लेकिन सबसे कम रूचि कृषि विषय में है।

शर्मा योगेश्वर प्रसाद व सिंह डा० सतीश कुमार (२०१६) ने "माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक रूचि का उनके व्यक्तित्व आयामों के संदर्भ में अध्ययन" नामक शीर्षक पर शोधकार्य किया और निष्कर्ष में पाया गया कि, छात्रों की शिक्षा के प्रति शैक्षिक रूचि का उनकी अर्न्तमुखी बर्हिमुखी व्यक्तित्व में सार्थक सह-सम्बन्ध पाया जाता है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध समस्या को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया।

जनसंख्या एवं न्यायदर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु रूद्रपुर जनपद के माध्यमिक विद्यालयों मे ंपढ़ रहे विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में चयन किया गया। अध्ययन में विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि को ज्ञात करने हेतु न्यादर्श के रूप में ५० छात्र और ५० छात्राओं का यादृच्छिक न्यायदर्श विधि के द्वारा चयन किया जिसमें शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों का चयन किया गया।

प्रयुक्त उपकरण

शोध अध्ययन में समंकों के संकलन हेतु डा० एस०पी० कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित "शैक्षिक रूचि प्रपत्र" नामक उपकरण का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी का प्रयोग

शोध अध्ययन में प्राप्त समंकों के विश्लेषण हेतु औसतमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी परीक्षण नामक सांख्यिकीय का प्रयोग किया गया **इनके सूत्र निम्न प्रकार है-**

१- माध्य :-

$M = \frac{\Sigma x}{N}$ $M =$ मध्यमान , $\Sigma x =$ प्राप्तंकों का कुल योग , $N =$ प्राप्तांकों की कुल संख्या

२-प्रमाणिक विचलन :-

$S.D. = \sqrt{\frac{\Sigma x^2}{N}}$ $S.D. =$ प्रमाणिक विचलन , $\Sigma x^2 =$ विचलनों का वर्ग , $N =$ प्राप्तांकों की संख्या

३-टी मूल्य :-

$t = \frac{M_1 - M_2}{SE_D}$ $M_1 =$ प्रथम परीक्षण का मध्यमान, $M_2 =$ द्वितीय परीक्षण का मध्यमान, $t =$ टी मूल्य

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या-

सारणी-१ -शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं की अभिरूचि में अन्तर की सार्थकता की जांच

क्र० सं०	Interest Area	N	Σfx	Mean	S.D.	SE₀	T Value	सार्थकता स्तर एवं मान	परिणाम
१	AG	५०	१००	१	0.70	१०	1.94	०.०५ (१.३८)	०.०५ सार्थकता स्तर पर असार्थक
२	CO	५०	४००	४	2.82	४०			
३	FA	५०	३००	३	212	३०			
४	HO	५०	२००	२	141	२०			
५	HU	५०	५००	५	3.53	५०			

६	SC	५०	४००	४	282	४०			
७	TE	५०	३००	३	2.12	३०			

व्याख्या-

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की गणना करने टी अनुपात का मान १.९५ प्राप्त हुआ जो +.०५ सार्थकता स्तर पर तालिका मान १.९८ से कम है। छात्र व छात्राओं की अभिरूचि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

सारणी-२

ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिरूचि में अन्तर की सार्थकता की जांच-

क्र० सं०	Interest Area	N	Σfx	Mean	S.D.	SEo	T Value	सार्थकता स्तर एवं मान	परिणाम
१	AG	५०	२००	२	1.41	२०	1.94	०.०५ (१.९८)	०.०५ सार्थकता स्तर पर असार्थक
२	CO	५०	३००	३	2.12	३०			
३	FA	५०	४००	४	2.82	४०			
४	HO	५०	३००	३	2.12	३०			
५	HU	५०	१००	१	0.70	१०			
६	SC	५०	५००	५	3.53	५०			
७	TE	५०	३००	३	2.12	३०			

व्याख्या-

सारणी से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन कर रहे विद्यार्थियों का माध्य विचलन की गणना के उपरान्त टी मूल्य का मान १.९४ प्राप्त हुआ जो .०५ सार्थकता स्तर पर मान १.९८ से कम है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती हैं अतः माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के मध्य रूचि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त दोनों सारणी के आधार पर स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है, कि छात्रों की कृषि विषय में छात्राओं से अधिक रूचि हैं। वाणिज्य विषय में छात्र व छात्राओं की लगभग समान रूचि हैं, कला विषय में छात्राओं की छात्रों से अधिक रूचि है, ग्रह विज्ञान में भी छात्राओं की छात्रों से रूचि है, मानव शास्त्र में छात्रों की छात्राओं से अधिक रूचि है, विज्ञान विषय में छात्रों की रूचि छात्राओं से अधिक है, तकनीकी विषय में छात्र-छात्राओं की रूचियों में अधिक अन्तर नहीं है।

सुझाव-

प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर माध्यमिक स्तर पर अध्ययन कर रहे कक्षा ९ व १० के विद्यार्थियों के संदर्भ में

कुछ सुझाव निम्नलिखित दिये जा सकते है-

१. पाठ्यक्रम योग्यता एवं रूचिनुसार तैयार करना चाहिये।
२. शिक्षकों को अपने अध्ययन कार्य में सहायक सामग्रियों का प्रयोग कर विषय को रूचिकर बनाना चाहिये।
३. विद्यार्थियों को शिक्षा के महत्व को बताना चाहिये।
४. शिक्षक को खेल विधि का भी प्रयोग करना चाहिये।
५. शिक्षक को रूचियों के अनुरूप ही पाठ्य विषय का आयोजन करना चाहिये।
६. 'करके सीखना' रूचि जाग्रत करने का उत्तम साधन माना जाता है। इसलिए विद्यार्थियों को "करके सीखना" के अवसर प्रदान किये जायें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

१. **मिश्रा, रंजना (१९९३).** उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र छात्राओं की शैक्षिक रूचियों का अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध, इलाहाबादः इलाहाबाद विश्वविद्यालय

२ .**दीक्षित, कुसुम (१९९७).** अंतमु 'खी एवं बर्हिमुखी व्यक्तित्व वाले छात्र-छात्राओं की शैक्षिक अभिरूचियॉ का तुलनात्मक अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध, कानपुरः कानपुर विश्वविद्यालय।

३ **मिश्रा, एस० (१९९८).** माध्यमिक स्तर के विभिन्न सामाजिक, आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध, कानपुरः कानपुर विश्वविद्यालय।

४ . **राय , पारस नाथ (१९९९) ,** अनुसंधान विधियाँ, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा ।

५ . **गुप्ता , प्रो० एसव्पी० (२००२) ,** अनुसंधान संदिर्शिका, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद ।

६ . **मंगल , एसव्के० (२००४) ,** शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी ,विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ।

७ . **गुप्ता, एस.पी. एण्ड गुप्ता ए. (२००७).** सांख्यिकीय विधियाँ, इलाहाबादः शारदा प्रकाशन।

८ . **दीप्ती, बाजपेयी (२००९).** विभिन्न सामाजिक, आर्थिक तथा बौद्धिक स्तर पर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक अभिरूचि तथा विद्यालयी अभिव ृत्ति, का अध्ययन, एम० फिल० एजूकेशन, कानपुर : सी०एस०ज `०एम० यूनिवर्सिटी कानपुर।

९ . **Dr.Nasreen Parveen Begum (2013)-** व्यवसायिक रूचि तथा लिंग भेद EDUCATION AT THE CROSSROADS JOURNAL, An International Journal Of Humanities, APH Pub.Vol II Jan.2013, Page281

१०. **कुमार , राकेश ;२०१४** उच्च प्राथमिक स्तर पर षहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के अषासकीय विद्यालयों के छात्र-छात्राओं की गणित विषय में रूचि तथा उपलब्धि का अध्ययन JOURNAL OF EDUCATIONAL & PSYCHOLOGICAL RESEARCH ,CLDS

Memorial Education Society Vol. IV Jan 2014, Page 72

११. **दिवाकर, श्वेता (२०१४).** माध्यमिक स्तर क` विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध, इलाहाबाद: नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय। ▪

१२ . **उपाध्याय श्रीमती रश्मि एवं शर्मा डा० आलोक (२०१५),** केन्द्रीय उच्चतर माध्यमिक शिक्षा मण्डल से सम्बद्ध विद्यालय की कक्षा ९ में अध्ययनरत छात्र तथा छात्राओं के मध्य शैक्षिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन, vkbZ0vkj0ts0,e0,l0,p0 www.trjmsh.com, ISSN (E) 2277-9809 (P) 2348-9359, Vol-6 Issue-8 ,Page 110-119

१३ . **शर्मा, योगेश्वर प्रसाद, सिंह डा० सतीश कुमार (२०१६),** माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक रूचि का उनके व्यक्तित्व (अर्न्मुखी-बहिमुर्खी) आयामों के संदर्भ में अध्ययन, गोल्डन रिसर्च थाइट्स ISSN-2231-5063, Vol-6 ,Page-5

१४. **तिवारी प्रदीप कुमार एवं सिंह डा० सतीश कुमार (२०१६),** माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिकरूचि का अध्ययन,गोल्डन रिसर्च थाइट्स ISSN-2231-5063, Vol-6, Issue-6 ,Page-1-5

१५ . **जायसवाल स्वाती (२०१८),** माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन, vkbZ0ts0,l0vkj0,l0bZ0Vh0] ISSN-2394-4099 Vol-4, Issue-7, Page-639-645

16 - www.ijrset.com.

17 - https://hi.wikipedia.org/wiki/

18 - https://articlehindi.com/meaning-and-definitions-of-interest/

Chief Editor
P. R. Talekar
Secretary,
Young Researcher Association, Kolhapur(M.S), India

Editorial & Advisory Board

Dr. S. D. Shinde	Dr. M. B. Potdar	Dr. P. K. Pandey
Dr. L. R. Rathod	Mr. V. P. Dhulap	Dr. A. G. Koppad
Dr. S. B. Abhang	Dr. S. P. Mali	Dr. G. B. Kalyanshetti
Dr. M. H. Lohgaonkar	Dr. R. D. Bodare	Dr. D. T. Bornare